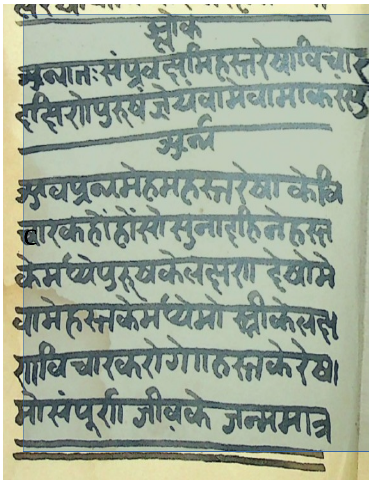
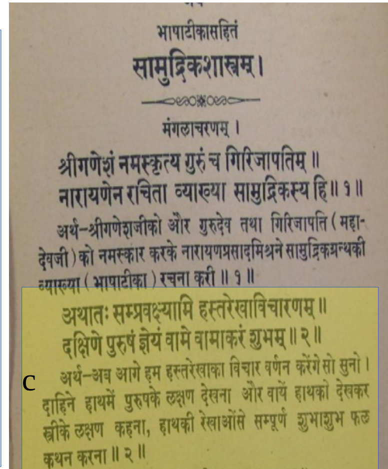
Manuscripts (Hindi dialect -Missing Pages)

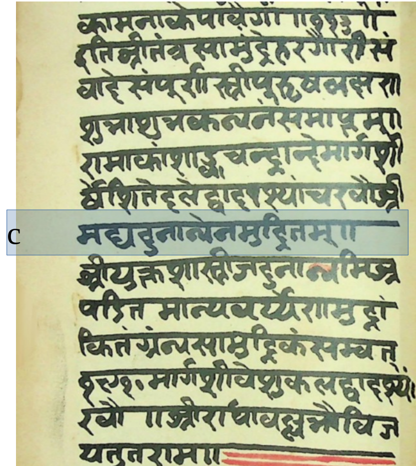
Title : Samudrika Shastra –Sagunavati -Mantra and Yantra (with illustrations)- Kokasara Bhasha (Kavi Ananda) -Dhanvantara Prakasha -Anon

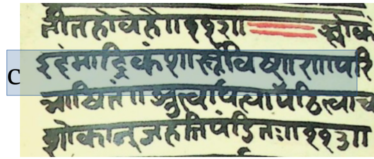
Pdf pages 1 : Content
Pdf pages 10 -123 : Samudrika Shastra edited by Sri Yadunatha





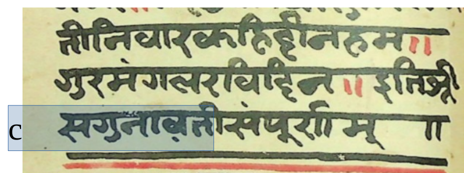
भाषाटीकासहितं
सामुद्रिकशास्त्रम्।
मंगलाचरणम्।
श्रीगणेशं नमस्कृत्य गुरुं च गिरिजापतिम्॥
नारायणेन रचिता व्याख्या सामुद्रिकस्य हि॥१॥
अर्थ-श्रीगणेशजीको और गुरुदेव तथा गिरिजापति (महादेवजी) को नमस्कार करके नारायणप्रसादमिश्रने सामुद्रिकग्रन्थकी व्याख्या (भाषाटीका) रचना करी॥१॥
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि हस्तरेखाविचारणम्॥
दक्षिणे पुरुषे ज्ञेयं वामे वामाकरं शुभम्॥२॥
अर्थ-अब आगे हम हस्तरेखाका विचार वर्णन करेंगे सो सुनो। दाहिने हाथमें पुरुषके लक्षण देखना और बायें हाथको देखकर स्त्रीके लक्षण कहना, हाथकी रेखाओंसे सम्पूर्ण शुभाशुभ फल कथन करना॥२॥



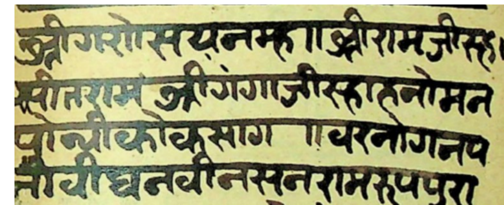


Ref:
https://archive.org/details/brihatsamudrikasastrabruhattikaofnaraynaprasadmisravenkateswarasteampressastrology_202003_234_d/page/n5/mode/2up?view=theater

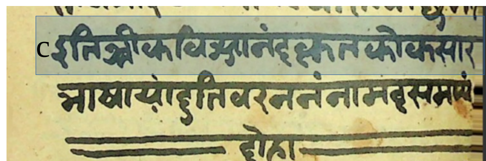
Pdf pages 125-131 : Sagunavati



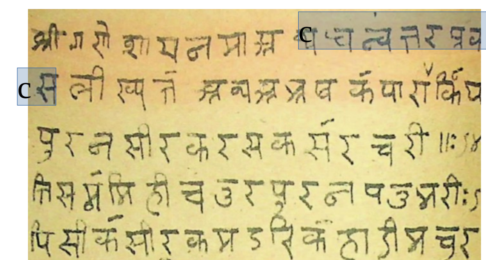
Pdf pages 132-138 and 250-306 :
Mantra and Yantra (with illustrations)



Pdf pages 145-245 :
Kokasara Bhasha by Kavi Ananda



Pdf pages 307- 361 :
Dhanvantara Prakasha



नम्बर मौजा ———

८

नाम कागज़ ———

नाम महाल ———

नाम मौजा ———

नाम परगना ———

नाम पटवार ———

सन फसली ———

...rm No. P. 13 (Oudh).

فارم نمبر پی ۱۳ (اودھ)

پرگنہ

تحصیل

ضلع

کیفیت	[illegible]	تحصیلی قیمت مقدار مندرجہ خانہ ۱۵		تعداد جو زمیندار کو ملتی چاہیئے سرکاری قول سے		
		قیمت	[illegible]	میزان	بابت اخراجات	[illegible]
۱۹	۱۸	۱۷	۱۶	۱۵	۱۴	۱۳

Form No. P. 13 (Oudh).

فارم نمبر پی ۱۳ اودھ

پرگنہ

تحصیل

ضلع

کیفیت	[illegible]	تفصیلی قیمت مقدار مندرجہ خانہ ۱۵		مقدار جو زمیندار کو ملنی چاہیئے سرکاری تول سے		
		قیمت	[illegible]	میزان	بابت اخراجات	بابت لگان
۱۹	۱۸	۱۷	۱۶	۱۵	۱۴	۱۳

C. M. C. Press Lucknow

सोंकहतेहैं कीहेप्रिये गिरिराजन
न्दनी तुमनेउपकारकावृत्ता
न्त प्रश्नकियोहो सो प्रश्न
केउत्तरसुनो प्रथम हस्तके॥
चिन्हकेप्रकारहमकहतेहैंसो
सुनोपुरुषकेदहिनेहस्तमों सु
लक्षसुलक्षकारेषावानेवाला
रेषाकोपरीक्षादेषनेसोंसंपूर्ण
जन्मकासुलक्षसुलक्षकाज्ञान
होवेहै॥ स्रीकेवामहस्तमेंसंपू
र्णरेषाकेमध्यमोसुलक्षसुलक्षसु
षदुःषआयुजनमररणकाहाल
देषनेसों मालुमहोवेहैसोसामु
द्रिकसास्त्रमों भगवानजो ...
सो कहाहैसोईप्रमाणतुम ...

होंहोसोमनचिंतईके हमसोंक
नौ॥ श्रीमहादेवउवाच॥ श्रीशिव
जी कैलासपर्व्वतपर कल्प
वृक्षतले बैठके श्रीपार्व्वतिजुसों
कहतीजीसो संपूर्ण जीवको सुष
दुषशुभाशुभ हस्तके चिन्हसो पाहि
लेरेषाकेविचारकरेहे॥ ॥

श्लोक

अथातःसंप्रवक्ष्यामिहस्तरेषाविचार
स्त्रियोपुरुषजेष्टंवामेवामाकरस्त

अर्थ

अवप्रथमहमहस्तरेषा कोवि
चारकहोंहोंसो सुनोहिनहस्त
केमध्यपुरुषकेलक्षण देषोमे
वामहस्तकेमध्यमो स्त्रीकेलक्ष
णविचारकरोगो॥हस्तकेरेषा
मोसंपूर्ण जीवके जन्ममात्र

कासुजंत्रमंत्रकाफलसिद्ध।
हैविधीपूर्व्वा सोइफलहोगा
अवस्यजानोगे हेपार्व्वतीजो
हमसत्यकहेहैंजैसेंकोईमंत
अरोराजा केपत्रसों प्रजाके
सुनकेसत्यकपत्र परवाना
सोंप्रजालोगअपनाऐरअर्थ
भोगकरेहे॥वैसेही॥परमेस्व
रकाआज्ञासो जीवनकाह
तामों ब्रह्माजीरेखामध्यसु
जंत्रसुत्र फलोंकोंलिखाहैसो
सुनो॥१॥ श्लोकं
शिवोक्तंतंत्रसामुद्रंकररेखासुभासुभं
यस्याधिज्ञानमात्रेणपुरूषोनहिसोच
ति॥२॥ अर्थ
श्रीसिव भगवानजोकहेहैं

॥तंत्रसामुद्रिक॥ शास्त्रमोहस्तके॥
॥रेषाकासुभअसुभसुष दुःष॥
॥केहवालालिषा है॥ जाहस्तरेषा॥
॥केदेषनेसोसुषदुःषकोंज्ञान॥
॥होनेसो पुरुषज्ञानवान्होके॥
॥शोककोंत्यागकरकेसुषीहो॥
॥येहै॥ २ ॥ श्लोक
॥जस्यमीनसमारेषाकर्मसिद्धिश्च
जायते॥ धनाढ्यस्तुसविज्ञेयोवहु
पुत्रोनसंसयः॥ ३॥ अर्थ॥
॥जाकेहस्तकेमध्येपहुचेके॥
॥बीचमध्येपूनमेरेषामोंमा॥
॥नमछरीकेसमानप्रगटरेषा॥
॥होनेसोंमीनकारेषावालापु॥
॥रीइह संसारसों जोजोंव्याप॥
॥रकरेगा सोसवमोप्राप्तिहोइ॥
॥धनवानहोगा वहुतपुत्रवान॥

॥ होगा सुखी होगा संसार मों बडो ॥
॥ मान्य होके जीवन पर्यन्त ना ॥
॥ ना प्रकार सुख भोग को करेगा ॥
॥ या मों नहीं संदेह जानना भुव ॥
॥ श्य मीन चिन्ह हस्त वाले सुखी ॥
॥ होत ही है निश्चय यह वनान्तके ॥
॥ जानना जोग्य है ॥ ३ ॥ श्लोकं ॥
॥ तुलाग्रामंतन्यावजूंकरमध्येच ॥
॥ दृश्यते नस्य वानिज्य सिद्धिः ॥
॥ स्यात्पुरुषस्य न संशयः ॥ ४ ॥
॥ अर्थ ॥ जा प्रानी के हस्त के मध्ये ॥
॥ रेषा के बीच मों तुला नामा तरजूई ॥
॥ तोल करे का पात्र तुला इरिउतर ॥
॥ जूई का चिन्ह यदि होवे वा किम्बा ॥
॥ हस्त मध्ये ग्राम नगर के सदृश ॥
॥ चतुरकोणाकार रेषा के मध्य बीचि ॥
॥ त्रचिन्ह प्रतीत होवे ग्राम के स ॥

मानाकिम्वा अजुकाचिन्ह
यदिपृतीनहोवेकिवाहीनोर
कहसमथ्येरहेअन्यथाको
इरथामथ्येरहनेसोयहफल
होवेगाकिवहप्रारणीनुला
चिन्हवालासमचिन्हवाला।
वज्रचिन्हवालेकाएकमुख्य
फलएहोहैकीजोजोवानिज्यक
र्म्मसंसारमोप्रसिद्धहैसोसो
सबवानिज्यकर्म्मकरेगावा
नीज्यद्वाराधनवानहोगासु
खीनोगीहोकेजीवनपर्यतंक्र।
नंदमोपरहेगा॥अ। ॥श्लो॥
पद्मचापादिपञ्चक्रसृको
शानिदृश्यते॥ स्त्रियस्तपुरु

यस्यापिधनवानससुखीनरः॥५॥

अर्थ

जाप्रराणीकेहस्तमेंयधूगरचिन्ह

पद्मकमलफूलके प्रतीतहोवेकि

म्वाचाप नाम धनुषका चिन्ह

होवेकिंवाषड्गतरवारकाचि

न्हहोयो किंवा अंकुसकोराणाकेचि

न्ह होवे स्त्रीकाकिंवापुरुषका

सो धनवानसुखी होवेगा ॥पद्म

चिन्हसेराजारानीहोवे॥चापध

नुष चिन्ह सो॥ धनुष धारीय

ओधीरहोवे॥तरवारकेचिन्हहो

नेसोवडाधीपाही वलवन्तहोवे॥

अंकुसकोराणाके चिन्ह होनेसोभू

मिकपासक जमीदार ग्रामप

तिहोवेगा सवप्रकारकेसुखीहो

वेगा॥६॥ श्लोकं

चक्रसंख ध्वजाकरोमासाका
शौचदृश्यते॥सर्वविद्याप्रवी
नेनबुद्धिमानसर्वेश्वरः॥१॥
जाकेहस्तमध्यचक्रकाचिन्हहो
वैसा पंडितशास्त्रीहोनेकालक्ष
णहै॥जाकेसंखकाचिन्हहस्तम
ध्यहोवैतो विद्यावान शास्त्र
ज्ञहोवै॥जाकेध्वजाकेचिन्हहो
वैतोवेदज्ञ वेद वेदान्तकेज्ञाता
होवै जाकेहस्तमध्यमासाकाचि
न्हदृश्यमानहोवैतो सामान्य
संसारिकव्यापार विद्यामेंनि
पुनहोगा॥ यहिरहसंपूर्णचि
न्हहस्तमोरहैतो संपूर्णषट
शास्त्रचारवेदअष्टादशपुराण॥
केवक्तापंडितपर्जामाननी

जसुखिहोगा॥६॥ — श्लोक

त्रिशूलंकरमध्येतुजेनराजापूव

र्ततः॥ यज्ञधर्मेचदानेचस्वाध्या

जपपूजने॥७॥ अर्थ

यदिकोईपुरुषकाकिम्वास्त्री

केहस्तमध्येत्रिशूलकाचिन्ह

प्रतीतहोयेतोराजाहोनेकाचि

न्हहै॥ परंतु यदित्रिशूलहोने

सेअवश्यराजाहोगा यदित्रि

शूलमेकछुसंदेहहैशुधपूर्ण

हनहींमालूमहोयतोराजाकेतु॥

ल्यहोकेराजभोगकोकरेगा॥

राजाहोके किम्वा राजाकेप॥

वर्त्तीहोकेनानाप्रकारके

जज्ञकरेगा॥ धर्मात्माहोगा

दानकेकरेगा दाता उपकारी

होगा गौब्राह्मण देवता माता पि
ता गुरुजनों के सेवा पूजा स
न्मान करेगा धर्मसील सुखी
धनी गुनी काम ध्ये मानवी
य होगा त्रिसूल हस्त वा लेष्क।
प्रताप लोक मो विख्यात
सुजस होवे हो॥ ७॥ ═ श्लोकं
शक्ति तोमर बाणोकं करमध्ये
सुदृश्यते। रत्न चक्र ध्वजाक।
तैस्य च राज्य लक्षेश्वरः॥ ८॥
अर्थ
जदि स्त्री का पुरुष का हस्त मध्ये
कोई स्थान मो शक्ति बरछी
का चिन्ह होवे अन्य वा तोम
र खड़ु के सदृस कछु का बिल
सरा सूरती मो हस्त प्रवेसक।

जोस्यतोमरनामक ख़ड्गाकार
प्रतीनहोवे॥ किम्वाचाराको
चिन्ह हस्तमध्येप्रगटमालुम
होवेतो॥२होतीनोंचिन्हकेफल
प्रगटतेवड़ोअसृराज्यकोप्रा
प्तिहोवेहै यदिएकजोचिन्हहो
वेतो समान्यराज्यभोगकोप्रा
प्तहोगा ऐचिन्हरहनेसोराज
ऐस्वर्यकोभोगकरेगा॥
संसारमोंवड़ोअकूपनेहसोजन्म
पर्जंतसुखीमानी धनीज्ञानी
गुनीहोके सद्दाआनंदसुखसे
रहोगा॥३॥ श्लोकं
अंकुसंकुंडलंचक्रंजस्यपाणि
तलेभवेत्त॥तस्यराज्यंमहा
श्रेसं सामुद्रवचनंयथा॥४॥
भाषा
कोइपुरुषकाहस्तमध्येजदि

अंकुशका चिन्ह होवे तो किंन्ह
कुंडलका चिन्ह होवे तो अन्न
चक्रका चिन्ह होवे तो ॥ नी
नो चिन्हके प्रतीत होनेसे म
हाराजा चक्रवर्त्ति राज्य भोग
कों प्राप्ति होगा यदि इसका चि
न्ह होवे तो सामान्य राज्य भो
ग होगा ॥ जो दिहो चिन्ह होवे तो
कछु विसेष राज धनस्व
र्ज भोग करेगा ॥ सो रसमुद्र वा
सीना रायणका वचन है स
त्य यामें संदेह नहीं करनो ॥ ती
नो चिन्ह होनेसे अवस्यक
महाराजा चक्रवर्त्ति भुपाल
नाम होके संपूर्ण भूमीकों

उपररहेगा जदि अङ्कुश घोडाके
चिन्हहोवेतो घोडा द्वारपरबंधा
रहेगा॥ यहसंपूर्णचिन्हहस्त
मेंरहनेसेबडाधनाढ्यराजा
पृथिवीपालकहोकेसुखीम
मृत्युलोकमेंरहै॥ ११॥

श्लोक ५

अंगुष्ठोदरमध्यस्थो यवस्यवि ५)
राजते॥ उत्पन्नभक्ष्यभोगीस्यात्
सनरः सुखमेधते॥ १२॥ अर्थ॥
जोप्राणीकेहस्तकेअंगुष्ठके
ऊपरमोंमध्यरेखाकेबीचमों
जदियवकाचिन्हहोवेतोय
हस्तसारमों विद्यावान्गु
णीज्ञानीबुधिमानधनीहो
केसुखीहोगा॥ जन्ममत्रेस

मररा॥ पर्जोनतसदासुखीभोग॥
करेग॥ ॥ जामेसंदेहनहीहै॥
॥१२॥ श्लोक
मध्यमातर्जनीमूलेयवोय
स्यचदृश्यते॥ धनवान्सु
खभोगीस्यात्पुत्रदारासुता
न्वितः॥१३॥ भाषा॥
जाकेहस्तकेमध्यमाअंगु
लीकेमूलमेनीचेकेरेखाके
मध्येजोजवकाआकारा
दृश्यमानहोवेतोधनपतिसु
खीहोवे॥ किम्बातर्जनीना
मअंगुष्टकेसमीपकेअंगु
लीकेनामतर्जनीकहैहैया
हीतर्जनीअंगुलीकेमूलतं
लेरेखाकेमध्येजवकाचिन्ह
प्रतीतहोवेतोधनीगुणीभ

अनीय पृथ्वीलोकमोपूसिध
होके विलासकरेगा व हुत पु
त्रहोगा ॥ बडीसुंदरी स्त्रीसों
भोगविलासकरकेअंतअवस्था
अंतहोकेजीवनपर्जंत अपने
कुलमोरहेगा ॥ यामोनहीसंदे
हकरनोसत्यहीहै तीनलोक
मोदेखाजाताहैपुराणीजनोसे
निश्चयमालुमहोतहै ॥ १३ ॥

श्लोक

अनामिकापूर्वमूलेकनिष्ट
दिकूमेराततः ॥ अपुत्रदश
पंपौरी ॥ सामुद्रवचनं यथा
॥ १४ ॥ अर्थ ॥
जदिकोईप्राणीकाहस्तमध्ये
कनिष्टकाअंगुलीनामकहै

ष्ठांगुलीकाप्रमाणमपूर्वभाग
सेअपरअचलकेअनामिका
अंगुलीकापूर्वभाग जड
तकसे आयुरेखाहोनेसेश
वर्षपर्यन्तआयुजीवनाक।
लासरा॥ आयुरेखाजोपूर्तित
होहे॥ जोरेखाकेमध्यमें
रेखाटूटगयाहोयनीचेतर
फ रूकाहोयतो जलमेंड
बनेकालडरासुचकहोता
हे॥ जोआयुरेखामेउपरसे
चढकेरेखानीचेरूकाहोय
तोवहसमेकिन्याकोहातउ
सेनीचेगीरनेकासूचनदे।
तनाहे॥ यहक्षीरसमुद्रसा

ष्ठअंगुष्टानखसोकहैलेख
यकतांतयाननागायहैकनि
ष्ठकाअंगुलीकामूलसेआर
भतर्जनीमूलपर्जन्तएक
रेषापरिपूर्णाअरगावर्णोल
यवर्णारेषाशुभमालुमहोय
तोएकशतवीपायर्वकाआ
युरेषासूचनकरेहै॥१८॥

श्लोक

अंगुष्ठस्याधपर्वरेषावर्त्तते
ते शुभा ॥ सेनापतिधनेश
यमर्ष्यमायुन्नरोभवेन्नृ
पः॥ अर्थ
केहस्तकेअंगुष्ठकेअं
गुलीकेउपरचढकेयवहु

धिगामीरेखापूर्नीतहोवोतोजा
नियेकीवडोउतमराजराजेस्वर
काचिन्हहैवडोसूत्रपतिराजाहो
वेगावडोसेनाफौजलसकरके
मालिकहोगाउहराजाकेसंग
मोउकनिसनक्षउपताकाकू
नेकहसयोपाकेसंगमोबास
करकेमहाराज्यवडोऐश्वर्ज
धनभोगकोकरकेपर्विवी
मोरहकेपचाशपाचवचप
नवर्षकिम्वासाठवर्ष ॥६०॥
आयुजीवनन्प्रारगराशिके
मनुषपकाभोगसंपूर्णउभो
गकरकेउत्तमतीर्थमोशरी
रत्यागकरेगा ॥१५॥ ॥स्रोक॥

तर्ज्जनीमूलपर्ज्जन्तमूर्ध्वरेखाच
दृश्यते॥ राजदूतोऽन्नवे तस्यच
मर्म्मनाशोपि जायते॥१६॥ ॥ अर्थ॥
तर्ज्जनीनाम वडे अंगुलीके स
मीपमें।रहनेवाली तर्ज्जनीनाम
अंगुलीके मूलजडतलेसें यदि ऊर्ध्व
रेखामिलके पूरनपूतीनहोवेतो॥
राजदूत होनेका चिन्ह है।। सिपा
ही होके हस्तमें छड्डीधारणापू
र्व्वक नानाप्रकारके राजकीय
पार्त्ता हरणालेआवनेका अधि
कारमें प्राप्तहोगा जीवनपर्ज्जन्त
राजकीयकर्म्मकरणेमें प्रा
प्तहोगा। व्यग्रचंचलहोकेस्व
रूपमहीहोनेसें। आपनाव
र्गामें अमके यत्नावतूउचितप

र्मकर्मकाचे सुखकेरीतिनहो
केसंसारमोंयनूंकोंचनूंविष
भोगकरके शरीरत्यागकरेगा
॥९६॥ श्लोक
मध्यमामूलपर्जतमूर्धरेखाच
दृश्यते॥पुत्रपौत्रादिसंपन्नोध
नवान्ससुखीनरः॥९७॥ मध्य
याकेहस्तमध्येऊर्धरेखाकेचि
न्हउठकेचलाउपरकमध्यमा
अंगुलीकेमूलजडासेमिलके
प्रगटसोप्रतीतहोवेतोसोप्रा
संसारमोंअपनेवंशकूंरमोव
डेत्राध्यवानहोगा बहुपुत्रवंत
होगावडेधनीहोगा वडेसुंदरी
स्त्रीसोंसंगरहोगा वडेसुखसं
पतिभोगाकरेगा यहलोकमों
वडेमाननीयसुजशकीर्त्ति

तनास्यवंतनामप्रगटकर
केलोकमोवठेंग्रानंदसोंभोग
विलसकरकेजीयनपर्जन्त
आनंदसोंरहेगा ॥ ११ ॥

श्लोक

अनामिकायामूर्ध्वरेषव्याव
सायेधनागमः॥ सुषदुःषेन
जीवेत्पुत्रपौत्रसमन्वितः॥

॥ १२ ॥ अर्थ

जापुरषीकेहस्तमध्येमूलमे
पहुचेकेजउतेंग्रारंभहोकेउ
ठकेउपरकोंचलकेजडिग्रन
मिकाअंगुलीकेमूलपर्जन्त
मिलकेप्रगटप्रतीतउर्ध्वरेषा
होनेसोव्यवसायरोजगार
नानाप्रकारकेव्यवहारकेसं
जोगकरकेधनसंचयकरके
शरीरमोंकिंचितसुखकिंचि

तदुःखभोगकरतेऊयेलोकमों
रहेंगा ॥ अरुयंतर्धनाल्पमाहि
होगा अरुयन्तःहरिहीन
हीहोगा परंतुमध्यमअरुधीक ।
रीधनवंत होकेसुखदुखसों
निर्वाहमात्रकरतेऊयेलोकमो
रहेंगा १८॥ ==== श्लोक ॥
जस्यपारम्युर्धरेखास्यातक
निस्तामूलसमन्विता ॥ तेनरः
परदेशेषुशतमायुर्लभन्ति
१९॥ ==== अर्थ ====
जाप्राणीयोंकाहस्तमोंजहि
कनिस्टिकाअंगुलीकेमूल
जउतलेऊर्धरेखाकेचिन्हमि
लकेप्रतीतहोयेतोकनिस्टा
अंगुलीकेउर्धरेखासोएक
शतस १०० वर्षलोकमोंरा

और रहके परदेशमो वासकरके
अपनाजीवकाकेकरनेऊवे
शरीरकानिर्व्वाहकरेगा १९॥

श्लोक

श्रीसदानंयन्यांपर्मपद्वीसुख
मेवचाविद्यामानोनपमा
चअंगुल्यामूलसंस्थिता २०

अर्थ

कनिस्टाअंगुलीके मूलमो ए
हि रेषाहोवे ऊतनासर्व्वाग
ननेमोप्रतीतहोवेसोसज्ञके
फलएहो हैं।कीयडोईसाजु
ऊकर्त्ताहोवेएकर [redacted] सोआदा
ताापरोपकारोहोवेदोरघासो॥
यन्यावत् पर्मशीलमाननी
यपूजनीय ज्ञानवान नती
यरेषाके फलमो प्रतीत हो

यहै।।वडोऐश्वर्ज्जराज्यभोग्य
वडोमहिमामहत्वकोंप्राप्तहे
केसुषसंपत्तिकेप्राप्तहोंहै।।च
तुर्थरेखाकनिष्टांगुलीके
फलमोंहृष्याजाहै।।वडोविद्या
वानपंडितज्ञानीवुधिमानला
यकपंचमरेखाकेमध्यमोंफ
लदर्शितहोवेहै।।यालोकमोव
डोमाननीययशस्वीसरदार
चौधरीग्रामकेसबमोमान
नीयकोप्राप्तहोनेकाचिन्हहै
छट्टपैरखकेमध्यमोसुष
फलप्रतीतहोवेहै।।यादिरेखा
सातउहेवैतोसंदेसपतेसंसा
रकेभोगहोगावडोसुषीधनी
नहीहोगापरंतुलोकमोंअप

मानओवकुंतपावेंगा ।। यह
नारायन वृत्तासोकहेहै ।। की
अंगुली कनिस्टाकेमूलमो
संपूर्णापुर्णारेखायोकाजन्ममो
त्रकसुषदुघओगोघनवज्रा
नओरअजानीयोकालस
णारेषासोप्रत्तीतहोताहेसोइरे
षामध्येवृत्ताजूपुर्णारेखायोको।
भोगकोंलिषदियाहे ।। २० ।।

श्लोक

कनिस्टामुलसंयुक्ताविरेषा
यस्यदृश्यतोऽरकेयुग्मंत्रित
पंचचतुर्त्यवारास्यंयुतम ।।
।। २१ ।।

अर्थ

जापुर्णारेखाकेहस्तकेकनिस्टा
अंगुलीकेमूलजऽतलेजोंरेती

नरेखाकेचिन्हप्रतीतहोवेतो
मुर्वधर्मकामस्हतीनपद्।
र्थकेलोकमांधेभोगकरने
काचिन्हहै।। यदिएकरेखा
होवेतोधनीहोवेदोरेखासों ध
र्मात्माहोवे तीनरेखासोंवडे
भोगीभोगकर्ताहोवे।।चार
रेखासोंबहुतस्त्रीकेभोगके
कर्ताहोवेपांचरेखासोंज्ञानी
माननीय यशस्त्रीबुधिमान
होनेकाचिन्हहै।।कनिस्ट
अंगुलीकेमूलतलेउठकेरे
खाहोनेसोंजइरेखाहोवे उन
कीभोगकारखामोंप्रतीतहो
ताहै।।जादिस्त्रीकेवामकनि
स्टामध्येमूलतलेजइरेखाऊ
परकेचरठकेप्रतीतहोवेतो

ओत्तहीपुरुषकासंगकररो
काजोयपूतीतहोवैहै॥२१॥

श्लोकं

अपयुर्व्बलजवे दृष्यातर्ज्जनीमू
लसंस्थिता॥शतवर्षज्जवेद
हायुःसुखमल्युर्न्नसंश यः

॥२२॥ अर्थ

यहसंसारमोंसंपूर्णापूराणीमा
त्रके कनिस्टाअंगुलीकेमुल
तलेजोजोरेषाकाचिन्हपूती
तहै वाहीरेषाकेचिन्हसेमा
लुमहोताहै कीसुषीदुषीजन्म
मरण॥अपयुकाज्ञानपूतीतहो
है॥जांदिकनिस्टाकेमूलसेच
लके तर्ज्जनीअंगुलीकेवी
चमूलमोंजाईकेमीलकेपूता
तीतहोनेसोएकशत १००॥

वर्षकाआयुरेखासोंपूर्तीत्तहो
ताहै॥ वहूप्राणीसुखीहोकेप्रा
राज्यागकरैगा॥ याकोकमो
सुखीहोकेरहैगा॥ जोहिमध्य
माकेमूलतकलेरहैतोसत्तर७०
पाचपचहत्तर७५॥ वर्षके
आयुका॥ चिन्हरेखासोंपूर्ती
तहोवेहै॥ २२॥ श्लोक॥
मध्यमामूलपर्ज्जंतमायुरेखा॥
चदृश्यते॥ चतुरशचतुर्विंश॥
आयुर्बलविनाशना॥ २३॥
मूल
जोहिकोइप्राणीकेहस्तकेअं
गुलीकनिस्टाकेमूलतेउठ
केमध्यमाअंगुलीकेमूलके
नीचेसोपूर्तीजहोवे॥ मध्यमा॥
मोमिलीहैनहीं॥ मध्यमाके
नीचेएकअंगुलीपरकहो

कमूलतलेप्रतीतहोनेसोंआप्र
ीकेआयुरेषामोप्रतीतहो
ाहैकाचौवीसवर्षा॥२४॥ओ
ौरहवर्ष १६ हौमिलकेअ्तौ
ावर्षका ३२ अयरेषामो
आयुकाबलकेनाशमररा
कोंप्रतीतरेषासोंहोताहा॥२३॥

श्लोक

आयुर्बलंभवेन्नूषाऽनामि
कामूलसंस्थिता॥त्रिहसंच
ेषक्षोंचआयुर्बलंविनाश
नमा॥२४॥ अर्थ
ाप्राणीकेहस्तकेअनामि
काअंगुलीकेमूलतलेएक
रेषाऊपरसोंनीचेकेउत्तररही
कोवेतोएकयवमात्रतोविह
शानामतीषा ३ वर्षकेआयु

रेखासोप्रतीतहै जोदेहोयवग्रा।
त्ररखाप्रतीतहोवेजोत्रिवस्रीस।
ठतीनाथात्रिसठ ६३ वर्षकेग्रु।
युकेवलरेखासोप्रतीतहोताहै
सोअनामिकाकेमूलकेरेख।
सोअायुजन्मकाहोयप्रतीत
होतहै।।२४।। श्लोकं।।
अायुर्हीनंवल्पास्वल्पलघु
दीर्घं चदृश्यते।।तेनराःसुख
दुःखेनचाल्पमायुर्नसंशयः।।
।।२५।। अर्थ
जाप्रानीकेहस्तमोअल्पछो
टारेखाप्रतीतहोयतोअायुअ
ल्पजोराजीवनकावीचारक
रनोताजीसदिसेषदीर्घवडोस
वायमानरेखाहोयतोदीर्घ
वंअायुर्वलकेदेखनो।।

परंतुरेषामोक्षयामनाकृषाव
रीरेषापूनीतहोनेसोंगाकिंचि
तसुषाकिंचितदुःषजोगकर
तेकुवे अल्पआयुकावीचार
केदेषनाजोप्रकारकरेषाहोवै
सोप्रकाररेषासोंसंपूरांजन्म
मत्रकाशुभाशुभकोंसूचनक
रताहै॥२५॥ श्लोकं॥
करमध्येस्थितारेषापितृवं
शसमुद्भवः॥पूरारेषापितृवं
शोर्ध्वरेषापरवंसकः॥२६॥
अर्थ
हस्तकेमध्येरेषाजोविच
रहै॥अंगुठअंगुलीतर्जनी
अंगुलीकेमध्येसोंरेषाच
लकेजातीहै॥हस्तकेमध्य
सकेबीचसोंपीछेपहुंचे

केतरफमोघूमकेजातीहोतो
करेखाकनीगस्टिकांअंगुलीके
सामनेसोअपयुरेखाकांकनी
चैसोजोचलकेहस्तमारहेहे
सोजातिपूर्णरेखाहोवेअपुर
खाकेनीचेकरेखातोअपने
पिताकेवीर्जसेजन्मलिया
है।।यदिपितरेखामेंअर्ध
अल्पप्रतीतहोवेतोजानीये
कीपरकेवीर्जसेजन्मली
याहै।। यदिवृअंगुस्तनर्जनी
केमध्येदोरेखामिलकरहे
तोजानीयेकीमातापिताको
वडाप्रेमनत्या एकत्रसंगमहो
ताजातिपत्यकरेखाप्रती
तहोवेतोजानीयेकीदोकेसं
गसहनहीरहताहै।।दोमेके

यह होताहै गति श्चय सोजानि
ये यदि पिताके रेषा छोटा है
के नीचे के तरफ मो कुक के चं
ला होतो पिता के अल्प आयुज।
ना गाजदि मोटा रेषा लाखी ब
ड़े उपर तक मो प्रतीत हो वे तो
बड़ो आयु पिता के जानी ये गाज
दि मातृ रेषा जो पहुंचे के तरफ
सों हा के उपर मो गया है सो अ
स्पष्ट सूक्ष्म रेषा मो दिषाता है
तो माता के आयु अल्प जानना।
गाजदि मोटा हो के अरु रावरा
बरी प्रतीत हो वे तो व ड़े आयु
माता के जानिये गाजदि माता पि
ता के रेषा के मध्ये उपर म
ध्यमो त्रिशूल हो वे तो माता पि
ता दोनु स्वर्ग वासी देवता हो के

देवलोकमो जाइकेसंगसुखग्र
सकरेगे यतनीभूयपयाकयहै
।।२६।। श्लोक ।।
मातरश्चापरैचैवएकैकपुत्र
मेवच।। एकैकंपुन्यमाप्नोयपु
ष्यपरैश्चचदृश्यतो।।२७।।

अर्थ

पिताकेरथामाताकेरथाहोहस
मैपूत्यकपूत्यकहोकेहसम
च्छेपूतीत्तहोयहै।।माताके र
थात जनीऋंगुस्तकमध्यसो
चलकेपऊचमोमीलकेरहती
है पिताकेरथात तर्जनीअंगु
स्तकेमध्यमोनिकसकेअंगु
ष्ठाकेनीचेसोचलकेहस्तके
वामपार्श्वमोउठकेजाना
प्रतीतहोताहैसोईमातापिता

केपुन्यकेलेकेमाताकेअंशर
समानहीपिताकेअंशबीर्जमत्र
सौरजबीर्जकेलेकेप्राणीमात्र
संसारिकविषयभोगनिमित्त
शरीरकोधारणाकरेहेसोईमा
तापिताकेरेखाहेहस्तकेबीच
मोप्रतीतहे॥२७॥ श्लोक॥
यत्रुरेखाभवेत्कलेशंस्वल्पा
निर्धनहीनता॥२॥आयावाम
नंसौख्यसामंवृवचनंजन्माप
॥२८॥ अर्थ
जाकेहस्तमोमातापिताकेरेखाके
मध्येयउतरेखाछोटाछोटरेखा
अनेकोप्रतीतहोतहोताहोवेतो
निर्धनहोनेकाचिन्हहेशरी
रमोनानव्याधिरोगहोनेका
चिन्हमोप्रतीतहे॥जहिमातापि

च

ताके संकेत सो रेखा के मध्य में उ
ति अल्पसूक्ष्म रेखा होवे तो दूरि
ही होनेका चिन्ह सो प्रतीत होता
है इहीं वास्ते हस्तकै मध्ये पुरुष
पुरुष रेखा जहां मान पितके रेख
मध्ये प्रतीत होवे त्रिकोण की
याके स्कोणाकी म्याचक्रम
नयात्रिसला आदिक केरि
न होवे तो वउ मान नीय वर्षि
मान सुखी होनेका चिन्ह होता
है । यह सीर सागर समुद्र वा
सी भगवान श्री ब्रह्माजी से
कहे है सो सत्य वाक्य के मेति
भ्यक मान ना जो स्य हो

श्लोक

अंगुलीनां पन्यक रेखा गन्यते
वित यं पन्य कारे खाद्वा दृशके
सौख्यं धनं धान्य पूह यके ॥१९॥

अर्थ

जा प्राणी के दहिने हस्त को पाचो
अंगुलीयों के मध्यम पर्व के
तिनीतिन रेखा को पन्यक पन्
कगन नासों यदि बारह दश
रेखा हे बेतो बडे सुखी धनी गु
नी सायक होने का चिन्ह में
प्रतीत होता है ॥१९॥ श्लोक ॥

अंगुलीनां पन्यक रेखा गन
भवे तृत्र यो दशा महादुःखा
महाकलेसं साम्यूबचनं ज
न्या ॥ २० ॥ अर्थ ॥

जाके दहिने हस्त के पाचो अंगु

चिन्हहोपुवचनहोगापरंतुक
नकाकलेशरहेगाहरिद्रीहोगा
जोदिदोकुंडकेबीचसोसामनेर
यालवेहोकेघडेलिंगहोवेतोस
बीहोनेकाचिन्हलिंगमोप्रतीत
होसो॥३४॥ श्लोक
कल्येतुतनयोलिंगोशिरालेन
सुखीनरः॥स्थूलग्रंथियुते
लिंगेजवेतपुत्रादिसंयुतः॥३५
अर्थ
जोसिद्धोतालिंगहोवेपरंतुलिंगके
उपरमोगिरहग्रंथिसोमिलाहो
घागिरहदारहोवेओलिंग
घडेमोशिरानाडीउढीऊचीप्रती
तहोनेसोज्योमोटाजोओलिंग
होपरंतुलिंगकेउपरकेचारो
तरफकेगिरहग्रंथिसोसज
ऋरहनेसोसुखीधनीपुत्रादि

कोसो सोपन्नहोवेलोकमोसु
खीहोवेकारिगसोप्रतीत होवे
है॥ कया॥ इतिगारुडेपुराणे॥ तह॥
अध्याये॥ अन्यच्चश्लोकं॥

दीर्घलिंगेनदारिद्रस्थूललिंगे
नर्निर्धनः॥ कृशलिंगेनसौ
भाग्यंन्हस्वलिंगेनभूपतिः॥ कुल॥

अर्थ

जदिदृशकं गुलीकेप्रमाणासिंग
होवेतोनिर्धनहोय॥ स्थूलबडे
मोटालिंगहोनेसेनिर्धनदरि
द्रीहोनेकाचिन्हहै पतलकृश
लिंगहोनेसेसौभाग्यसुखीहो
गा॥ जादिअल्पछोटालिंगके
उपरगांठ्योअरुणलालवर्णप्र
तीतहोवेतो॥ सूक्ष्मपतलेलिं
गसोजुक्त होनेसोराजाहोने

कासुरा॥ तो स्त्रीलसरा मि
लेतोराजा कुवस्य होतहै॥

॥३५॥ श्लोक

कर्कशेकठैनीर्लिंडः परद्वार
नः सदा॥ रमतेच सदाहासी नि
र्धनो नवाति ध्रुवं॥ ३६॥ अर्थ
जाकेलिंगमों पडोक डांक ठौर
ताकठिनता प्रतीत होवे तो प
रस्त्रीकेसंग सदाह्रारमरा करेगा
सदाहासीवेश्याकेसंगरमरा
जोगाकरतउ धनिर्धन होनेवा
लिंगमोचिन्ह प्रतीत होता है

॥३७॥ श्लोक

कृष्णासिंगेनसूक्ष्मेरारक्तौलिं
गेनजूपति:॥ परस्त्रीरमतेनि
त्यंनारिनोबहुमोक्षबे नू॥

अर्थ

जाके छोटालिंगहोवेपरंतुसू
क्ष्मपतलाहोयजनेसोंप्रतीतहै।
औरजोलालवर्णालिंगकेऊपर
सोप्रतीतहोयजनेसोनृपतीराजाहो
गा।परंतुपरस्त्रीयेंस्यकत
होवैरिसोंवेजिचारिरीस्त्र
नोपकोसुंदरीपरस्त्रिजोंकेसं
गभोगकरनेकुंपवऔरतीजवो
केभोगहोनेसोप्रियवस्तुन
परस्त्रीयोंकोआनंददेनाहो
गा॥३२॥ श्लोकं॥
कृशलिंगेनरःकेनलभतेचे।
तमांगनां॥राज्यसुखंचादि
व्यकन्यकपाःपतिर्नवेत्॥३२॥
अर्थ
जापुरुषोंकेलिंगकृशहोय

कन्यातत्वज्ञोपत्तलावेषनेमो
प्रतीतहोवेयाज्ञोलिंगकेउपर
मोरत्तवर्णाकन्यानूलालव
र्णदेषनमोप्रतीतहोनेसों
उत्तमसुंदरीसर्वगुणसोंसं
पन्नदिव्यगनादिव्यसुन्द
रीकन्याकेपतिस्वामीहो
केनानाप्रकारकेराज्यवि
भवकेसुषभोगकरकेजी
वनपर्यंतालोकमेसुखी
भोगाहोकेरहेगा ॥ ३५ ॥
इतिश्रीशिवपार्वतीसंवादे
तंत्रसामुद्रिके ॥

कन्यलक्षात्वर्णानं

श्लोकं

उन्नतैर्विपुलैः शंखैर्लला

हैर्थिंघमेस्तन्या ॥ निर्धनो
धनंधंतश्रुभ्रुर्धै हुसदृशैर्नरः ॥

॥ ५८ ॥ ——— अर्थ ———
आप्रारणी के उच्चललाट होवे ॥
ललाट के उपर मो जो हि उछुउ
न्नत उपर के चरु के पूरणपृशांय
के चिन्ह प्रतीत होवे ॥ अन्यच
ललाट के उपर मो रेखा अर्धचं
द्रके सदृस रेखा प्रतीत होने सो
निर्धन के वंश मों जन्म है तौ
परन्तु वडो धनी सुखी होगा
संसार मों वडो मानतीयप्र
शील होगा ॥ ५९ ॥ ——— श्लोक ॥
आचार्जाः शुक्तिविशालैः
शिरालैः पपाकारिराः ॥ उन्नता
निःशिराभिस्तुखसिनकाक्षि

कि यव ससाट कं वी च मे नही नीच प्रतीत होवे

धनेश्वराः॥ ॥ अर्थ॥ जघ्नरांगोंके लूसासके ऊपर शूक्तिका नाम सीपीके सदृश रेखाके शमान नाड़ी सिरा प्रतीत होने सो आचार्ज साधुमतीकी विरासिके न य वनके लोकमो वंचक न होके रहेगा पापरंतु पापही कर्मके करणेमो याके प्रीती होयगा ॥ जो ललाट पर ३ घे ३ छे पूगट रेखा होवे॥ स्वस्तिक कमल दूसके सदृश नाड़ीके चिह्न प्रतीत होवे सो वड़ो धनी यामें अरस धनेश्वरहो के लोकमों विख्यात होगा॥ ॥

श्लोक

निर्मलं ललाटं वर्याणि क्रूरकर्मरतं रस्तव्यासं घृतं भ्रूललाटे

स्युकूपरा॥ उक्तैर्नृपाः ॥
॥८२॥ अर्थ
जापूराणीकालललाटमेनिमननि
चावीचमोवाल प्राप्तहोयतो
यापूराणीयपकरथेकाजोस्पहे
जहिनीचाललाटयालापूराणीजो
येतोजीवनपर्जन्तहुसकर्म
क्रूरशुभाशुपापर्भुयिहोवेसो
कर्मोविदितहोगा॥जदिछोटा
ललाटहोकुपिराहोनेकोवुधि
होयगा॥जदिउचाललाटहोय
तोराजाहोनेकाचिन्हहयाद्द
श्लोक
ललाटोपस्तानिस्त्रीरेषास्फुःशरी
तवर्जिरां॥नृपत्यस्याच्छुतस्य
त्तिरायुःपंचनवत्यब्दा॥८३॥
अर्थ

जा प्राणी के ललाट के उपर मोती
ने रेषा उत्पन्न प्रगट प्रतीत है
नेसो एकसौ व शतवर्षके रेषा
मो प्रतीत होता है॥ जादि ललाट
पर प्रगट चार रेषा होय तो त
जो भी उमर होयगा॥ जादि ल
लाट मो पाच रेषा होय तो नवे
पाच पचनवे पाच वर्ष के
एकशत वर्षक मरएक शत व
र्षका आयु जिवने का प्रातीत
रेषा मो होता है॥५७॥ == श्लो
क रेरवेरा॥ पुनर्वलिविच्छिन्न
नि श्रूप श्रुलाः॥ केशांतोप
ताजिनुक्रम शोत्याय पुनरेतत्
५८॥ == अर्थ ==
जा प्राणी के ललाट के उपर को
एक रेषा नहीं होय तो नवे

घेकाछआयुजानिस्योजाहिलल।
हकेउपरयऊतरेखाछिन्नान्नि
न्नप्रतीतहोयतोस्योप्राणीपु
मुललंपरपरस्त्रीपरधनचोरा
यनेकाभोगकरशोकासप्हाम
नमोचीनाहोनेकालछलहै
जाहिकोइस्केरआललाहकेउ
परकेशवलकेजडमलकेपूग
रेखाप्रतीतहोयतोपुरुसीयर्व
काआयुजीवनलाभहोकेसं
सारमोसुखपूर्वकसरीरको
त्यागकरेगा ॥ ९७ ॥ == श्लोकं ॥
पंचभिःपंचभिःयाद्भिःपंचा
शद्भिरुभिस्तथा ॥ चत्वारिंश।
द्विचक्राभिस्त्रिंशद्भिःस्यग्रगा
मीभिः ॥ ९८ ॥ == अर्थ ==
जाकेललाटपरपांचपंचद्दस
रेखाछिन्नभिन्नप्रतीतहोय ॥

जहिंएअरहरेखाहोयजहिंछुद्र
रेखाहोयजहिंयकुजरेखाहोयजं
नतेमैठीकनाहिमालुमहोय
तोएतनेरेखासोंचालीसव
र्षकीआयुललाटरेखासोंप्र
तीतहोहै॥जहिंललाटकेउपर
रेठारेठाहोकेएकरेखाभुकु
टीकेउपरप्रतीतहोयतौतीस
वर्षकीआयुरेखासोंप्रतीत
होहै॥७४॥ स्लोकं
विंशतीवर्षमित्ताभिरायुःसु
द्धांत्रिरषयकें॥नपनूवालेइ
तिमेभ्रुवोचालललाटकें॥७५॥

अर्थ

जोपूरीाकेललाटकेरेखावाम
भागमेविशेषहोय॥किस्व
रेठएठारेखाछोटेछोटेहोय

तोवीशवर्षकेआयुप्रतीत
होहै॥जोइन्हकुंडीकेउपरका
रेखामोसाहोइकोद्रजकेचंद्रमा
केसाद्रशरेखाप्रतीतहोतोय
तोपरिपूर्णआयुरुकसत
वीसवर्षकेप्रतीतहोहै॥जा
इन्हकुंडीकेउपररेखानहो
इतीयाकेचंद्रमासाद्रसहोय
ओनहीमोसारेखाहोयअतिसु
क्ष्महोयतोअतिअल्पआयु
रेखामप्रतीतहोहै॥५९॥
श्लोक
शुभ्रमर्धेंदुसस्थानमप्युंगुस्य।
इलोमध्यगानप्रतीतांञ्चवेचित्
ललाटेशुभ्रस्पर्शतांकृ॥६०॥
अर्थ
जाप्रस्तीकेललाटमध्येद्रकु

तीके उपर स्करे साकर्य चंद्र
माके सदृसा प्रतीत उच्चुरे सा
प्रतीत होवजादि उच्चुलसारछो
वजादिलसारमध्ये रोमरहि
तेषा प्रतीत होवे जादि कुकु
रिमध्ये रोमभिलानही होवे
तौराज्य होवेवडा राज्य स्कु
जे जोग करसौ का चिन्ह प्र
त्यप्रतीत होवे हाम्सा

इति श्रीगारुडे लक्षाटशुभाशु
वर्णनं ॥ अथ जंघाल

श्लोक

शुष्क: कमठ पृष्ठाभ्यो गजशुं
डोपमोन्नगजाभ्यामोन्नतकु
न्याज: पृथुजंघा सिरा लोन्नतः

अर्थ

जातकीकेजोनक्षत्रघातनगक
मठकछुकछुपकेपुरुकेस
मानगङ्गुचाहोनेसोछुय
मस्त्रस्नगकेलसरा है॥
जोरिगजहस्तीकेकोषेकेस
मानउचजोनीहोयतोअस्त
हैजारिजोनिकेउपरयामत्र।
जामेउचाप्रतीहहोनेसावत
जोनीमोकन्याकाउत्पत्तिवि
शेषहोनेकाचिन्हहैजारिजे
निकेउपरहितेनरपरउचा
प्रतीतहोवेतोपुत्रविशेषहो
नेकालसराहै॥ श्लो॥ श्लोक॥
मायुरोमागूठमरोः सुस्त्रि
स्टःसंतनःपव्युःानूगःक
मलवरांनःशुभोऽछापद
याकृती॥ श्लो॥ अर्थ॥

गास्त्रीकाजोनिकेउपरमोंविद
रीविन्नीकेरोमशंङ्खसाऽङ्गुल्य
ल्यप्रिन्नभिन्नस्वेरछोटा
मूवरकूवरवारप्रतीतहोय
तोजोनिञ्रसहायताजादृजो
निगूढगूप्तमिलिकेहोतरप
केसंपुटमिसाऊपामोरादल
होकेउचाप्रतीतहोकेकमल
पुष्पकेसमानसंपुटशुत्र
सुंहरदेखनेमोप्रतीतहोनेसो
केसरजोनिकाचिन्हहैजादि
कुञ्जुल्यपीपलपत्रकेसमा
नत्रिकोणाउचाहोकेप्रतीत
होनेसोउत्यमसुखशुभदाय
ककालस्मराणहो॥ ५७॥

श्लोक

कुरंगखुररूपायमुत्सिहको

इरसंनिम्नःरोमशोचिवृता
स्यञ्चदृश्यनासोउतिदुर्भगःस्त्री
॥५०॥ अर्थ
जानारीकेजोनिकुरंगमृगकेखुरकेशदृसहोयाजहिचुल्हिचूल्हाकेउपरपेटकेशदृसहोयाजहिबहुतसेघनवालहोय॥
उचाउचाहोयजाहिजोनिकामुषपत्लवपत्लवहोयेपक्केदाडिम्यफलकेशादृसफूटिरहेहोवेदूधनमोभीतरकेमांसपकलासुपामयरीदेषनेसोवहदुर्भाग्यदुःषकुशुभकसेशोकदायकजोनिकालक्षरापूर्तीनहोहो॥५०॥ श्लोक॥
शंखावर्तोभगोयस्याःसाज

औमिहनेद्युतिा।चिपिदृःक
पेराकारःकिंकरिपस्हे।अ
गः॥पश॥ ॥अर्थ
ज्ञानारीकेजो।निशंयकेसमा
नस्केतरपरमो।रा।स्केतरप
पतला।प्रतीतहोनेसो।गगत्रे
केनहीं।पारराकररा।का।प्र
तीतहै।ावहत्या।होनेका।जो।नि
मो।चिन्हप्रतीतहोहै।जहां।चि
पसावकुतग्वासमुखप्रतीत
येखपराकेसमानहैयनमें।
प्रतीतहो।नेसो।लस्रा।जो।नि
का।किंकरीहास।त्री।सकीह
रिद्रीदुःखीहो।नेका।जो।निचि
न्हमो।सूचतकसुन्नक्ग्म
लप्रतीतहोहै।पश॥

अथनासिकालक्षणं ॥

श्लोकं

वंशवेत्रसपत्राभो गजरोमोच्च नासिकः ॥ विकटः कुटिलाकारो लम्बगण्डस्तन्यासु ज्ञः ॥ ५४ ॥

अर्थ

जा स्त्री के वांसके पत्रके समान किंवा बेतके पत्रके समान उच्च नासिक होवे ॥ किम्वा गजहस्ती के रोमके शदृसा केशरोमनासिका के उपरहोय किम्वा चड़ेनअयंकर कुटिलसं वाय मान उचगल्या ॥ कंठहोनेसों स्पृह चिन्ह स्त्री का शरीर मों अशुभअमंगलको सूचनकरावता हो ॥ ५४ ॥ श्लोकं ॥

शीघ्रनाम्घाकृतिर्येनि स्त्रीया वाचकीर्तिता ॥ तस्यास्तृतीये

त्यावर्त्तं गर्भेश व्यापूर्कीर्तित

॥५३॥ अर्थ

जारलीकेशंषकानाम्नीकेसम
न जोनि होनेसो उह रहीवहुत
संतानकन्यापुत्रके उतपति
करावनेवाली उह जोनितोम
मोंगर्भहोनेकासेज्यारहनेक
स्थान हीहै॥५३॥ इति जोनि
स्तरां॥ अथकांबलस्तरां

श्लोक

कक्षाउन्नुल्यदलाग्रेस्तासुगंधि
न्युर्धरोमीका॥ अन्यत्यान्यहि
नानामसौनिस्थरस्यचारो के

अर्थ

जारलीकेबीच्यापरछके कछ
नामकांबकंवामो अस्थल्य

पीपलकेपत्रकेशदृसहोनेसे
ऐसफलहै॥जाकेंघामोसु
गंधवसहोय ३।धं३ छेकोच
हेऊवेरोमप्रतीतहोयतोयडो
ऐससुखहायक लक्षरा॥ हैज़
र्पीपलकेपत्रकेसमानकस।
नहीहोयसुगंधकेंघामोनही
होयतो३धं रोमनहीहोयतो
उहकेंघामोफलदारिदूतको
देयावनेवालाहै॥ ३ अयमफ
लनहीहै स्यारस॥फलसजा
नाना॥जोस्यहै॥पञ्च॥
पुनर्कुजलस्रा॥
श्लोक
निर्मासौचैवन्न ग्राल्पौछि
द्रौचविपलौन्नजौ॥ऋजा

तुलसीचिनौवा हूवृतौपीनौल्कूच
च्युरे।।पपा।। श्लोक
नापूरी।।केजुजाकेउपरमोंमा
सल्वोरापुनीतहै।।उवरावर
यजाकेरसमोराजुजाहाने सो
सुषदायक है।।जदिजानूधो
रूपजीतलंबायमानदीर्घ
हूपुरुषकोहोयतोवेउत्य
मअष्टेरसराजाहोकेनानाप्र
रकेसंसारकोभोगसुषके
करतावालाजुजामहाराज
होकेलोकमांप्रगटहोयगा
।।पपा।। श्लोक
निःश्वानारोमसोद्रस्योन्न
जौहारिदूदायको।।अरोमशे
तुसुषिनौजुस्रीकरिकरप्र
ज्ञौ।।पदा।। श्लोक

जाकेभुजाको उपरवक्रतरोम
होयअल्पछोटेछोटेभुजाहो
नेसोहारिद्रदुःषकलेशकेदाय
कअसुनभुजामोलक्षराहै
जहिहस्तीकेसूंठकेशुद्धसल
वायमानअल्पन्योररोमवा
लेभुजासुखी होनेकालक्षरा॥
सोप्रतीत हैकीश्रेस्टभुजाक
हीहै जामेन्योररोमहोनतो
रेमांसप्रतीतहोयलंबाय
मान होयसोईभुजाश्रेस्टसु
षफलहै है ॥पहा॥
इतिभुजालक्षराः॥
अथजंघलक्षराः॥
श्लोक
अल्परोमयुताःश्रेस्टाःजंघ

हस्तीकरोपमा गेरोमैक कं
पकेस्यात्नृपानांतुमहात्म

॥ पठ॥ ॥ अर्थ ॥

जाकेजंघकेउपरमोऋलपनै
रारोमहोगासोजंघाऋस सुष
भोगकेद्यकहै।जंदिहस्ती
केसुंढकेसमानउपरमोटाहै
नीचसोपावडाऋसस्मुंढकेस
मानचठावकुतरावजंघाहोय
तोऋस्तसुषकेदेनवालाहोहै
जंघकेउपरमोरक्करूएकरोम
केछीद्रमोरकरूएकहीहोयरो
मतो।पावडोराजामहाराजकेचि
न्हमोजंघाकेफलसोंमहार
ज्यसुषऐश्वर्ज्यभोगकेदाय
करोमरएकहीमोऋसफलहै
जदिजंघमोरोमकेछीद्रमन्या

नमोहोसोपुनीतहोयतोवडोपं
डितज्ञानीशास्त्रज्ञवुधिमान
होनेकालस्नराजंघेमारोमहो
केहोनेसोपंडितहोतहीहैताहो
होरोमवरावरजंघामोसंपूरी
होनेसोवड़ाप्रारोसंपूरीवेह
येहातकेपरठनेवालाशूद्रवा
ब्योपनिषद्वाइक तत्वमसी
नामहावाक्यके अर्थकेज्ञता
डोमहापुरुषवृह्मज्ञानीहो
काचिन्हहे॥ पद्य॥ = श्लोक॥
नत्रयंहारिद्वारा॥रोगीनिर्मी
जानुकः॥महाद्वारिद्रजंदु
ऽक्तेरोमचतुर्लको॥पद्य॥
= अर्थ =
जंघेके उपररोमत्रयहो

तिनतिनरोमएकत्रमिलके
यतोदारिद्रदुःखरोगकेदायक
जंघहै जोइमासन्योराजंघेमो
प्रतीतहोयतोदुःखहीकेदाय
कहोयहै॥जोइचारचाररोम
कत्रहोयतोवडोदारिद्रताके
रोगकरनेवालाप्राणी॥जंघे
केरोमचारचारहोनेसोंदुःख
हीकोंरोगकरेगा॥यामेंनहीं
संदेहजाननो॥पद॥
इतिजंघेरोमलक्षणाफल॥
अथचरणलक्षण॥
श्लोक
निगूढगुल्फोपतितोपस्थक
तितलौश्रुजो॥अश्रुद्रिनौमृद
तलौमतस्याकमकरांकितौ
॥पद्म॥ अर्थ

जाप्राणीकेचरणतलेमेंगुठाउस
करेंउंगलीपारशीहोशहोयकमल
केसमानसुंदरपहृतसेपुनीत
होयअरुंद॥पशूनाचरण॥
मोंनहीहोयआवडोकोमलहो
नेसोअरुस्पर्शहै॥जाकेच
रणजलमतुसमछरीकेचिन्ह
होयतोवडोराज्यजोगकेद्दा
यकहोहै॥जदिमकरगजुहके
चीन्हहोयतोवडोप्रतापीसु
खीहोकेनानाप्रकारकेवाहन
परचलनेकाचिन्हहैयहप्रा
णीवडोअरुस्सुखकेपावेगा
॥पद्मा॥ श्लोकं
यज्ञाजहंसचिन्होचद्दास्या:
पद्मयह्रास्त्रियतो॥राजपत्नीत

साज्ञैयाराजभोगघरहोयकौ

अर्थ

जाकेचरणतलेबज्रकेचिन्ह
यजोदिकमलकोचिन्हहोय
जोदिहललांगलकोचिन्हहो
तोपुरुषराजाहोयक्षोरानी
यजोदिदासीकेचरणमोंरे
चिन्हहोयतोदासीजोरानी
होयराजसुखभोगकरेगी
जोदिदासकेचरणमोंरेहोचि
न्हहोयतोदासहूराजहोसुख
भोगकोउपगुभ्यहीभोगक
ग॥६०॥ श्लोकः॥
जंघेचारोमराहितेसुवृत्तविश्
रेशुजेः॥ऊनुलवणासंघिटे
शेसमंजानुहृयेश्रुजेः॥६१॥

अर्थ

जास्त्रीकेजंघेकेउपररोमवाल नहीरहनेसोअक्षरसजंघाहैजा केजंघेमोनाडौनहींप्रतीतहो यतोअक्षरहैहैजंघेकेसंधि निसनस्थानमोजहिंघठूतन। ौकाचिन्हनहीरहैतोअक्षरहै उरसमानबराबरहौजंघाहो नेसोबडोअक्षरसंतानारिक सुषकोदायकजंघाहै॥ ८४॥

श्लोकं

उरुःकरिकराकारावरोमौच समौशुभौ॥ रोमजंघौचनारी नामहादुःषप्रदायको॥ ८५॥

अर्थ

जास्त्रीकेजंघेहस्तिकेसुंडके समानहोयतोअक्षरहै॥ औरजो रोमनहीजंघेकेउपरमो॥

स्रीयोकाहोयतोवडेअैस्वप्न
फलधनधान्यपुत्रकलत्रसं
जुक्तसुखकेद्यकम्रोमजह
होहै॥जदिस्त्रीयोकेजघेकेज
घेकेउपरमो॥रोमवहुतहोय
तोवडोदुःखकलेशकेहैनवा
लाजंघेमोंफलअशुभप्रती
नहोवेहै॥ १३॥

अथगुल्फलक्षणं

श्लोकं

अश्वत्थपत्रसदृशौघिगुल्फौ
स्वमुन्नतौ॥पद्मकोशमिवं
श्रेसंगुल्फचारुमुनीश्वर
॥ १४॥ अर्थ

जाकेगुल्फस्वपान॥गुल्फम
॥अश्वत्थ॥पीपलकेप

केसमानदेषनेसोप्रतीतहो
याकिम्या ॥ कमलपुष्पके
संपुठकेशब्दसाप्रतीतहोनेसे
॥ स्त्रीकीम्यापुरुषदोकेशब्दसू
चकगुह्यमार्गसेप्रतीतहै ॥
जदिरूहदोचिन्हसोवीपरीत
गुह्यमार्गहोयतोउभयमफ
लकोकहिनहिदेहै ॥ कीन्तु ॥
कलेशहीकोदेहै ॥ ६३ ॥

अन्यसर्व्वांगलक्षणं

श्लोक

भोरणीललाटकंस्त्रीरा ॥ मरक
मीरतंशुभं ॥ गूठोमरी ॥ शुश
ब्दोतितंवच्छुगरुशुभः ॥ ६४ ॥

अर्थ

स्त्रीलोगको ॥ जंघादोललाट

स्त्रीयोकाहोयतोवडेअग्रस्फ
फलधनधान्यपुत्रकलत्रसं
युक्तसुखकेदायकअरोमजेह
होहै॥जदिस्त्रीयोकेजंघेकेजं
घेकेउपरमो॥रोमवहुतहोव
तोवडोदुःखकलेशकेदेनेवा
लाजेंधमोंफलअशुभप्रति
नहोवेहै॥ ६३॥

अथगुह्यलक्षणं

श्लोकं

अश्वत्थपत्रसदृशीयपुलं
लमुन्नतं॥पद्मकोशामिवं
श्रेसंगुह्यंचकुर्मुनीश्वरा
६४॥ अर्थ

जाकेगुह्यस्थपान॥गुह्याम
गी॥अश्वत्थ॥पीपलकेप

त्रकेसमानहेयघनेसोप्रतीतहो
याकिम्या॥कमलसपुव्यके
संपुठकेशद्दसोप्रतीतहोनेसें
॥स्त्रीकीम्यापुरुषहोकेशुन्नसू
चकगुह्यमार्गसेप्रतीतहै॥
जदिस्हहोचिन्हसोवीपरीत
गुह्यमार्गहोयतोउत्यमफ
लकोकदहीनहीदेहै॥कीतु॥
कलेशहीकोदेहै॥६३॥

अन्यसर्व्वांगलक्षणं

श्लोकं

श्रीरामीललाटकंस्त्रीराग्मस्कु
र्म्मीरतंशुभं॥गूढेमणीसुशु
भदौनितंबश्चगुरुशुभः॥६४॥

अर्थ

स्त्रीलोगकीजंघाहेमाललाट

जेहिकुर्मकछपकेपिस्टकेसम
नहोयतो॥ वडोअंत्रसफल है तो
ऊंकंठकेनीचे होतरफके॥ मांस
वडोउचुहोयतोअंत्रसफल है॥ रो
येके॥ स्तनहोमोटा ॥ उचु होने
सोंपुत्रादिकसंपूर्णसुखके है
नेवालाहै॥ जाहिस्त्रीके वकुनेह
रास्तन होयकेनीचेकेइयाते
स्तनकेउपरमोंरोमकेशहोय
तोस्त्रीकासतनादिकोंकासुख
नहीहोनेकालक्षणमोपूर्तीत
होयहै॥ ६८॥ अल्पनाभीलक्षण

श्लोक

विस्तीर्णामांसोपचितागंभीरा
विपुलाशुभा॥ नाभिःप्रहसिरा॥
यंतामध्यंत्रिवलिशोभनं॥ ६९॥

अर्थ

स्त्रीयोंके॥ नाभिके ऊपर ॥ चारोत
रफसो ऊंचा मांसहोय ॥ नाभीके
ऊपर त्रीवली ॥ पेटी बडा होय ॥ ना
भी बडो गंभीर गुप्त होय तो बडे
भ्रेस सुषलपति होय ॥ नाभी
मेदाहसिर॥ ॥ दूहिनावर्त ॥ न
मदूहिनेत्तसों धूमके पूजित होय॥
नाभीके॥ नीन रमा त्रीवली होय
तो॥ बडा सुषसें स्वर्ज्जसों संजुक्त
पुत्रादिकोंके साथ बडा भ्रेस सुष
भोगहोनेका चिन्ह है॥ ६५॥

स्लोक

कुरोशौ स्तनौ पीनौ घनावडवि
षमौ शुभौ॥ मृदु ग्रीवा कंबुसमा
कुरोमा रसिके शुभा॥ ६६॥ ॥ अर्थ॥
जा प्यारी के स्तनमों रोमन हीहो
य॥ उ॥ बडे ऊंचे समान होय॥

मिलाजुडहोया॥पीनमोटाहोय
तोश्रेस्सत्नहोयहै॥कंठकोमू
लहोय॥कंवशंखकेसमानकं
ठसोउत्तमफलहोहै॥जाकेउर
सछातीकउपर॥मांसनहीहो
यतोश्रेस्फलकोहायकवडो
सुखभोगकोंकरवेवालोहोयहै
॥६६॥ = अथमुखवर्णनं॥

श्लोक

आरक्तावधरौश्रेष्ठौमांसलौवर्तुलौ
सुखंकुंदपुष्पसमादंताश्चाखिते
कोकिलासमा॥६७॥ = अर्थ
जाप्राणीका॥मुखकेनीचेकेउोस्
ठपरकेउोस्टबंधूयसमाना॥आर
लालवर्णहोनेसोश्रेस्टफलहै॥
ओस्टकेउपरमांसाधिकमोटा

इसलोके॥ वर्तुलाकार गोलमु
खहोनेसोऔरसफलसको देहै॥३॥
कुंकुमदाकेपुष्पकेसमानदे
तसुंदरऔरतवर्ण प्रतीतहोनेसों
यहोऔरनानाप्रकारकेभोगक
रेगा॥ दृतऔरहसुन्दरहोनेसोंजो
जनमोंयहोसुखदायकहोहै ३
जाकेबोलनेमोंऔरसवचनको
किलाकेस्वरकेसमानमधुरशु
द्धमुखमोंहोनेसोउत्यमसुखके
देनेवालोसोंमुखहोहै॥८॥ ॥

श्लोकं

हास्यिरम्य यन्तमशठतंसशब्दस्
याचरहे॥नासासमासमपुटारन्ध्रे
रां॥तुरूचिराशुभा॥ ९९॥

अर्थ

जाकेमुख॥दृसिरा॥वर्तहोय॥

ॐ

पउोप्रेमजुक्तकोमलाााते सके श
द्रके ॥ समान ॥ मयकेयोलनहै
नैसौं वडोअस्तसुख संजोगके
दायक ॥ यहसुखशोध्भौं प्रतीत
तहोहै ॥ नासिका ॥ जाके समान
हौ संपुट ॥ वरवर प्रतीतहै ॥ उ
नासिकामध्ये ॥ अनुरा ॥ ला
वरौ ॥ नासिका ॥ द्रूहानेसौ ॥ व
डोअस्तफलदेनेवालो सिंधाक
रावरीवासी होयहै ॥ टका ॥

श्लोक

नीलोत्पलनिभंयस्यनासाग्र
श्रेनलंवको ॥ नप्रन्युयोलद्दु
भोरक्षवीचात्पललाटका ॥ टका ॥

अर्थ

जाके ॥ नील ॥ श्याम ॥ कमलके
समन ॥ नेत्रहुयहोय ॥ नासि:

केजउसेलग्न॥लागिके॥चल
ठाय॥ह्वैकरी॥केसामनेमों॥
वऊतलेयायमानतहीजाहिते
यतोवउऊकूरनेवमोंकृरकल
फलदेयनेमो॥जोसताहै॥
कीगा॥कोचितलालवरी॥तानेय
नकामंथ्येहोनेसो॥उस्यमप
सकेदेहै॥उवालयंद्रमा॥हो
तीयाकेचंद्रकेसमन॥कुकु
शहोय॥घऊतवउ॥मृतानहो
होयाकिंचितपितृषकेसमान
होया॥भृकुटी॥ललाटकेउपर
मों॥सुन्दरप्रतीतहोनेसों॥वऊ
कूरफलकेदेनेवालाहै॥हग॥

श्लोकं

शुभमथैदुसंस्यान्मत्पुंगस्य
हलोमशं॥कुमामलंकरोयगं
समंमूदुसमाहितः॥७॥

जाकेकरांगुष्ट ॥ बालचंद्र ॥ हो
तियाकेचंद्रमाकेसमानहोय ॥
वऊउचकरांगुष्टहोय ॥ रोम
नहीहोय ॥ मलस्यामता नहीं
होयमृदुकोमलहोय ॥ तोस्त्री
चिन्हकरांगुष्टसमनहोजेस्त्र
यजेऊस्सफलकोदेनेवलाक
रीहोयहै ॥७०॥ श्लोकं
स्निग्धानीलाश्चमृदवोमूर्द्
जाःकुंचितैकजा ॥ स्त्रीणांस
मंशिरःश्रेसंपादेपार्ष्णितलेत
न्या ॥७१॥ अर्थ
जेस्त्रीके ॥ केशस्निग्धाना
मा ॥ चऊंसुन्दर ॥ कोमलाचि
क्कनहोय ॥ नीलास्याम ॥ भौं
रवरीकेसमानहोय ॥ कि

न्वितन्योरा ॥ कुटिलरेखा ॥ ऊप
रमोकेशहोयतोवडोभ्रैसरपफल
देहै ॥ विशेषते ॥ स्त्रीयोके ॥
शिरवराबरहोना भ्रेस्टहै ॥ चर
शाष्टुय ॥ हस्तहृदय ॥ समानदे
शावरहोनेसो स्त्रीयोकेउत्पम
फलयेहै ॥ ७१ ॥

अत्य हस्तपद नानाचिन्हदर्शनं

श्लोकं

वाजिकुंजरश्रीवत्सयुपेषुय
वतोमरैः ॥ ध्वजचामरमाला
त्रिशैलकुंडलवेदिभिः ॥ ७२ ॥

अर्थ

जाप्तारी ॥ को ॥ हस्तमध्ये ॥ कि
न्या ॥ चरणमध्ये ॥ स्त्री को ॥ वा
मभो ॥ पुरुषके ॥ दाहिनेमो ॥
एहीचिन्हकेरेषा होयतोभ्रैस

फलहै॥ध्वजाकेचिन्ह॥हस्ती
केचिन्ह॥कल्पवृक्षकेचिन्ह
जज्ञकुंडकेसम्मनो॥यज्ञयंत्र
केचिन्ह॥जलकेचिन्ह॥तोमर
केचिन्ह॥ध्वजाकेचिन्ह॥चा
मरकेचिन्ह॥मालाकेचिन्ह॥प
र्वतकेचिन्ह॥कुंडलकेचिन्ह
यज्ञादिकेचिन्ह॥रेखचिन्ह
जोदृशोपूर्ण॥लक्षण॥होयतोश्री
लक्ष्मीनारायणके लक्षणस्व
लक्षण॥सोबडोचक्रवर्त्ती राजा
को॥लक्षणपद्मोचिन्हहोहै॥
जोदृष्टकहुंहोमतीतहोयतोब
डोअस्फलकेदेनेवाला॥इत
नेचिन्हहै॥७३॥ श्लोकं
शंखातपत्रध्वजैश्चमत्स्यस्वस्ति
कसदृश्यैः॥लक्षणारंकुशाद्यै

अस्ति यः स्युः राजवल्लभाः॥७३

अर्थ

जाके हस्त चरणमो॥ शंख॥ छत्र

कमलपुष्प॥ मत्स्य॥ मछरी॥

पताका॥ उत्यमरत्य॥ अंकुश॥

इतने लछन॥ जहि होय ता पुरुष

राजा होहै॥ स्त्री रानी होहै॥ वामे

हस्त चरण स्त्री के देषनो॥ दहि

ने हस्त चरण पुरुष को देषनो

इहीं सब लछन सो संसार मो सु

ष होने का॥ सुचक लछण॥ वि

पिव लाघ्रण॥ याके हस्त चर

णमो लिषहै॥७३॥

श्लोक

निगूढमणिबंधौ च पद्मगर्भो

पमौ करौ॥ नातिम्रुनो न्नत करो॥

भवेत् करतलं शुभं॥७४॥

अर्थ

जाकेहस्तचररराकेमोटाहोयप॥
मीरायंधनामाग्यहुचा॥मोटाहे
या॥मांससेपुररहाहोय॥कम
लकेपुष्पकासमानअतिकोमल
कमलदलकेतीनरमोजैसपद्म
नीतहो॥वैसाहस्तहोनेसोंवडे
उच्चनहीहोय॥अत्यंतनीचाव
तीहो॥प्रा॥समनहस्तहोनोस्वो
स्तीयोंकावडोभाग्यकेहैयाव
नोवासो॥यहचिन्हसोंपुत्रीन
लेयेहे॥एहिरेखासोराज्यत्रोर
केप्राप्तहोहै॥७४॥ श्लोक
रेखानिवतांत्यूर्ध्वपर्वांकुर्य्यात
सत्रोगिनोंस्त्रियं॥रेखायुग्मा
त्यंतलग्नासुखभोगप्रदाशुभा
७५॥ अर्थ
जास्त्रीकेहस्तके॥रेखामिलके

होरेषा ॥ संजुक्त पृतीत होवे ॥
जदि॥ अंगुस्ट ॥ तर्जनी ॥ दोंकों
मध्यस्थान सो जो होरेषा ॥ वड
वडोपुस्ट होके चला हो सोई रेषा।
जो रिजडतलो मिल रहा हो यत्तोस्त्री
कावडो भाग्य हो है विपवान हो
होहै ॥ आपने पतिके संग मोन।
नाप्रकार का भोग सुख करेगी
होरेषा एकत्र मिल रहने सो सुष
भोगको सदा पारा भीकों होवे
हो॥७५॥ श्लोक॥
रेषायावरीवधोत्यागतामध्ये
ग्लीकरे॥ अता पारीतलेयाव
श्रोर्थे पाहतले स्त्रिता ॥७६॥
अर्थ
॥ पारा भीके ॥ भारीवर्षनाम
ऊचेको॥ जडसे आरंभ करके

उपरमोचलकेगर्मध्यमाऽंगु
लीकेमूलेजउनलीमिलयके प्रती
जोरेखाहै॥वा॥हीरेखाकोग्रास्त्र
मुद्रिकशास्त्रमों॥उर्ध्वरेखानाम
कहेहै॥सोईउर्ध्वरेखा॥ हस्त
होयकीवाचरणमोहोयतो उ
र्ध्वरेखाहोनेसोंनानाप्रकारके
सुखभोगहोनेकासूचन उर्ध्व
रेखासोंप्रतीतहोहै॥७६॥

श्लोकं

स्त्रीणांपुंसांतथाधासाम्यात्तु
राज्यायचसुरायचपुत्रपौ
त्रादिसंपदां॥ऊर्ध्वरेखासुख
दा॥७७॥ अर्थ
उर्ध्वरेखाहस्तमोहोय॥तोसंप
राफलहै॥जाहिचरणमोहै
संपूर्णराज्यसुखभोगकि

वापुत्रपौत्रादिकसोंसंजुक्त होके
इयहलोकमोंवडेसुखीहोकेर
हेगा ३ यैरेषजुक्तप्राणीश्रव
श्यसुखीहोनेकाचिन्हहोउ ॥

श्लोक

कनिस्टामूलरेषातुकुर्य्याच्चैव
शतंसुखंश्रनामिकमध्यमा
न्यामंतरालमूलास्पती १ ॥

श्रर्थ

जोप्राणीके ॥ कनिस्टिका ॥ छो
टीश्रंगुलीकेमूल ॥ जडतल ॥ से
कोईछोटीरेषाप्रतीतहोयतो ॥
एकशत ॥ एकसयवर्षको
श्रायुजीवनेकारेषासोप्रती
तहै ॥ जोइश्रनामिका ॥ ३ ॥
मध्यमाश्रंगुलीकेमध्यस्था
नो ॥ एकरेषाकोई ॥ उपरसो

चलके॥ नीचेकेतरफमों॥
गिरायेतो३हरेयास्त्रीकेहस्त
मोंरहनेसो॥ याजिवृतास्यतीरं
नास्यवतीहोनेकालसराहै
जोदपुरुषकाहोयतोवहपुरु
षधर्मशीलसत्यवादीसुखी
नीहोगासोकमोप्रसिद्धहोवे
नानाप्रकारकेसुखभोगव
रेगा॥१८॥ श्लोक
उत्तानाउन्नतापुंसांकुर्य्यान्नरेखाचया
गुरुसमलगप्रलयःपुंसांस्मृ
ताप्रमदापरिकीर्तिता॥१९॥

अर्थ

अंगुष्ठकेनीचेकेरेखामोज
दिछोटीहोवेनभिन्नप्रतीतहो
यतोअल्पत्वाराआयुप्रतीत
होहैजोदअंगुष्ठकेमूलतले

पूरीरेखाहोयतोपूरीआयुप्र
तीतहोहै।।अंगुस्टकेमूलकेनी
चेमोंजीतनीरेखाहै।।सोसन्न
मोसमोता।।लंबोलंबरेखाप
ड़ीहोनेयकारेखाहै छोटेछोटे
खापतलेपतलेरेखासोकन्या
होनेकाचिन्हहैयनाहै।।७९।।

श्लोक

अंस्पायुरेखज्ञछिन्नाहीहै
छिन्नामहायुषेशुजनतुलस्वरो
प्रीत्त्वायशुजनमन्यपा।।८०।।

अर्थ

अंगुस्टकेनीचेकेरेखासन्न
मोंहेयना।।त्योरआयुवाल
रूकेहोनेमोछोटारेखामोंछि
न्नभिन्नमालुमहोगा।।जहंव
डेरेखाहेकैछिन्नहोयतोव

ऽस्वरयुजीवनेकापृतीतहो है
श्रीसमनेशुक्लस्वरास्थीयोच
श्री हस्तमोहोनेसोऊसफल
जोदहेहचिह्ननहीहोयतोस
हफलजोकहाहेसोनहीहोय
जोस्य है ऋायुरपूकारफल
चतुचिह्नसोहोगम ॥८०॥
इतिशुक्लस्वरा ॥ अथकृष्ण
शुक्लस्वराचाहा ॥ सोव
कनिस्टिकानामिकाथ
स्थानस्पृशतेमहीगा ॥ अगुस
यागतातीत्यतर्जनीकुसटा
चसा ॥८१॥ अंत
जाल्हीके ॥ कनिस्टानामच
राके ॥ छोटीगा अंगुलीगा

छोटीअंगुलीकेपासकोअ
नामिकाअंगुलीताकेहो है
जसिप्रीतिचीसेउद्याउचे।।
चलनेसोप्रतीतहोकिंचा।।
अंगुसावडोअंगुलीकेउप
रमोचटुकेतर्जनीअंगुली
होयतोवहस्त्रीकुलटापर
पुरुषकासंगमोभोगकरणे
वालीस्त्रैरणीहोनेकालसरा
मोप्रतीतहोहै।।८१।।।।। श्लोकं।।
ऊर्ध्वहृस्याथीपिंडिकास्याजंघे
चातिशिरालके।।रोमशोचा
तिमांसेचकुंभाकारंतयोहरं।।
।।८२।। अर्थ
जोनारीकेजंघामो उपरके
तरफसूबडोमोटाप्रतीतहोय

जे घोडेमोनानाडोमांशिराणाशोरके
प्रतीतहोयः॥जे घोडेमोवक्रुतर
महोयतो॥जे घोडेमोंमास्सावे
नप्रतीतहोयः॥कुजेघोडेके
समानाःजावके उड्रपेदहोयते
ऱ्हतनोलस्सरा॥स्त्रीकोकष्ट
मदेनेवाला होय॥ २१॥

श्लोक

वामावर्त निम्नमल्पंदुःखित
नोचगुह्यके॥गूह्याहजुं
येनिवार्णैघोयोचकुलस्य
यः॥ २३॥ अर्थ

जास्त्रीकोः॥वामावर्त॥नाभी
होयः॥वामवर्त गुह्यस्थल
होयः॥छोटा॥नाभीहोयः॥
छोटा गूवाकैषे होयः॥जो
निम्नगावडोः॥लंवायमान

होयतोयेसनहीहोनेकाचि
न्हहै॥२३॥ श्लोक॥
प्रफुल्लयाप्रचंडाश्वस्त्रियः
स्युनीत्रसंशयः॥केकरोपिं
गलेनेचैर्ष्याचलोलेक्षणा॥
सती॥२४॥ अर्थ॥
जोनारीकों॥वडोमोहोकपो
लागलगालापहोयेसोपाव
डेकलही॥दुस्टचाकप्रयाभी
होंगी॥जानारीकेनेत्रमो
हरिद्वावरीहोय॥मर्कारि॥
बिलीकेनेत्रकेसमाननेत्र
होय॥जांहनीचानेत्रहोय॥
जांहचेचलनेत्रहोय॥चप
लताऊंगवाली॥नारीवेवि
चारिणीहोयहै॥दुस्टवच

नकेकहनेवालोहोहै॥ २४॥

श्लोक

सितेकूपेगंडयोभ्रूसापूर्वं
व्यभिचारिणी॥ पुंसंविनी
ललाटेचेद्वरंहंतिचांगना
॥२५॥ अर्थ
जानारीके॥ कपोल॥ गाल
केउपरमो॥ भ्रूवा॥ मताकी
छातींपूर्नीतहोयतोवहव्य
भिचारीरांणांपरपुरुषसंग
सोजोगकरसोवासीहोहै
निश्चय॥ जानारीकेबडे
लंयमानललाटहोयतोअ
पनोस्वामीकेछोटेभ्रात॥
नामजोदेवरहो॥ ताकीदेवर

कौंमाररोवालीहो।नेकाचिन्ह
सोंप्रतीतहोवेहै॥२५॥

श्लोकं

उदरेश्वसरोनिपतिंहंतिदिप्रचो
र्ध्वयो॥यातुरोमोनरोस्त्रीस्या
शुभाचोर्ध्वरेखाहि॥२६॥ अर्थ॥
यानारीकेउदरमोरस्यामताहोय॥
बडोउदरहोय तोआपमेश्वसुरके
माररोवालीहोवेहै॥जोउदर
ऊर्ध्वउपरकेचरुहोयतो॥पति
केमारनेवालीहोवेहै॥जोनारी
कोउपरउदरके॥मोछकेउपर
वाररोमहोयतोवडोअशुभहै॥
माताघंशा॥पितावंपा॥[illegible]
अस्मुरवंशत्रयकेदुःखदेनेवाली
होहै॥२६॥ श्लोकं
स्तनोरस्सरोमावप्शुभौकरौ चवि
षमौतत्या॥करारा॥विषमाहं

नाःकलेशाय चत्र यत्र चा ।२

भाषा

जो नारी के स्तन के ऊपर मो रोम
होय ।। तो वडो अशुभ है ।। जो ना
री को ।। कंठ हृदय विषम और छो
टे होय ।। जा दिहृत वडो वडो होय
समान वरावर नहीं होय तो ।। व
उ दुःख के देने को अशुभ लक्ष
ण है ।। दुःख हृके वडो भय त्रास
देने वाली होवे है ।। २७ ।। स्कं
चौर्याय कुस्समांसम्व हृोघा
रुत्तु मूत चा ।। कव्या हूपे हस्तौ
अवृक्कक्काहिर्स्यंनि भैः २८ ।।

भाषा

जो नारी के हृस्केनी चे मो मास
उठा उठा उ चा पूतीत हो नेसो प
चौरकर्म मो चतुर होगी ।। ज

इतव ऊंचउ ॥ किम्या ॥ हुतहोताल
वायमान होनेसों अपनेस्वामीको
मृत्युकों हृगी ॥ पांत्ररहित विधवा
होनेकाल हुराम्रों प्रतीतहोहै ॥
जैसिकाकके समानकिम्याचक्र
केसमान उघृकेसमानहस्त
कर ॥ प्रतीतसों ॥ पति वितनताके
लहराम्रस्चनहोहै ॥ ८८ ॥

श्लोकं

शिरालैर्विषमैः शुष्कैर्वित्तहीन।
त्रवैति हि ॥ दुःखिता पापनिन्ना।
चउर्धनाउ चउअधिकेना ॥ ८९ ॥

अर्थ

जोनारीकेवकुतहस्तापहाहिक
अंगप्रत्यंगमोषायऊवऊंगामोर।
मोरा ॥ नाऊंप्रतीतहोनेसों ॥ धन
हीनहूरि द्वीपापीनीदुःखीनी।
कलहीनाव्यभिचारीराहोनेक।

चिन्हमोंप्रतीतसाहै ॥२८॥

श्लोक

समुन्नतोतरोस्सीयाकलहैरह
केशिनीनारक्षीयुदोयाविरुपाख
पक्षाकरोउग्ररगात्सततःसा ॥

अर्थ

ज्ञानारीकेउपरकेउरस्थलऊंमोट
हसहोयकेउंचाहोयाकेशमेंगाढ
ज्ञात्यर मृदुराकेशकेवाल
प्रतीतहोयतोगासोईनारीकल
हीहोहै॥कलहमोंप्रतीपकरहै
नेवझाकेअर्थकरमालुमहोय
हैसोकलहीहोनेकालस्सरा
है॥यहसंपूर्णाअसुन्नलस्स
रानारीकेअंगकानिरुपनकि
याहै॥ ॥इतिगारुडेस्त्रीलक्षणं

श्लोक

ञ्जितस्याहिसमाक्रित्यमध्यमा
यामुपागता॥ अस्यवर्षायुषे
कुर्य्यात्सायुरेखातुमानवा॥२१

भाषा

जाघ्रारीकेहस्तमध्यमाकनि
ष्टिकाअंगुलीसेजोआरेखाहो
कैामध्यमाअंगुलिकेमूलप
र्यतरेखाएकसौमोलाप्रमा
नेसोसासाठिह०॥ वर्षकेआ
युजीसनेकारेखासूचनकरेहै
यामेनहीसंशयजाननाजोस्त्र

है॥२१॥ श्लोकं

यस्यास्तुकुंचिताःकेशाःमुखंच
परिमंडलं॥नाभिश्चदक्षिणाव
र्त्ताःसाकन्याकुलनं॥दिनी

॥२२॥ भाषा

जानारीकेमस्तककेशकुंचित

किंचित्तटेढाहोकेमुखकेऊप
मोधुमकेफलजायतो ३१
महा॥यदिदक्षिणावर्त्तनाभि
मंडलहोयतोवेवहकन्याके
नोंकुसमावकेवढावनेवाली
वीहोगी॥८२॥ ——— श्लो
याचकोचनवर्ण्णारक्तह
करोरुह ॥ सह स्रंहवयिना
शोत्वथ सायपतिव्रता ॥
——— अर्थ ———
जानुनीका॥शरीर॥केचन
र्णाकेसमान॥वर्ण्णहोय॥
॥ ओहस्त॥चरण॥मध्यारक्त
वर्ण्णलालकमलकेसमान
अरु॥वर्ण्णजासमानहोने
॥वहस्त्री॥हजारहोंस्त्रीके
ध्यवडोधर्म्मशीलवडोसुर

पुत्रपौत्रादिकोसोंसंपन्नहोकेऋ
पनेपतिकेसेवासोंनानाप्रका
रकेसुखभोगकरेगी॥२७॥

श्लोकं

रक्तकेशा च याकन्याग्रंडसा
सीतुयाभवेत्॥भर्तारंमृयते
तस्याःनियतंदुःखभागिनी॥

॥२८॥ अर्थ॥

जोनारीकेआरक्तअरुरूखरी
केशकरोमहोयऔरमंडलाको
सोनेवालीकेनयनकेसम
नहो उचाली स्त्रीकेस्वामी
अवश्यमरे हैं॥ विधवाहोके
आजन्मभररापर्जतनानाप्र
कारकादुःखकेभोगकरेगी

॥२८॥ श्लोकं

पूर्णचंद्रमुखीकन्यवालसू

नसमप्रभाविशालनेचावि
वेस्त्रीसाकन्यालग्नतेसुमं
॥ ल्या॥ अर्थ
जान्करीकेमुषसुन्दरपूर्ण
वाके चन्द्रमाकेसदृसगो
लमूषहोय॥ प्रातकाल के
सूर्जकेसमानशरीरासुंद
रहोया॥ वडोसुन्दरविशाल
लंवायमाननेत्रहोया॥ होठो
स्तरक्तवर्णविंवकेसमान
लालजुस्तहानेसोवडासुष
भोगकों करणवालीरानी
होके नानाप्रकारकेसंपूर्ण
सुषविलबकेभोगकरेसी
॥ ल्या॥ श्लोकं

रेखाभिर्यऊर्ध्वाभिर्करेलशंवस्यान्नि
र्धनहीनता ॥ रक्ताभिः सुखमा।
प्नोतिकृष्णाभिर्करेलशंतांव
जेत् ॥ ९५ ॥ अर्थ
जा प्यारी के हस्तके रेखा वऊंतता
छोटा छोटा होय या तो दुःखि होने का।
चिन्ह है ॥ यदि वऊंतन्यार ही कु
रूप होय तो धनहीनता दारिद्री
होके चिन्ह है ॥ हस्तके रेखा कु
रुराता रक्तवर्ण होने सो सुखी है
है ॥ हस्तके रेखा मो ॥ स्यामता
केला वर्ण होने सो दुःख कप्रा
प्ति होने का चिन्ह मो प्रतीत होहै

॥ ९६ ॥ श्लोकं

अंकुशं कुंडलं चक्रं यस्याः पाणि
तले भवेत् ॥ पुत्रं प्रसूयते नारी न
रेन्द्रं लभते पतिं ॥ ९७ ॥ अर्थ

जानारिके हस्तमध्ये अंकुसके
चिन्ह होवे।। कुंडलके चिन्ह हो
चक्रका चिन्ह होय तो बडी भा
ग्यवाली स्त्री जानिये पुत्रको उत्
पन्न करके।। राजा के संग विवा
ह होके।। बडी रानी होके सुखी हो
वेगी।। ८७।। ——— श्लोक ।।
यस्यास्तु रोमशौ पार्श्वौ रोमशौ
च पयोधरौ।। उन्नतौ चाध
रोष्ठौ च क्षिप्रं मारयते पतिं ।।
८८ ——— अर्थ ———
जानारीके दोनों बगल में पेटके
दोनों पाझरे मो बहुत रोम होय।।
और दोनों पयोधरके उपर मो
रोम होय।। और नीचे के उस्ठ
में हो उन्नत होय तो वा
चिन्ह सो विधवा स्त्री होवे है।।
८८ ——— श्लोक ———

यस्याःपाणितलेरेखाप्राकारं
स्यात्तेयदिहीनकुलेपिसंजाता।
राज्ञीत्वमुपगच्छति॥२९॥

अर्थ

जोनारीकेहस्तमध्यप्राकार
नामकोटाहोयहस्तकाचिन्ह
होयतोनीचकुलमोजन्म
लेपरंतुरानीहोकेबडेसुखभो
गकोंकरेगी॥२९॥ श्लोक

र्ध्वितकपिलायस्याःरोमराजी
निरंतरं॥अपिराजकुलेयाता
सित्वमुपगच्छति॥३०॥

अर्थ

जोनारीकाकेशकेउपरमो
रोमकेअग्रभागमोजहोकि
पिलवर्णहरिवर्णप्रतीत
होयसंपूर्णरोमकेअग्रभाग॥

पीतवर्णा होय तो ॥ व॰ हस्ती राज
कुलमे यद्यपि जन्म है ॥ पर
तु हासी होने का चिन्ह सो प्रती
त होवे है ॥ १०॥ श्लोकं
मस्याङ्गुनाभिकांगुष्टौ प्रिथि
व्यां नैव तिष्टतः ॥ पतिं मारय
ते सापं स्वतंत्रेनैव वर्तते ॥ १०१

अर्थ

ज्ञा नारी के चरणा के ॥ अनामिक
अंगुली ॥ अंगुष्ट अंगुली ॥ ये
पृथिवी सों ऊंचे होके प्रतीत हो
ने सों पति के मारके विधवा हो
के ॥ स्वतंत्र व्यभिचारिणी हो
के लोक मो दुःख पाई के रहेगी
॥ १०१ ॥ श्लोकं
यस्य गमनमात्रेण ॥ भूमिकं
पो प्रजायते ॥ पतिं मारयते सी
घ्रं स्वेछाचारेण वर्तते ॥ १०२

अर्थ

जोनारीकेपल्यमेंचलनेसोंव
डेघंमघंमशब्दहोमेंपूती
नकंपितपृथ्वीमासमहोने
सोवाहस्तीअपनेपतिकेमा
रिकेवियवाहोकेव्यभिचारि
णीपरपुरुषकेसंभोगक
रनेवालीस्वैरणीस्त्रीहयेगी

॥१०२॥ श्लोकं

चक्षुस्नेहेनसौभाग्यंदंतस्नेहे
नभोजनंनानचक्षुस्नेहेनपर्य्यं
कंपदस्नेहेनवाहनं॥१०३॥

अर्थ

जोस्त्रीकेनेत्रकेशोभाव
जतत्र्र्छहेतोवहमउभाग्य
वानहोगीजाके दंतमेसुंदरता
हैवाकेभोजनवडोदिव्यषट्
रस अन्नप्राप्तिहोगाशरीरके

सर्वांगलयथा।।चर्म्मेयडेसु
न्दरकोमलप्रतीतहोनेसेगा
लंगादिव्यशेज्या।।दिव्यमृ
मनकोप्राप्तहोगा।।चरणाह
यकेसुन्दरपदचरणाहोनेसे
नानाप्रकारकेवाहनरत्नपा
लकी।।घोडा।।हस्ती।।दिव्य
हानऊसवारीप्राप्तहोंहो।।१०

श्लोकं

स्निग्धोन्नतौताम्रनखौना
र्य्याऽग्रचरणौशुभौ।।मत्स्य
कुशाजचिन्हौचचक्रलांग
लक्षितौ।।१०४।। अर्थ
नारीकेचरणाहो।।यडाको
लहोय।।ऊचे ऊचेमध्यहो
ताम्रकेसमानरक्तवर्णन
होय।।तोयडाऊेस्वसफलहों

॥ जो इ चरणमो मत्स्यामछ
छीकेचिन्हहोय॥अंकुशके
चिन्हहोय॥कमलकेचिन्ह
होय॥चक्रकेचिन्हहोय॥
लांगल॥हलकाचिन्हहोय॥
जो इस्तनोचिन्हहोयतोवडे
भाग्यकेस्त्रीहै॥जोइस्तनो
चिन्हहोयतोवडेभाग्यके
स्त्रीहै॥जोइस्तनोचिन्हमे
कोईएकहचिन्हहोनेसोव
डेभाग्यमानीस्त्रीलोकमोसु
खीहोके आनन्दमोसंपूर्णभो
गकरतीसुखीरहेगी॥६८॥

श्लोक

रक्तौदिनौषस्रुतलोप्रसस्तौ
चरणाख्रियाः शुभजंघेविलो
ष्टेचउरूहस्तिकरोपमौ॥६८॥

अर्थ

जोनारिकेचरणहोमोलचूंदहा
चन्मपसेनानानहीहोयवडो
मलप्रतीतहोयजोउत्यमफल
केप्राप्तहोवेगीसुंदरजंघमे
रोमरहितनाहस्तीकेसूंढके
दृशसुंदरजंघमोवडोउत्रसफल
केप्राप्तहोकेस्त्रीवडोसपतीत
कमोसपूर्णसुख्भोगकरेगी

१०५ श्लोक

नोन्निप्रसस्तागंभीरादक्षिणा
वर्तिकाशुभा गम्भरोमविवर्जि
नार्य्या:न न नौ रोमवर्जि
तौ॥१०६॥ अर्थ

जोनारीकोनाभीजुरसउत्य
गंभीरानीचाहोयादक्षिनाव
र्त घूमानाजीकेशिराप्रतीत
यारोमकेशसोरहितहोकाा
वलीतानापेरीानाभीके

उपरमोहोनेसोअक्षसफलहोवेहै
तर्‌या॥छातीमो॥स्तनापयोध
रकेउपरमोरोमनहीरहनेसोव
अक्षसफलकहेनेवासालसरा
होवेहै॥स्थिहीचिन्हरहनेसोस्त्री
केवअक्षसफलकेभोगप्राप्त
होनेकालसरा॥है॥१०६॥

श्लोक

स्त्रीसा गुलीनास्तनयोपादावृत्तौ
...रांचितौकूर्मोन्नतौगूढगुल्फौ
...स्वपाश्लीनःपतःस्मृतौ॥१०७॥

अर्थ

जोस्त्रीकेचरणकेअंगुलीसं
पूर्णमिलाहोय॥छिद्रनहीप्राप्ती
नाहोय॥चरणकेनखतामृवर्ण
होय॥चरणकेउपरमोउंचाप्राप्त
नाहोके॥नदीना॥सुन्दर॥सुन्दर॥

नाडीप्रतीतहोयाकर्मकछु
केपदसेकेसमानचरणकेउ
परमोटाकेशप्रतीतहोयापार
एडीचरणकेउपरहोयाच
रणकेएडीकेउपरमोटाहेतत
फकागुल्फउचामांसवडोहु
गंभीरप्रतीतहोनेसोनाडीहै
पूर्णचरणकेचिन्हवडेमह
राजन्यपतिकेचरणमेंचि
होकेराज्यसेछुटेजोगवि
वकेप्राप्तिकरणवासीचर
चिन्हसेप्रतीतहोहे।१०७।

श्लोक

सूर्य्यकारोधिरुसौचवकौ
रालांगुलीकयायसद्दृशो
दोहरिद्वाराणप्रकीर्त्तितो।१०।

अर्थ

जापुरीीकेचररापजेसूर्यकेस
मानहोयादेपनेमोंबिरूपरुष
रमालुमहोयावाकेतीरछीकि
चितधूमाचरराहोयाविरल
पन्यकर्मकुसीसंगमेरहनेसों
कषायजरूमहींकेसमानचर
रातलेप्रतीतहोनेसोाएतनो
चिन्हहोनेसोास्त्रीदुःखीज
नोंकेचररामोंक्रमसंसूचक
चररणचिन्हसोंप्रतीतहोहै।१०२॥

श्लोक

स्त्रीराावर्त्तचालितेर्मुक्तैस्तुन
ातिःस्मृतः॥स्थूलग्रंन्थियुते
लिंगेरक्तैःपुत्राद्विसंजुतः॥१०२॥

अर्थ

ापुरीीकोपेसचकरराकेसम
मो॥मुद्वस्केवरावराधाराहो
कोदाहिनेतरफमोंजाइकेपरे

तो॥ इहिनावर्तमत्तक्रूपडनेसो
राजाहोकेराज्यभोगकेकर्ता
होवेहाजइहिसिंगमोहाहोके॥
सिंगकेउपरमोगिरहहोय॥
गृहिपर्वपनइदानहीहोय॥सिं
गकेउपरमोंरक्कबरी॥सालबरी
प्रतीतहोनेसो॥वहुतपुत्रपौत्र
हिकसोंसंपन्नहोनेकेचिन्हहै
॥१०२॥ श्लोक
पुष्यगंधपझतेशृंकेत्तवेदूजा
सुधार्मिकः॥मधुगंधपझतेवी
र्जाधनवान्सुषकृन्नरः॥
१०१॥ अर्थ
जाप्राणीकेवीर्जमोंउत्यमप
चकेसुगंधकेसमानउत्यम
सुगंधवीर्जमोसहहतमधुके

समानसुगंधहोनेसोधनीहो
कोलोकमोवडेसुखीधनपा
त्र होके लोकमोविख्यातसुज
शवालाहोकेपृथ्वीपरहेगा॥११०॥

श्लोकं

पुत्राःशुक्रेपुष्पगंधेतन्नशुक्रे
चकन्यका॥महान्नोमीमांस
गंधेयद्वास्यात्मृगंधिनी

॥१११॥ अर्थ

जोपृथ्वीकेवीर्ज्जमोउत्यमपु
ष्पकेसमानसुगंधप्रतीतहोने
सोपुत्रपौत्रादिकोंकउत्पन्न
करेहै॥जोउत्यमपुष्पका
गंध्यनहीहै॥मन्दगन्धहोने
सोंकन्याकेउत्पतिकरेगा
जोवीर्ज्जमों॥मांसकागंध
होयतोवडेसुखीभोगीहोगा

जोदेहीजिमो मदिराकेसमान
गंधहोयतौज्ञीवउसुखीभोगी
भाग्यमानलोकमोरहेगा

श्लोकं

सारगंधेहरिद्रूःश्यान्नदीर्घवपुः
शी घ्रमैथुनेाासमरस्फाग्रजन्मो
गात्यानिमवस्रीधनोक्षिता:
११२ अर्थ
जाप्राणीकेवीर्जमोाास्वरगं
धहोवेतोहरिद्रीहोनेकाचिन्ह
हैाजाकेमैथुनकेसमेभोगा
करतउवाजलदीवीर्जपात
होवेतोादीर्घजीवीहोनेकाचि
न्हहैाजाकोाछातीमोसमा
नवराबारहोयाउंचाहोवेतो
धनवान्होहैाजाकेछाती
मोनीचाबालप्रतीतहोवेतो
निर्धनहोनेकालसरासोए

तहोवेहै॥१२२॥ श्लोक॥
इंद्रमाद्रिकशास्त्रेविद्याराज्ञपरि
कीर्तित॥ श्रुत्वापित्वापठित्वाच
शोकान्जहातिपंडितः॥१२३॥
अर्थ
श्रीमहादेवजी॥ श्रीपार्वतीज्
गवतीजीसोंकहतहैकीगहोगि
रिराजनंदिनीप्रिये॥ यहसामु
द्रिकशास्त्रतोश्रीविष्णुभगव
नजु॥ श्रीब्रह्माजसोंकहाहै॥
यहसामुद्रिकशास्त्रकों॥ जदिके
इप्राणीश्रवणाकरजाकेअर्थकें
धारणाकरोजाकोंपठापढ
वेता॥ यहसामुद्रिकशास्त्रके
ज्ञानतेसोप्राणीवुधिमान्
पंडितहोकेसंपूर्णासंसारकेम
ध्येनानाप्रकारकाचिंताकों

त्यागकरकेसुखीहोगासंपूर्ण
कामनाकेपावेगा॥९३॥
इतिश्रीतंत्रसारमेंहरगौरीसं
वादेसंपूर्णस्त्रीपुरुषवशीकर
णशुभाशुभकथनसमाप्तम्॥
रामाकाशाङ्कचन्द्राब्देमार्गशी
र्षेसितेदलेद्वादश्यांचरवौश्री
मद्युनाथेनमुद्रितम्॥
श्रीयुक्तशास्त्रीजदुनाथमिश्र
पंडितमात्यवर्यैरामुद्रां
कितंग्रन्थसारमिदंकेसम्वत्
१९४१मार्गशीर्षेशुक्लद्वादश्यां
रवौ॥श्रीराधावल्लभोविज
यतेतराम॥

वनाव ईकीत रकीवलि॰
जोजायकर। जावनीकेमा।ि। रलईवीघोटी।
म्बरा।कपरे

१	२	३	४	५
२२	२३	२४	२५	६
२१	३६	३७	२६	७
२०	३५	३८	२७	८
१९	३४	३९	२८	९
१८	३३	४०	२९	१०
१७	३२	३१	३०	११
१६	१५	१४	१३	१२

श्रीगणेशाय नमः अथ सगुन

यतीलिष्यते

येकपरे तौ सबविधिका जू

गनपति कहै करउ तुमरा जू

दुजे परे नीक नाहि है ई

कहै सार हासर्व सखो ई

तीजे काज विलंबन है ई

रामके बचन सत्य सब है ई

४ चारि परे होइ सब ही नी

चारि उव हूक है ये हव नी

५ पाच परै तौ मंगल जान उ

भरत बचन सत्य के मान उ

६ छठ परै तौ दुरी परे है

भीम कहै तुम जू मिनपे है

७ सात परै तौ विद्या पाव उ

नकुल कहै गनपति मन लावउ

८ आठैपरेतौनासैफा सा।
कहैनिषादकरजवनवा सा।
९ नवपरेतौनवनीपीपा वौ।
सहहवकहैगुरहिसिरना वौ।
१० जोहसपरेतौहोइहैभ्र छ।
कहैजुगहिघहरिकोइ छ।
११ येकादसकहैलाभहुजा रा।
कहैरोछपानिवारहिवा रा।
१२ द्वादसपरेतौकुसलझनं दा।
नारदवोलेजरघुचे दा।
१३ तेरहपरेतौबडफरफं हा।
रामहिसुमिरिकहैमगनं हा।
१४ चौदहपरेतौनिहचैमर ना।
घटसुतसाचकन्यायहवर ना।
१५ पंद्रहपरेविदसैजेहे उ

कहैसकपुनिघरपिहरिमैलेउ
सोरहपरैतुरतहिआवै ई
सुरगुरकहैजोनिहचैलावै ई
१७ सत्रहपरैमिलैकछुहा न्या
कहासहृस्थिरनारराना न्या
१८ अठारहपरैतौकचाका मा
कहैचित्रीघनजोरा मा
१९ बोनईसपरैतौआवैहस री
सुरपतिकहैनकरवगोहारी
२० बीसपरैतौसोहाले ऊ
बोलेभरतहामञ्जरिदे ऊ
२१ येकईसपरैतौनाहीहा नी
लछिमनकहैनिहचैकैजानी
२२ बाइसपरतेकपराले ऊ
बोलेभरतन्यहामञ्जरिदे ऊ

२३ तेईसपरै तौसुखकी घ री
कुसहरिवोसेज्ञानहघ री
२४ चौवीसपरत्तौनाहीत्र रा सा
सीताकहैहमहिनहिहो सा
२५ पाचीसपरैतौलोहजनिलउ
कहैपवनसुतवानीये उ
२६ छविसपरैतौसुनिलेवा ता
अंगदकहैवअंकुयिघा ता
२७ परैसतार्ईसमंगलमू ला
कपीपतिकहैछुटहुषमूला
२८ परैअठाईसवाहनम ने
कहैनीलसुनुनरकेज ने
२९ ओनतीसपरैसमरमहानी
कहैकागपतियहहमजा नी
३० तीसपरैजनिलघुउवा रा
कहैसरुडजोकरौविचा रा

यकतीसपरैतौएकैस्करराजा।
यिहीसकहैमुनिभरद्वा जा।
वतिसपरैतौजीव़कीहा नी।
कहैसूपनषघोघहू हा नी।
३३ तैतिसपरैतौहूंयवंदीछो रा।
कहैसुतीछुनय़हमतमा रा।
३४ चौतीसपरैतौचौपरना ल्या।
कहैठमासूतजेरघुना ला।
३५ पैतिसपरैयिहूसीहोम्मा वै।
गोरषकहूवउलाभदेवा वै।
३६ छतिसपरैतौजानेऊम्मा ई।
तुलसीसुषी सुहामाकिना ई।
३७ सैतीसपरैकपरजोम्भा ई।
वोरीमिलैकहपाटगोहरा ई।
३८ अरतिसपरैतौधनपतिहो ई।
कहैजागवासिगुरुलवसाव़ई।

३९ नौवोतीसपरैजोकछुं का
कहैद्विजरतनानिहसं का
४० चालिसपरैतोज्ञानं द्दा
कहैमहेहरीसुनुपियवंकन्या
चालिसअंकसगुनावलीतु
लसीकहीविचारिसगुनके
ऊपरहोइहै:सगौहरविपु
रारि ॥ चालीसपसेसोपायेक
मनः ॥ तेहिजानिकरउमलीन ॥
तीनिवारकहिहीनहम ॥
गुरमंगलरायीविहिन ॥ इतिश्री
सगुनावलीसंपूर्णम ॥

ऐहजंत्रसपनेमेवीजगीरज्ञात
होइतोलीषीकेकमरमेवांधैःतौ
नगीर

जः	पः	तः	मः
क्रः	वः	छीः	ङः
ऊः	नः	रः	नीः

तौसवकोपीसाचलसाहोरऐहजंत्र
कुमारीकन्याकेहाथ्यपलीषीघे
रकेपीआमदेइतोपीसयघ्छटजा
इसेआहीसलोहै

	१००	१००	१००	१००
	१००	१००	१००	१००
	१००	१००	१००	१००
	१००	१००	१००	१००

यं त ९

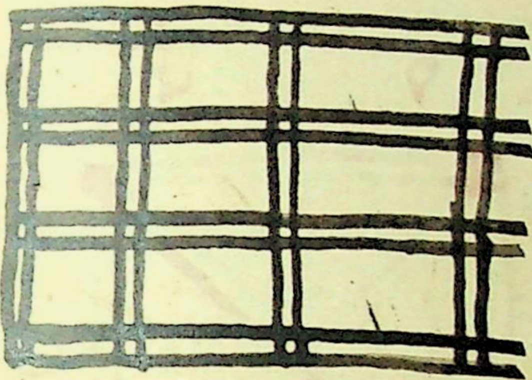
एह जंत्र गोरोचन सो लीखै जो
जपत्र पर इतवार के दीन हाथ
सो बाधै तो सब काम सीध होए

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

एह जंत्र गोरोचन सो भोजप
त्र पर लीखै तो भोगी जाए

१३	१८	२	१७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१२

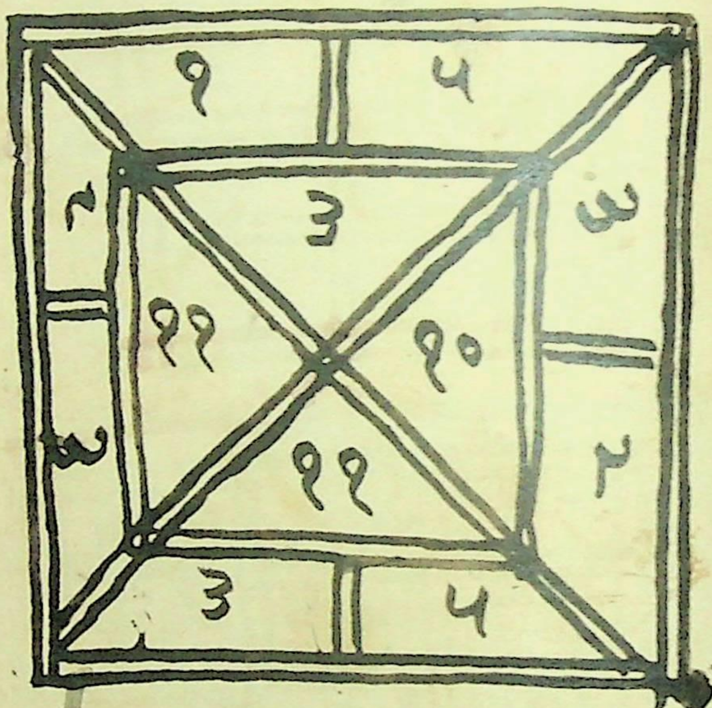
हेयंत्रभोजपत्रपरगोरोचन
सेलीखैरेतवारकेरोजतोकही
नमुनजगेहान्मेवापैअक्षरे



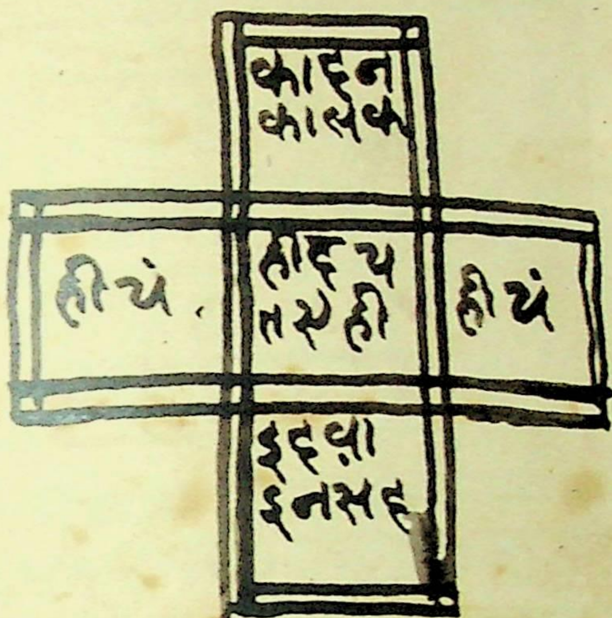
ममम	ररर	ललल
सनस	ममम	पपप
ममम	सममम	बबब
हहह	ववव	ऋऋऋ

प.प्र
२

एजंत्रकोरेअपरापरलीषैऔर
जीसकोभुतलगाहोएतीसकाना
मलीषेसोदेयाइकेआगमेआरदेइतो
भुतछोडेइअरमहोइ



एहजंत्रकुकुमासोलीषेतोपुरषवस
होइयोइसत्तीरीकमरमेवांधेतोपुत्रहोइ २



एहजंत्रगउसोचनक्षोजपत्रपर
लीषस्तवरकेराजछपमेवांधे
तोक्रुगनलगेकमी २



जंत्र ३

एहजंत्रवावसीरकागोलोचनसे
जपत्रपसीखेस्तयारकेरोजकम
रमेचा पैतोवावसीर जाइ

३४	९	२	७
६	३	३२	३७
४	३५	८	१
४	५	३६	३४

२

एहजंत्रगउलोचनसोजपत्रपर
लीखेकपानेक्रासनातरेगारहे
तौजगतवसहोरमुहइठारीराजीहे ४

वट	हय	हप	राम
हयः	उ	सो	साता
६६	रयःन	इवयः	मला

इतजंत्रइतवारकेलीषैगडुलोचन
सौतजरइक्कजार

३१	३४	२	७
६	३	४८	४०
४२	३२	२	१
४	५	३९	४२

श्रीगनेसजीसहाय: श्रीगंग
जीसहाय: श्रीदेवीजीसहाय
श्रीपोथीफोकासफसलीख
ते कैल्यासपरवतउपरेमा
हादेवजीतपस्याकरतेहतेत
हांसमासुरदेतसेवाक
रतहतेतबयेकसमैदेतसे
माहादेवजीप्रसंनभयेकीतु
सेयकेवरमागोतवदेतके
मनमेंऐसीइछाइकीमहादे
वकीजसमंकरूपरवतीको
लैजाउतबयेवरदानमांगोकी
गोसइजीजाधकेमसेहमअपरो

तेजसंमहोइजाइ महादेवजीने
येहीव्रतनहीलो तबदेवताके
मनमेंझौरपीझजाइ कीमहादे
वकोजाइ औरपारवतीको
लेंझाउ तबयेमनमाहचीत
नकरतचलेलो तबसंकर
ध्यानकेमनजानीकेजगेहो।
तबश्रीक्रीसनजीपहगयउ
तबश्रीक्रीसनमाहदेवजीको
कछजानीकेमोहनीरूपधरो।
औरमोहनीरूपधारीकेदेव।
ोछलकरीजरीकेभसमको
। तबश्रीक्रीसनजीकहीके।

तुम्हारो मनु छहरनै है। तव सं
करकही की महाराज हमरो
मनु नाछहरै तव श्रीकी स्वं
संकर पे गये उ जाय के कही
की गोसाइ जी आपु सुचीत
रह्यो है व ता के मैं भसम की ये
तव महादेव जी ने श्रीकी स्व
जी सो कही की चलै मैं तुम
को यक की भसम देय उ तव म
हादेव जी को श्री की स्वजी ने
ला की भसम देय उ तव सं
र जी ने कही की वहीं सरूप
ही देयउ । तव श्री की स्व

कोहिसरूपहैक्यउ तबमहे
हैलज़ीकेसाहसरवो तबश्री
जयसतजग्रेउ तबसंकर
कोपजयेउग तबकमहैव
कोसरपहीवो कीतुमकम
समहोउ तबकमजरीगयेउ
तबपरवतीअपनेमबमेर
बेवो तबपारवतीनेकहीके
जोसांइजीप्रीनीतोनीरवाज
नइ तबसंकरजीनेकहीकी
तुमजूनकाहानराखेवोनव
परवतीकहीकीगोसइजी जो
उकुमपवोतैवीजपइहकरो

तबसंकरनेपरबतीकोउप
देसहै ३॥ तबपरबतीनेअपने
मुखसेसोबीजपेहकीये तब
महादेवकोयातावे। तबमहा
देवनेअसीरबादीदीयो तबम
हादेवसजीवनमन्त्रउपदेसनके
तबसंकरनेकहीकीतुमजा
प्रीथ्वीकुंजीसे तबमहादेव
करजीसोहथजोरीकेकहे
कीगोसइजी सकलप्रीथ्वी
कोतेजमोसेजीतोनहीजइ
तबमहादेवजीनेकहीकीप्री
थीमेतुमअवतरधरो रज
सुनेसेनकेप्रपंनकेओतार

रूऔरूराजासुरसैनकीरानीरती
यंतीहै तौनकेवेटीहोवैगीतवय
रससानकीहोवैगीतवयोजोगी
नीसरूपवृकोसकलप्रीथ्वीमी
जीतीकोतवयोहम्भानीदुढील
योहकीमेयाकरेतुमोहीमम्प
संकराकीभाइतयइम्कभानी
प्रीथीमेऔतारधरोअर्वजोगी
नीकीउतपतीकोनहेसपुरषठ
नराजासुरसैनकीवेटीभानीउ
पजी॥ योहजोपुत्रीहतोतवदेवी
प्रसनभइ॥ केतुसेयाकेघरमा
जी॥ तवरजाकहीकीमातपैतो

॥श्री॥

रूपवीहोसयेकपुत्रपायोतन
बहेयीनेकहीकीराजाकेरोकगमे
पुवनहीलीयौयेककन्याहे
जोगीपदुमीनीरूप तबराजाक
स्यालेघूमयोतापीछकानीक।
मसेनरतीचंतीजयतकैरगरम
रहेयो॥कन्यजयमुक्तछन
जश॥तबराजसोकैरहेयीसोये
हयतजइहजी केयाजोपुरष
कन्यकोजीतैताकोहीजाय।
केजीतेकोकोउपरकसामर
नहीा॥यहकन्यावसमत्राकी
होसी॥तबजोगीनीकेसरूपय

रके हे समो पैठैगी जो कोउल
छु राजा जीते है तब ये भउ ज्या है वी
की अइ हती तब कन्या बहु सस्त्र
की अइ तब रानी ने जोगीनी के
वीझा है वो गनो सुभूं मरर चेवो
तब सकल प्रजा भउ थे तब ये जो
गीनी आपने सरूप धुसआमो
ठठी अइ तब स्वयं बर सजा जोगी
नी को है रानी की संको भै जो
जोगीनी के रूपे जीती नजार तपी
छु जोगीनी प्री ब्री पे बैठी सो के उ
छल राजा जीत को राजा सुरसेन
के नगर मे आइ कुवर रजा के स

नामेकुनीठौमाइ जोगीसरु
पहाल्यमेघपरकैरलटछुटीकी
नइ तवरजाजोगीनीकोहेवी
नोबकजाये औरसबसलाको
संकाजइ गैपरमुरूछागाऔर
पीछेरजचीतपतजाये तवरा
पलयेकमेसंजारबो तबपुछा
कीतुहेबकन्याहेकीदये तीनी
हेकीइसत्वीहे तैसीहमसोकहो
तवजोगीनीराजासोकहनेल
गीकीमाहारजजीनहकेनाम
लीयेतीनमेमेनाहीहोमेराज
सर सेनकीबेटीहो तवरा
जापुछाकीतुमजोगीनीकोर

रूपकाहैकोधरोसोहमसोकहो
तबजोगीनीनेकहाकीमेरेजन
सेप्रीतीनीरषीजहैसमानइस
त्रीकेहै पुरुषकोउनहीतैजा
बरजोकोउमोहीजीते तबकीमे
इसत्रीहोगी तबरजायेहबतसु
नीकेहुचीतानयेउ तबराजा
जोगीनीसोकही केमेरतीनी
सैसाठीबजीरहे तीन्हकीमेपु
त्रीहेयुउमेरेकोठकोठकाइस
त्रीचरनपखरतीहे तीन्हकोवो
लइकेमेपुछउ केहमइसत्री
हैकीपुरुषहे अगरहमारेबजी
रन्हसोउफेरतुमसोबतहोचुके

पुछो कोहमारेनेकोउकोउ
कानुमघायोहोसोवाहीहीना
कोसोतुवामामीलेकोनीकास
करहेयो तापीछेराजाइसवीस
माज़मेहलामेरहोहेरवीवीये
होहे दुसरेहीनरज़ाहरवारमे
वैठेतवजोगीनीराजाकेहराव।
रमेआइ तवराज़ासोकहीके
तेरोकेसेवज़ीरहे तीनका
मैहयोमेकोवोलछेराजाज़ी
तेहे तवराज़ाकहीकेतुमइत
नेंजज़ीतेहेनेसोतुमहमारो
वज़ीरज़ीते तवयेहवातकह
हैकरकेजोगीनीकीवाहाउहे

रकेरके [illegible]इ तबीछेरजा
नेआपनेनगरमेढींढोरफीराये
केजोकोइ जोगीनीकोजीतेतबी
मैवडोवजीरकरोंगा तबसबस
नीकैबयेठरहेकोइजुआयनाही
आ तबकोकहेयकीइसत्रीनेये
हबतसुनीके रनीयसमेगाइ
जाइकेवडीरनीसोकहाकेहम
रनीतुमारोवडोवजीरहेकोक
हेयवहीबातमेहीवोहे जोकोक
हेयछुटेतोजोगीनीकोजीते औ
रकोइ जीतीनहीसकतहे येह
बातकहीकेकोकहेयकीइसत्री

अपनेघरकोआइ तबरजाओ
रनीरनीवसमयेकजगेनेइ त
बघीरानीनेकहीकेमहरजतु
मरोबडोबाजीर सोआसवी
चरीवजानेहै तवकोवोलइकेवु
हो तबरजाकुअपनमये के
येहवतसवीकहीकीकोक
हेयवीअपचरीवजानताहै
तवराजातीसरेदीनदुआरेआ
ये तवसवमंत्रीवोलाइकेवु
हो तवसवमीलीकेअरजक
रीकेमहरजकोकहेववडोव
जीरहै वकोवेहीयानेसोवो

केयुहाउ तबकोक हेयकौ
होतआरकीयेपुलाये संन
मानकरवेठारो तबबुहाकी
लुम जोगीनीकोजीतीहेकीनही
तबकोक हेयकहीकेमाहारा
जामेयंहीथनेसेछुठो औरअ
ठरोजकोआयावेहापंउऔजी
तवेकीसमनपठु तैमेजोगीनी
कोजीतेउतवयेहवनसुनीके
रजाकोकहेयकेपसआयेऔ
रवंहीथानेसोछोडायोआयेरर
जनेकहीकीहमरेकनेसेकोट
टाकायायोहैसोमेमपरकरोउ।
रपांचकोटटाकाऔरदीयेउऔ।

रफीरकतकेजवतुम जोगीनी
केजीतीन्होनवमैंतोहैअवपीप्री
त्तीकेराजहेहुंगेअोरआपसं
नकरऊओरमेहरवानगीकरी
केकोकहेयकोडेराकेवीराकी
षोओरजोगीनीसोकहीके।
तुमककोकहेवजीतेगेतुमच
ढुहोतवराजानेजोगीनीको
वीहाडेराकोकरदहीवोतपी
छेकोकहेवअपनेसरीरकीस
धनाकरनेलगेकेचनकीवे
ढीवनवाइजाकेआनकेजो
रकीवोसोहारमहलमेमोजराय

राआपने ऊराकुं आयो आनके
जोगीनीकी सांमागरीहीकरतन
वो सोनेकी सेजर चाइकंच
नकीकोठरीमेपाना फुलकुम
कुमाकसातुरीसावजीवघाओ
रजेते सुगंधाओ जेते मेघसोस
वसामे जोगीनीकीसे जपूरवी
वेहीवीधीसेज जोगीनीकीरची
सबसेजकोद्रूरजमोदुरसतन
वो नापीछकोक हेयआपने
नावेमेसोनेकासीगीरावी ना
सकानवनाइरवी नघर
यारवीतेतबआनिराजासोमो
रोकीवोओरयहीकहीकेम।

नाराजाअघजोगीनीकोमोरल
उपछैहीजैमैजोगीनीकोजीतुग
तवराजाकहीनीनेवीरमाधमै
लेरहातवकोकहैवकेकमञ्ज
थान्नवोतवअपनेजनमकीया
तकहीतन्नवो केसनुजोगीनी
मैनरउमैकामहैवकोओतार
उ ओरमैयकहीन सेकरम
हाहैवजींकोव्यवाहतो माहा
हैयजीकोपवमनहोयेके मै
कोसूपहीथके नु जायेसर
रवीकेओतरघरु तवमेकर
वकेघरओतारलीयेतव
कयेवीपठो ओरआछरह

पुरनव्यकरनवीहयेवपंडीत
चरोवेहपडेओरछवोसस्त्रप
डे ओरछतीसोरागपडेओर
चैरसीउपसंनपडे तवयेक
समैयेसुसवोग्रघरवो तवसु
रलोककोदेवतापनेवीयान
छाएरहे तीनीलोकवीमोहत
भये तवदेवताकहेनेलगेके
तेरोनामकोकहेयहेमेरसस्प
हेयीदेवातवीरावीमोहतभये
मेरोनामहुवैकुंठरगयेतेवर।
जवकेतीनीसैसठी॥३६०॥वजी
रहतो तीनवोजीरनकेसीरर
जामोहे तीसवकरोहेओरर।

जाकेसहसइसत्रीहनी तवमो
सोऊसत्रीचरीत्रपुछा केतुम
मोसो त्रीऊपचरीत्रसबचूनोव
तड़ो तवस्नोहोजोगीनीमैत
पराजासोकही कैमेकामदेव
केबासाज्ञानतहोऔरइसत्री
बसीकरंनजानतहो।औरइ
सत्रीकेलछनजानतहोऔर
इसत्रीकेचारीवानकीहोतीहै
प्रत्थमपंदूमीनीदूसराचीत्र
नीः३तीसरीहस्तीनी४चौथ
संषीनीःतीनकेलछनजान
तहो चासजानसन्मषजानुबी
चारजानु प्रीतीबत जानु।।

यसीरहेकीजानु तोमैंहांतजोगि
नेकेमरहु जबजोगीनीबोली
केमैंपुरबजलंमकीतुमहीकोर
चीहो तबकोकहेयकाहीकेअ
पनोमानसकोउकोहीयोहै त
बरजानेजोगीनीसोकहीकेको
कहेसमनुबनाहीहै येहहेयत।
हैकामहेयकोभोनारहै तबजो
गीनीनेकही येमहाराजतुम
बडेभागमानहोयकेतुम्हारेमें
सेबजीरहैताकोतुमहेकछुभ्र
रामंपयोहोइ मैकोकहेयसो
पुछो जोभोगनरकहेहेइ तनी
कहोसोयेसबजानतहो तबराजा।

कोंचकृतअपनेहृदयकी तबराजा
नेजोगीनीकेचेलीकरव्याप त
बराजानेजोगीनीकोऔरकोव
हेवकोबीहाउराकोकरायेहे इ
औरराजअपनेआसनपरगये
तबराजापतनीकोहुईसोचके
कामहेयसेऔरजोगीनीसोच
चेरकरहीनातबअपनेआस
नजोगकीयाकरनेलगे तपीहे
राजाकोकहेयसोबीहवापठये
नेलगे इसत्रीचरीत इसत्रीच
रीप्रकाराकीहै सोपहीचानेइ
राजाकेअसत्रीसैहेसचलनी१००

तोकृकीपरछ्यो करनेलगे ॥
अरुत्रापहुमीनोलंछन: करत
उचीनहीअतीहीनीचीनहीहा
थकीअंगुरीमापककअतीपत
लीनही ॥ केहुनीजंघआयेनही
घूनवंपेकीकलीकेसो ॥ बदन
चंदमाकेसो ॥ नेत्रमृगाकेसो ॥
इमीत्रसरीरकीचीतवनी ॥ कु
जाकंचनकेसी ॥ होठकुच
नारंगीकेसी ॥ नाभीगोरीअ ।
पनोपरूपअनुगतेऔरसोरहो
सींगारकरवुकरे ॥ कालाचोरस
६जानैजातनोसोवेतातनोजउ
मुषलालसहाथकेसोजऊपरनोउ

॥१३॥

केसमैपसीनाकीयासरसुगं
केसीआवैचलतवपावकैत
छुवामेपदमउछरेआवैचल
रजनहीउठैअंगकेपसीनामे
साचंहनअगरकेसीआवै॥म
स्तकउपजैरगजन॥औरना
सुअपकेसी॥चाकोरचीतावनी
सीयेपदमीनीलछनसमप्त॥
अ॥५॥चीत्रनीलछनभतीहीउ
चीनहीअमीहीपतलीनहीअत
नीचीनहीओरछातीचैउीअं
गुर॥१५॥करहंचउचीअंगुर
मुखकीभापकोपसीनामीकोसु
गंधआवै॥वचनचकोरकेसी

बोलैनारीगलेबोलैहसनमुना।
रकेसीबीज॥लीसाठचैडुमुंगु
रा॥ मा। मुघलंबोगलोसुघोगरे
मेमोतीनकीमालासोहेउजाले
कारचीतकपरपैबकुतकरेष।

॥दोहा॥ श्रीपोथिकोकलिषते
ललितसुमनधनुकुलियतन
चितनवछबिकुजिनबकेह॥
मधुरितुहीनकुलिरतिरमनिज
रुजरुमहनकुनह॥१॥बरनी
कामाकुजिरामछबि॥बरन्योजा
मिनिजोगसकलकोकहयिमन
नकरी॥रुच्योसारसंजोग॥२॥
जोंकेरुकनगबंनकी॥औरमा

॥१६॥

मनीन्नोगवहसंकहेमेसुषक
रन॥ एहदुषहरनावियोग॥ ३॥
मनुषरूपहोइऊवनरोतीनी
यातकोजोग॥ द्रव्य उपावनह
रिभजन॥ अरुजामीनिन्नोग॥
॥ ४॥ ललितवचनसयकवीन
के॥ सुरतिसुरतीकरतसयवे
इ॥ दूगाऊजैसयकामीनि॥ ने
हसवनिमैहोइ॥ ५॥ पिंगलवि
नुछहहिरचै॥ अरुगीनाविनु
ज्यानकोकपठचिनुरतिकरे॥
तेनरपसुसमान॥ ६॥ गुननी
नऊतिसुभटअर॥ सुंहरीयाल
प्रवीनकोऊलहैनरतिसमै॥

कोकक्लजोहीन ॥७॥ ललित
वचनजीरंजनीवरनजोगस
वजोगकोम ॥ क्रियापुरुषसुखम।
नी ॥ जोबुहतनसुखउपजहो ॥८॥
॥ दोह ॥ कोकपढेंचितुरतिसमैजो
हीपकचितुधामनाकरनरचना
रचीकोकसारइह्नाम ॥९॥ दोह॥
चतुरचतुरनह्नीकहौंप्रगटवि
चारविचारपद्मनीचित्रनीसं
षनीओरहस्तनीनारी ॥ दोह॥
रूपपद्मनीलछन ॥ पद्मनी
चंपकवरनतनअतिकोमलस
वअंगचतुरओरगुजनभ्रमरनिमि
षनछाडनसंग ॥ दोह ॥

पहमनीचकोमलकांतिहितनम
धुरतामुखचैनउज्ज्वलचिरपर
मनधरेलाजवंतहैनेनछपै
दुगतिकमितछवियिकसुनमग
भुकुटीकुटीलवरातिलप्रसन्नस
मनासायिराजतचिंनुकंठपर
वचनगमनजेहिंहंसअंगको
मलायचित्रकांति तनसुछमक
टिछीनपगहामीनीहेहुति
आननचंद्रपूरनवहनसहाअंग
निर्मलरहेअहारानिमिषअकु
तकमलसुविमलहोरचेठीवहे
चारिसीवेसरहेसवहीनमानक
रेकतीनौकछुलाजेरखेतसरो

जाहि हेतु धरे कुंति उजलचीर
सरीरहि साजै वारिजकोसोव
न्यो ग्रहकों मकोवीरजनीर
जवासविरा जैदूहनहीमनमें।
हुमनहित रमाकारूपपद्मनी
राजै ॥ ॥ अथ चित्रनीसकुन॥
॥चित्ररूपसमचित्रनीजुतिविचित्र
रसरीतिचितलावतिसवकामतजी
नीरखीचित्रसंगीत नहीभारीदू
वलनहीलघुहीरघनहीअंगजुति
विचित्रहिचित्रनीलोचनचपि
तकुरंग ॥ छप्पै ॥ अमलकम
लहलवरननैनचंचलअनियारेम
धुरमधुरमृदुवचनचारुगुंजित

कचकारे लघुहीरघनेङ्गसबै
तनगर्वजनायतिमयावृतङ्गति
होतपुष्वपरमनव्यञ्जावतीग्री
वाकपोल घुघुरतुरीगतीगयंद
आनंदझिहीकुचनितंबकरिछी
नकदलिवंभजुगजंघजिहि

सवैया

कामकोधामवन्योअतिकोमल
बारकोनमनहिसंगजाकेलाघ
वहोयनहोइसुहीरघवासमनो
धुकरूपताके चाहेनहिचिरेलोर
तिचित्रनिहछिनयेसवलछन
जकेरामञ्जपाविनुकामकीकेलि
कोजैसीएजमनीपमहैकाव
रजुवसंपनीनाम॥६॥

तनहीरघहीरघमुजाकरपहहीरघञ्जा
मचलतिचालउनालञतिजानीसंच्य
नीनाम २ ॥ संखिनीकर्कसवचनक
सदुर्वलहीरघदेहनिहचैञवलंघिति
चलैजानीसंघनी ॥२॥ छपै २
कघुओचनञौकुटिलग्रीवपहहीरघ
नारीसद्दानपततनजोरहैमुजउर
कटीजाकोनरीकुचसुछमसन
कुटिलञधिकतामसतेहिका
मिनिपुरुषहीलपटतीरतीसमैञ
रुनप्पसावतिद्रुढकीएमुरतिकर
तिहारतनहीसुसैनकियोचाहति
किए ११ सवैया
प्रीतिकीरितिनजानतिनजानति
वेककुकामकलोलकोंञातुरञ।
सीयउकवानञजानछुघातुरकंद्

पजोनिकुवासकुरारीककुसोनैव
मयानकरैसपलछीनहीनयहैगु
नहारीपापकिएैजिनकोटिकपु
वपावतीसोनरकैमीनरी॥१२॥

॥अव्यक्तयानिलछन॥

मनमरीमारीअजअरीउरजअं
हनारीश्रीवानितंवजुगवलनहस
नीमंह॥१३॥छंद॥मरउनमतस
हाजोरहैअनंहवसनकवकनती
कहैअपनीअस्तुतीअपुपकरै
लाजवहकोमलउवारेअंवकस
सधमकामगहीडारेपापछारस
वअंगविपारैकरिअरुजंघकल
इमोतीकरतलपुस्ठअंगरीआघु
सीनिउरवचनअपसोवरत्वपै
गुरुजनसंकनमनमेघरै॥१४

॥दोहा॥

...प जसकी सालिता घसैऊ तीक्ष
...लंवनमाइ पंगवंघनसुप्रकाति
...कौ हसनतहि हससुनाये छपै
...पवनिसंगचबप्रीतिचोपचितन।
...टकपटमनभ्रुजनीतंवजुगअ
...रसुभग्रवरमनतनुउरोजऊति॥
...कठिनसुपवह्लवचरनग्रीवतेल
...छिटकयतीछुवंतऊतिहोति
...हीननीहृतऊमनीआनंहूऊं।
...ारीऊधीकसुमंहमंहजगतीहं
...न॥१६॥ दोहा

...ामकलोलसमैऊतिआतुरपाइ
...जैपतिभीयलैडारेजोनिकठोरसु
...ीतकीवातहिसेउरवाननीमारैवे
...यगंधगयेहूवहैमानोकोककल
...हजेहवीचारैकोलिसमैनरषेजी

हिहारतनेकुनहस्तनीकोमनहौं

७ सोरठा

पद्मनीचित्रनीजानीनारीसंष्प

नीहरनीहस्तनीहस्तसमानपद्म

नीकोउपमानही होइ

३ पद्मनीच्यरिषट्चित्रनीतइस

षतीसस्याहहस्तनीजानिऐसेंहि

विधिजोनीगं[illegible]रइतिश्रीआन

द [illegible] कृतेकोकसारभाषायांतरु

नीविधाननामप्रथमोध्यायः॥१॥

अथपुरुषलछन

सुसाकुरंगजुवृष्यअश्वहप्रगटपु

रुष्यऐचारीतष्यसिष्यसौलछन

सकलःकहैविचारीविचारी॥

दोहा

सुखमापुरुख जोजानीए सीतलहोत
सुभाव मन्हनांकुसचतुरंगुलीरति
सौंज्ञाधिकमनचाहरअतिसुक्षम
कोमलवचनः सीतलवंतसुभावे
रतिविनोद्अतिरुचिनहीसुस।
करतइमसेन ==== सवैया ====
गाधिसालअतिसाधुकपटकछुम
नहीसप्पनसीलवंतसुधिचित्रची
चितसन अतिआननउरनितंव
जुगजंघ अजग्रीवासुअंगनर
सुसापुरुखसोजानिएजोसुभा
सोलहत ==== अथम्रगलछन
पुरवचनम्रगंमध्यतनचपलवु
धिचितधीरचतुरसाधुअतिहसत
सुख्यकामिकनकसरीर = प = कामी

॥१८॥

कनकसरीरमगाजुतिसु हरेनाव
नचंचलचितजुतिनिपरमुहित
मनमोहनगावातनिक्रमजुतिस
पचप्पनसहामनसकुचजुराप
तमनउजलतनविमलजासमोह
सुजाप्पत: ग्रीवनितंवसुछम
सुथरसहामोहचितनर हतमग
छनयहजानिएजानंदकविक्के
कहत ॥ ६ ॥ दोह
वृप्पनजानीजारीपरुप्पहाताकु
सुजाघकपटीकछलपटहठीक
माकेलिजुतिवाच छप्प
हगायिसालचितचपसहीरघजा
जारितनजुजापीठीजुतिकठिन

ठिनकूर्मकपटमनःरसनायंतिचि
नचतुरमै। हकटाछनकामवेतच
तत्रधिकअतितेजसहाजिहन।
तथमचितःमनकुटीलकपटम।
निपटनकंकुसमरहनमयन
जनपुरुषमजानिरहतकछु
करूखेवहनः अथतुरगलछन॥ दोहा॥
नहीरघहीरघमुजाहीरघनयसिप
जगसवैतनीगरातिसमैअलस
धिकतुरंग॥८॥ पुरुषमाहाजास
लिएवजबि हातेतिसंगतीनमुष्टि
अंकुसवहन नासोकहततुरंग॥९॥
प्यर॥ लोचनजुगसयिसालहह
हीरघहीरघननअतिजोजनपर
तिरीतिरहतचेचलतहीमनअ

॥२०॥

गुलीसकलकरकानमुप्पग्रवादृसन
हीरषज्रुभ्रानिहैतुरंगमभ्रानिस्
ह्वकेकविदमतिकहति—११ सोर
चतुरभूसनकजानिह्याहृसकर
पह्यवमगमहनांकुसपरमानसु
साक्ष्यादीजानतचतुर—१३ —
इतिश्रीकविभूपनेदृहनेकोकसा
ध्यायांपुरुषलछनदुतियोव
अथरतिभेदवरननं—दोहा—
सुसापुरुषपदमनीत्रियासमरति
कोनामडुनएपरस्पररतिचहै
रनसोनहिकाम—१ सोरठा—
मगाचित्रनिसंगसमसमरतिसु
२ जानीएमनवचेंनकेअंगप्रगटम
सुषमानीए —दोहा—

रूप्यअनुपुरूप्यसंप्यनीझीयासमरति
ाकोनामअतिआनंदहिहीनुवहै
तिमहासुप्यवाम ॥ इनुरंगपुरूप्यात्रि
याहूस्तनीसहायोगवेहार॥ अतिहि
समानेपुरूप्यवियासदासुप्यहसुवि
ार अबउचरति——सोरठा।
रूप्यनकुरंगानिसंगओरतुरंगतुरंग
ातिमनवचइनकेअंगपूगउचरति
जानिरूप अनिबचरति=सोरठा।
रनीतुरंगनसावपुरूप्यचूप्यअक
रि जानिरूइनकेजन्मषकार्यप्रग।
ानिचरतिजानीरूप = दोहा =
यहरनीअतिउचरतिहरीनिकर
जीनीच नरनारीसोअधिककहेतो
सुखसेजावीरच ६ ==सोरठा

जैसी जोतीगंभीरमह्नांकुसतै
चहत तौसुखहोइसरीरकोकर
इमउंचरत ७ जोहितियकोरति
चिनहिपियधिलसैजोताहीभा
निमुहितनहोइकछुबनासक
तवभाहि ॥ ८ ॥ जोजनजानैको
पढिकरहिजतनसुविचारि ॥ अ
तिसुषउपजैरमनिकोबहुसुष
मानैनारि ॥ ९ ॥ अनरुचितियपु
प्यारहिमिलैकहकोकचहनारि जै
सेरोगीनीयकोआषिमुहियप
६ ॥ ॥ इतिश्रीकविआनंदक
कोकसारभाष्यायांरतिभेदवर्नी
पेषं ३ दोहा ॥ आन्यनिवासमैं
नवरननं ॥ कामभामकेबाम

वसतमहाअंगअंगसोहतमदन
आइकैपियविलसैतियसंग क्र
मपछकामवास ॥=पृथघरीहैं
रिहावसतजुमस्तकंकामतहांक
हैतरचेरतिबमहुतियादृगचुंवनक
कत ॥ तृतीयारहतअंपरनवहंत
यचौथिकामआवैकपोसतवपु
ानप्पंनकरिकपोल ॥ ग्रीवापंच
ीवसैमनोजतहांनप्पहानकरैसु
वसेजछठिंकाप्पमैकरैहिनिवास ॥
महमहूनहावनहोइकुलास ॥ सा
तैमहूनकरैउरोज ॥ तहांवसयतअं
निहचैमनोज ॥ आठैमनमनहू
यधिचारीकरमरहूनजाकरतनु
रिनयमीनाभिजुवसतअंनंग=

करमरंनग्रीजोअंगअंगकहिस
मैनजोअर्इमरहनखंउनधरा
धेकाहसीजगमोहैयास॥ मरहनं
सतहांकरैनिवसा॥ जोताहिनन
करैप्रसंगदूधैनारीलखहोइअन
हसीजंघाकरैनिवास॥ मरह
पंउनकरहिप्रकास त्रयोहसी
स्कमरहनसंग॥ तहांकरसहरा
तयेअंगचौहसीचरनौकरैनि
स॥ मरहनपंउनकरहिबिलास
एहिबिधिरुचिउपजावैनारी॥
वलकोकतकहैविचार ॥ है
अमालसतेपरियाबिमलपग
गुप्कअंनगजोहिमारगसेउतरै
रिचहैतेतिअंगगहरुस्पछव

परिवायीमलक्रुगुष्ठारहैदुतिय।
चरनकोकश्मकहैतीजगुल्फ
मैकरैनिवासुचौथिजांघमैक्र।
वैतासुपाचेजोनिवसैजोक्राइ
छठियासीकटिमैतहांजाइसातै
नाभिकरैविहारक्राठैहृयकर
तचिचारनवमीकुचनकरैनि
वासदसमीकाधमैक्रावैवास
एकासीग्रीवमैरहैद्वादसीक
पोलमैचहैतेरसिकुपरानीक
रैनिकरैनिवासचौदसिनेत्रनि
आवैक्रपसपून्यौमाथसमस्तक
रहैकविक्रानहृकेकविचिक
है॥इतिश्रीकविक्रपनंदहृतनेको
कसारभाप्यायांकामनिवास
वरननंनामचतुर्थेप्यंऽ ६

अथकांमदेववाससुकलपछ मेजानवीजंत्र

१	अंगुष्ठ	मरदन
२	पाद	नषहन
३	गुल्फ	करमरदन
४	जंघ	करमरदन
५	जग	वहुपूसग
६	कटि	मरदन
७	नाभी	करमरदन
८	हृदय	करमरदन
९	कुच	मरदननाषंन
१०	काष	मरदन
११	ग्रीवा	नषदान
१२	कपोल	चुवनषंडन
१३	अधर	षंडनचुवन
१४	नेत्र	चुवन
१५	मस्तक	नषदान

अथरत्रवैसवरनन ॥दोहा

हिहेऊरुविचसकलाजानीया। जंव्वरतेतिव्यनिरायिअंगातिय। पकिचानि॥ ६॥

अव्वकामहेवकायासकहमप हैमेजानिनीजञ

१	मस्तक	करहत
२	नेत्र	हुगचु यन
३	अधर	प्यंडनं
४	कपोल	चुवनचेंडनं
५	ग्रीवा	नोखहान
६	कांध	मरहनकरन
७	कुच	करमरहन
८	हृदय	करपरसनं
९	नाभि	मरहनप्यंडनं
१०	कटि	मरहनप्यंडनं
११	भग	वकुप्रसंग
१२	जांघा	मरहनप्यंडनं
१३	गुल्फ	मरहनप्यंडनं

॥२३॥

१८	पद	मरहूनष्यंडनं
३०	पद्मअग्र	ष्ठा।करमरहूनं

अथसखीअंगकामनिवासनि
विकल्पते मंगलाछंद॥
पद्मनीपरियाहोजीपावैचो
खिचाहैजोग चित्रनिआठछ
ठिहसमोहाहसीसंजोगसंख्यनी
सातैतीजातेरासिअमायसजाति
ऐसुनावहस्तनीचौहसीनयमी
पून्योऐकाहसीकरीचाव होत॥
बिसिखामयतीकोपद्मनीज्ञा
निचियचनीवामऔरसंख्यनी
अरुहस्तनीमहाकरतथिसाम
अथकामवासतीतपद्धौ॥
पदपरीछंद॥

पुनीपूर्वातियहो॥अवनसुनि
लीजिसंतासौकामकलोलप्री
तिनहीकीजिसोनागिमनिबो
रीप्रीतिवहुतकरिमानिसे॥परि
हांअपनीवैसअपुजौजानिये

दोहा

जोमननावेनामकैपढैतसोत।
हिजाइवढवताहितंचितअतिव
हैकरेप्रेमनिरवाह

॥इतिश्रीकोकमंजरीआनंदकृत
स्त्रीवेस्यवरननंनामपंचमप्रस्ताव॥५
अवनारीपरिछाजोजनाहीवर
नंत॥पुरुषनतेहृगुनीछुधामन
हछप्रगुनहोई॥मदनअस्टगुन
साजहृसातिग्रोहिविधिसवकोई।

॥२१॥

अथचित्रनीचारनीवरननं॥चौपई॥
चित्रनीचारिनारीवहैपियनिकेत
चूकऊनाकहै॥जोपतिपवऊपुरुष
नमेरहैनासेसीलाकोकहमिकहै
चौपई
चित्रनीचारनीसंगरहैजुकामीनि॥
रहैमातुघरसहाजुमानिनीयहपुर
ष्यनमेनारीजुरहैनामेसीलकोक
हमिकह॥अथपिकियती
लछन॥ सवैया
उतरवेगीनदेतकछुपियकेमुष्य
औरनिवासनिहारे॥पोढतीपीठि
दीएपियकेसंगचुवनतमुष्यपो
छिकेडारे॥जोपतिकेकोउआवत
प्रीतमहुरजनसोअपनेमनधारेल
छीनएजिनप्रेमतजोपिएहछिन
होइसोमेहथिचारै

कन्यागोरीसमाहिकेबालातसुनि
जानीप्रौढाप्रुथानामीनीरष्पहै
स्पवष्यानी

अथकन्यावेस्पवरननं=अडील

मानयरष्यपरजंतसुकन्याजानी
एनासौकामकसोलनकवसुठा
नीएवासापनकोष्पेलसहामन
मेंआवहीकछुकसोककवियहा
रनमनमेंआवही=अथगोरीव
रननं ——अडील——
आठवर्षतेगोरीनेरहकेतलै चाहे
चतुरषिलौनासुंहरीअतिभले जो
जोजनषिलसैनाहिसुवकुसुष्यपा
ईइ॥ परिहांताकोअपकसिंगा
रसहामनभावइ॥२॥ अथबालाव
रननं ——अडील——

बालानैरह आदीजुनने रहके नते
चाहै पान सुगंधि सहरी अतिन
लै तासौकनाकलोल है तजो सा
वद ॥ यातअनेकसो भामिनीत
हिरिहयई ॥ अत्यतरुनी बरननं

अडील

बरष्पतीसपरजंतुसुन सुनी कहा
वाई ॥ भूष्पनवसनसरीरनाकि अ
तिभाई ॥ जोजनकामकलोल
है तुजो भाई ॥ यात अनेक सो भ
मिनिताहिरिहावई ॥ अत्यप्रौ
ढाबरननं

अडील

चालिसबर्षमुप्रौढाभिनीतासो
मकलोलप्रीताहितल्याइए आति
अनेकसोभामिनीताहिरिहाई
ऐपर ॥ अत्यवृधाबरननं ॥ अडि

यक छं दा॥ नाउ वकामवालावरननं
जोवनमयमंतकंनचिछुरोयऊहिन
तै॥ पऊपवनी जमौनरुनिदूतजलजन
समनतेकामिनीनइप्रसूनमासहे
रवीततजानहीगुनानिधानकऊप्री
तिसहा जोविरहंवष्पानहि॥
ऊवकामकूवीलछन —— दोहा
यनत्रमानतिसिथलतनकहेसुकं
तिवैनऊनिऊकुसाम्रचुहचोच
जोतियइवेजुमेन॥ ऊवऊनुराग
तीवरनन —— छप्पै
जमरीमिरप्पततनिलजहसतिकछु
गहियायतिषिनषिनहेतीउबारि
नकमैवहनहुरावति चलतिन्न
तहैरातिनचरङ्गाभरनसुरतिक
कहाछमुप्पमुदिजप्रगटलटछुटीस

॥२७॥

मातिपल्लवचनवसुधालिअतिपि
निहरिकैकुचकसति॥अनुरगव
तीरहिविधिजुवतिप्रीतिरीतिहि
अर्थीकरति ७ ==दोहा==
उहूकिउहूकीहाकाननघननिरष्षि
रष्षिमुसकत॥हतपियपियबात॥नि
पहनिलजघोलतअधिक॥अतिउहू
हअतिहासकहैकोकनालरुनिकस
कलकअसहूनमस ==छपै==
चलाकरीगहैउरोजकरतिकुचमर
नरिअधरअधरसगहतिअंगमो
तिनारीसष्षीकोअंकमैनरतीपा
पल्लवचतकावती॥हौरीपौरीपैआर
नचितवतिचप्पलायती॥अतिजंम
तउचाहचितकवऊंनहिछिनलाजन

ति॥ ॐचसउरोजरूपकीर्तनोहि॥मह
मस्ताइमहविषरती ——— १० ———
तिश्रीकोकसारनाम्यानारीपरिक्षाहि
रतनंनामप्रसङ्गमप्यंउसमपूर्न—६—
——— ॐअथसामुद्रिकछन ———
जलजन्तुरयोसेअंगुपिकतामसमातिग।
महासककहकोकगुननहनिकेसकर
लछनीयस १ जाकीजुगनौहैजुरी
सीजुवतीजुहोइ॥कहैकोकअतिकु
लमनतेहिपतिपाइनकोइ २ ननके
मारगचलनजाकपिंडरीयारिजहो
तिन्हमहेपत्नीयोविभिचारनिषहवो
३ कामिनीलजापरिहरेयेठेसन्मु
मुहूरा॥गहेअंजरनावेनहीएसछि
विभिचार ४ जाकेअंपयरविलास
तियोलतिसहाकुचैनासोनारीन

हीव्यहीनिरप्यिजापनेनैन —६—
जानारीकीमछुपरपुगटहोइकच
मपुडुमिनपरसैमध्यपसराउहरी
नामः जंघमूछपरयारजेहिसुभ्र
कोयामपुछमीनपरसेमध्यप
होएसुविधवावम ८॥ जाकेपगअ
गुरुहदिश्ञातिजाकेबडीहोरव्य
तहीपतिकौहते मखिनव्याहोको
हीरहहोइकुनाभिकाअतिकाया
हीन॥ नाकोपतिजीवतरहै यरप्य
यकैतीन १० जाकीनाभिगंभीरव
भुवनहोइजिमिसूय नीहचैहोय
लिकुनीजहपिसंगरहैरूप ११ छु
वतीनिद्रावतीसोगवतीसीवम उ
हंतरसनाकठिनकयकुनपावैहा

कुटिलघूंघरातिहिंधिलासतन सोलेज
रिअतिताइ तातीयकौअपनाइकैन्मे
हनहीजेकोइ १३ एकपीनहोइछीन
कछुअधिककहीनकछुअंगवातक
हीति ज्ञातरूनिकेपुरलैग्रीवउतंग १४
रोमहोएसबगातपर॥चलतीचासउ
ताल अति दुर्बल अति छीनतनसोम्॥
पावेनवाल १५ जाकेकुपकपोलपरथ॥
नकहत हेइजाइनातमातनेकितरूनि
कोनिहचै जीवतनाहि १६ अधरपा
नीतालुरसनिहसननिउपरस्यामउघ
इंतकोथीअथीकहोतदूरिदूनीधाम १७
मौलपायकोकमनीह्यैइपुरप्पनको
प्याइमलोयुरोज्ञानेनहीज्ञीनतीतके
परजाइ १८ प्पटकरपल्लवकामीनी
कारैअपमअपरायसोतिएडुचित

रितननितजहृपिसंग्रहस्वाथ ११—
इतिश्रीकविआनंदकृतकोकसार
घायाश्वामुद्रिकलछनवरननंस्प
तमधं—७—नाअन्यविरकाहितयरन
कुडलिया॥ जोनहिजानेप्रीतिगति
रहैमलिनजोनित॥ पतिप्यारोनाहि
नकरै न्द्रमराबेअनितचितन्द्रमरा
बेअनितचितघचनमुषदुखसुना
कठिनकपनअनिहोतआपुनहीं
ऐषुवावैसोगवतीसीरहैबातनाहि
हितनअपवेप्रीतिहरअअनिहोईप्री
तिगतिजोजनजाने—— १——
——दोहा——
पियनागरसूरषत्रियातियनागरी
ऐकुरमनमोहितताचितहुरिकरिर
तप्रीतिरुचिहूरिव्याइनिश्रीकवि

नंदकृतकोकसारभाष्यायांविरकृ
हितचरननंनमस्कुरुमखंड — ८ —

अथपुरूषलछना॥ छप्पै

अतीउतिमतनचसनचारूपरिमत
तनहारतपानखातमुखरागवचन
छिनहीनमुखआवतउरमोतीनकी
मालहसतवानीमुखआवतआनंदि
तचितहितवहुतएहिविधिजेकाम
रिरहत मोहतसबमनकामनीकहु
उपासेहिविधिकहतआनंदप्रीती
अपुनितउचरेमनमनोजकीरूचिरहत:१
इतिश्रीकविआनंदकृतकोकसारभा
षायांपुरूषसंगरनवमोध्यं — ९ —

सोरठा

नृपतिमंत्रीहीनहूतीविनकामीपुरू

पइनवीननेरहतीनकोकसारइमि
उचरै — छं९ —
सषीमालनीग्वालनीऔर चतेरीन
नहीनाइनीरइनीआयोवनिचे री
औरसंन्यासनीवाठनीकलारीतामे
लनिवरनीदुतीकपोथीचार — २ —
चौपाइ
तियदुतिकविकहौवनाए॥ जहांत
केतहांहीलेजाएऔरकछुकसैक
हौवनाइयामैकपटक होकछुना॥
इतिश्रीकविआनंदकृतकोकसार
भाषायांदुतिवरननंनामदुसमयं
दोहा
स्विवबीरजलोहाकनकतावौज्
ईधातस्यारीएकत्रकरिप्यानरी
कजोकोई — ८ पय घृतआमीप

मोचरसनवलमसरीस्याममधुमुडी
असगंधपुनिलघुडुंपिअभिराम—२॥—
संप्याऊलीगुरउरहेगो॥हूपीपरप्यांड के
चिविजसीघाडाभदाअरूमहलोठीमें।
ङ्गाअगंमरहूनतिसतसको॥परिम
लपानीगिलोईऔरकछुकऔचिल
चिसाधातसबनिमेंहोई॥घनकरव
कुतिवलधरन जोपूछे मोकोरुप
यसमानतिहुलोकमैंऔरनऔष
धिकोइ॥पारनिकेअंतजुपयपीवे
घटेनतेहिवलअंगचितहिनरतिकी
बिमीहेचौगुनबढेअनंग—६—

नारासेनीकंह

ना छत्रपुष्पजोमरेजुरंकठौरपाई २
मागारमालक ।गुनीगोघ्रीतमैपका
ि॥रुकहोरपरमानप्रातउठीषाई

सोकामीअज्ञानंहूसहासुष्पपाईएअरुस
गंधगाईहुयसौऽगुठलाकअरुहोर
जोकामीपीयैसहाअरुधिकपान
जोहोइ —— दोहा ——
मालकागुनीअज्ञानीकै घृतमैधरै
ज़ोपाईकहैकोकयलनाघरैप्रा
नसमैजोखाइ।।अरुवसामान्यसु
गुडीइसगंधजारऐफूल जावत्रीअरुही
फेनाविजियाअरुजवाइनिहुतिस
नोबंअनमैन—१—पीपरिकुयुम
जारऐफलचंदननागरजानीमीरा
अरुकरकराकंकोलहीरऐसयसम
रीअज्ञानीसाहसमासजुथावाईएअ
रुमैलैअहिफेनानि स्पखाइजोप्राति
उठीइयेनततछिनमैन—३—

—अथविसेषस्त्रमन—छपै—
ससिकेसरीतूगसोगरामजातीफलज।
नतवेहदायकअहिफेनगुंजाहसैमज
महाज्ञानतसकसपीसोएकठौरस।
हितसोवरीघनाचतवरिएकजंजत
तुरूप्यकुतिअगनंहतियहोतसतव ५
लगामनोजमुचैनहीजवलगप्यांत
नकूमलरस—१—सोरठा—चतुर
गुंजअहिफेनतोंकएकहदिवद्धन।
लैचाकितहोएमैनज्योंच्यारिहरितु
चारहमै—२—अथस्तंभनकोलेप
जाजासेऊअहदुधफुनि लजालऊजउप।
करपहनाजौलेपीएसंतनहोधी
जाए—चौपाई—कहुकतोरईवी
जाविसाईएनीरहिसंगसेपलगाइसम।
ससघडीहोएकराईए॥जोगसेजपर

रह्यासोकरैयरतीउपरपगजोधरै
रतीउपरपगजोधरैबीरजप्पलीत
रतहोईपरै ६

अथवीरजबाधेकोउपाउ

इहसहपीसपगलेएललनासोकरसे
गपगधोएबीरजगीरैसिधियोगय
ह्योचंग—पुनः—दोहा

काकजंघअरुस्वेतज्य स्वेतकम
केचुरआफुसमकरिनीरसोलेपन
निचिचपरतेकरवीजबासितनाहि
एधोयातुरतप्पलितपुनीएसो
जोगकहोसोए—अवरातप्रयोग

गीतकछंद

चिंचांफलएकतोरिमध्यहवैतांय
पीपरजारिए॥लपटाएपटपिंजरत

कोसलमंहिसबारिएञ्जामीमे
वहआरिकैमध्यञ्जाचपकारए
ओप्यहिसंपूरनकरिसुछमचु
रनहीनेअंमरहानिए—१—
समहारचीजीचारुसैपरहकरीअ
धरलाइए॥पुनीञ्जापहांकप्रमान
मधुसोबरिसुंदरठानिए॥रतिअ
हिमुप्पजलहोइतासोसिगले
यनकीजीएहहयकोञ्जानंहउ
पजैतियनकोसुष्पहीजीए—३—
—दोह————यथा————
तीतरञ्जानौस्यमरंगस्वजनर
चिहेजाहि—४—सोरठा—
सोठीहांकसिवबीरजनाहिप्पव॥
इए॥नागरबीरबीरसुनाहिपप्प॥
रिए—५———दोहा————

सुरतिसमैमुष्पमेलिकै॥सुरति
करैजोकोईसुरतिसमैहारत
नहीसुरतिकुछंहीनहोइ दि-
वसुतवातवरलोकहा॥पोसत
सुताजोष्पाईवहुथीलेवलोरति
करै॥निसिकामीचितलाइ-
—कुलनारीद्रवन=सोरठा
जवलगद्रवैननारी॥तवलग
सुषपावैनही॥ली ज्यौचतुरवि
चाररीतीएकनरनारीकी—
दोहा—कामपदहयकरीलीजे
एवोहकवृतरऔनीपुगीसम
गुटिकाकरैजोकामीनिसएका
एकामदूयैपुनीतुरतहीलगैकं
सोयाइ——दोहा——

कंचनमूलतिरिधियजनारिउर
गरताकेसंगहिनघबावैरमनि
कौनिहचैहूवैऊनंग—र—की
हरोईइकसरहरितुवनमेंतासानि
वासफेनऊपिकमुष्पतेस्नसत
तनपरतासनिवासकरैप्पिलै
शीफलनमहरैफीहनिकारीवा
लिवेलसंगहीजिरहूवैमहनजल
नारी—६—पुनहूवनः—
लोहृषनुरापीपलामिरचकतावी
जसिंगमलोमाषीसौयनारीन
वहजि पुनः—होत—
ऊमलापरलसिंदुरहीमाषीसंग
पिसाइजोनिलेपनकरतहीमह
नवेगीहूवैजाई—होत—

धमरावेसिमाछीपुनीपींसीजोनी
माहेऊंवीरजडूवेज्यौकामिनीजुं
वरसैघनमेऊ —सवैया—
स्यहितसौठिग्यऊभ्जानिपनानौपु
नीफलररसकहूलीकोजनौसज
लपीसिमहूनाकुसलावैरनीक
रिकमलाननीकोनहावै—ए—
—छपै—
पृष्यमकमकलौलवालसंगच
ऊचिरकीजैनाछिनउपराछिनत
लैचतुरऊतीचपलचलावतघ
नउपरतेछुवारेछिनकनीतर
पैठावतजोतीनवारऊहिविधि
जतनकरिउपारुकामिनीडूवै
ऊनंहकंहततकालहीरमन

रमनी मोनहि सुख वै — दोह —

नारि दूषती हारि कैं पुरुष दूवै तल

फल महन मह सुख पाइ॰ जाति

सुषमा लैयल ═ सोरठा ═

महन सहन नेका दिके पिय रिमह

नांकु सकी जीऱ॰ प्रीति रीतिनेर

चितवै भामीनि को सुख ही जिऱ॰

— २ — जो कामी को महन जलनि

कहं ज्यों पजं चाहेऱ॰ तौ तियऐ

क जतन करै जानत चतुर जो

कोऱ॰ — ३ — ═ सोरठा ═

कामिनी अपने पानी सहरावै पि

य जंघ जुग जतन जु इहि बिधि ठा।

नी रमनी द्रुवै यै रमनको — १० —

अथ लिंग लेप ═ मारसनी छंद

प्रथमहिपत्रचमेलिआनैता
फोकुटिलेइरससूछांनैकुरिसो
हागामनासिललीजैमीठेतेल
कंतरफीजेऔरेसवैरंगपचि
जासुहीनेयरखलेइछनाईपुनी
सीतलकरीराखैतेलकोचमे
उमेराखैमेलिलिंगलेपइततनेगु
नयकरैनसहरीसोउपुनीजुरै
रद्वीछीनपडैजोहोएतुंहीयहै
जुहीरखहोए ॥ दोहा ॥
इकइसदिनपरजंतलौलावैतेल
निरंतरघाउलिंगठाठरहेजुमैल
स्त्रीकेहंतजारा॥ सवैया ॥
सहितछरीलांघांउसवैसमजु
निरा॥आतिसरूछमकरिपिरि

घसनमैछुानिसं॥मालकांगु
नीतेलसमानकरिसानिसं॥अ
हिनांकुसकूठहोसेपजोठानीस
ऽऽऽऽऽऽ दोहा ऽऽऽऽऽऽ
नमचरसोनजुरतिसमसंकुा
नेरासिकजुर्कोऽमहिनांकुसम
रहनकैरकूठकठोरकातिहोसं॥
ऽऽऽऽऽ दोहा ऽऽऽऽऽऽ
लोहरचचकूसगंधतीगजके
शरिसेयालयडीकसारीकनक
फलसवाहिसमकीरगलसूछ
मजलसेपिसिसेलेपनसंचे॥
सासेलिंगमकूसलसमहोतहैहे
अतातिसेनसहासंपाधीफलर
सलीजिसेरातिगुपतकूगहसो
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

रतीयछैकामिकुजीयकउपाय
नवसुषडुपजैहुऊनकोयछत
चोपचितचावई—अबपानुय
पिउपाय ॥ छिनमहधात
जातजेहिहोइरतिरचकसोहूवै
कुकोइ॥सोकामीरहजोयही
करैहूयेनवगिषानुनहिगिरै
कुडील
सारलोहहूसहांकसोछीसमलीजि
मिछीउभेसमानसुचुरनकी
जीरहिबसइकीसप्रातउछीजो
जनखावइपरिहाबीरजनवेगि
धनुनहिजावइ—२
अबमुत्रहकछउपाय—दोहा
एसावासागोषरुनहलछीजुमी
लारपीपरहरडारेनुकाकुसम

नेहसमजाऐ ध्रूप्यजुकरिकै
लीजीऐसिलाजीतामिअघाली
मत्रकछुऔपध्यरीकापुनीप्र
मेहहैतालि — ६ —
ऐलालहुपीपरीप्यरिसासिलाजी
तसमज्ञानीपिस्छानीकैपुरी
पावोपैहैहैहैताकप्रमान — प॥
प्रातसमैतदुलकेजलसोंहवाह
सरिनजोधारे आतिसुप्पहोऐ
जाएंहु अतनकोंकहतआनहुप।
ऐरेअतिसुरतिकरिकामनीचि
तआपौतिहि भामिनीताकोपरि
हारोगनहैऐयहीनहचेजानो
सवकोऐ — १ —
आद्यपरिहास्यभाय — होत —
माहनसहनतेरातिसमैचलेस्यह
आचारी

फूंवारीहरखनउपजैष्रसुखदि
ननासुपावैनारी —१—

औषधीविधान

फलखजुरीकहलीरसताभैऊ
शीएतातेलनेतालमखानेआनी
ऐजोरहतीनौपीसीकैपीवैय
मीनिपरिहापावैपरमअनंदह
हामिपिआमीनी—२—कहती
फलकरिपकथाउमधलइवै
रसाआयरकेलीजिएनीरऔ
रहएकैप्रानसमाताहिनआएवहि
समकरिखाइएकपरमधुस
लेपनहीजेसाहक्योस्थूलहो
एपुनीलिंग=पुन=स्थुलीध
रन—सेधवामिरचाकुलिनलअ

फूटंकजवखारनगरकटारीवृध
फलहकरवनमरवरपादकृस
ंधासमपीसीरगाम्रपुसेगेले
पलगाषा॥समुलीलीगजमातिहो
तहैयनिनापैनसहारे

अथस्थुलीकरनं

सेमलगोचूनसोलेपनउपरदेह
सालहिवसपरमनहीलिंगजुही
रघहारे दोहा
विजयाअर्ककनेरजोपत्ररस
धतुरेपारगोलीकीजेपीसीजो
लीजैछांहसुकारपुरुषमत्रसो
पिसीकैकरहोसिगपरलेपहीर
हकठिनालिंगहोतहैहेप्पतमा
गोतिर दोहा
अजसगंधीसोठीगंगेरू॥छ३७

जमोंहाऊनंहूतरउचहेउअजुवरे
कुटचीहारीमधकेंहूवपनीयाजी
रामोचरसगंजपीपरीअजमी
रामसेचरीछालीकचुरसम
नवलगुसरीस्याम र मिरच
कारफलगोखरूपीपरीपत्रज
ऊनसातीमूसतालीसतजवि
जैसारपुनीजन ३ सुबेवीजऊ
नारकेजीरासेतऊसेतचीता
नारंगीसुजसकोंचविजपनी
लेत—७—मुहलेठीपंकजगद।
नवलसीघ्घारेजानकुसलीक
सितकांकडासीगीनागकेस
रीअजानःपुस्करमूलसतावरी
औबहुउननालीसटांकटांक

सयञानीके वसनछानीऽ
पीसी = लयगछयारेजारफ
लगरी चीरोजीञानीहापहाल
चीनीनघलञरुलास घुञा
नी ७ ऽसबंधजयत्रीसलीतहं।
कहाकलेञायऽसवहोबंध
पिसिकैलागरञंतरखाय २।।

चौपाइ

सेरहसगोहूधमेंगाडे निरजलना।
जनमैञौटावे बिजिञाञाचिसे
लेञावैबसनबाधिपरमैछीह
कावे—छ६=हूधिसामानसो
हूधगाठनिहारिञौबधंसंग।
आदिञगहरलाइऽघारिपावक
मंहहिमंहबिचारिपकाइऽ—ः

दोहा

मंहमंहपायुकतनववालुसमहो
ईजाईलवंगादिकफरनसकल
नामेहेकुरलाइ११भूमिपरयरे
उतरीकेजपहीमेकुसिरायेनाम
मिक्रोदुगुनकरिहीजेताहिमिस
ए—१२—सवऔषघएकत्रक
रीमैहुकरैपचसमहनमोहि
कानामतासुसुंहरवरीसुवास

=अन्यपालुकरन=

अतिवलघरनमाहकमनासि
जनीरःकुगनीउपायनहुमहर
मोहकसमहसरीर=१४=

=अन्यमहनप्रकासचुरन=

तालमखानामसरीसूठीज्ञाव
पाईकोंचयिजकसगंधपुनी
सेमलपुऊपामिसाएवालास

यरीमोचरसपुनीजलसुंआज्ञान
सौतहुपसौपीजिस्यकुतिस्रे
मैनीहन—१

अथकामवीलासगुटिका।

कुंकुमसींगरफजास्फलत।
लमघानापाखैंकौचवीजञ्ज
रुमस्तकीअकलकराज़रला
तुंवरलौंगतमालपत्रपत्रसनि
अजवानतीनभागमसलीली
जिस्येकअफीमपरमानरस
वीजयागुटिकाकरुंपरमीत
हंफजुस्कसस्नसमस्मछन
करेललनांरमैंअनेक १—

अथसंकोचविधी—छंद—

सुमहाडिमछालिमगाइकेनो
तुनलोहसोलैप्यंऽवंऽकरेकी

छीनपुरातनचीरसौनिरतीता
येकेवासनवीचपरेधरीपाव
कउपरताहिपकाइकेअंफ
सुजोतिहिनाहयेरेकरिलिजि
येअंबरछाहसुपावनकारज
सरे—१—जोरोगोअंवरपरा
रिवरंगहिधारिकैधरीस्येव
मस्येराषिनिकारीजुआरिकै
कोचनछातिहोयेसंकनाहि
कीजिये—२—
परिहाजइहैताकोरोगीअपिसु
पावहि—इतिश्रीकविअनंहसु
कोकसारभाषायांसमानवा
करनएकादसषंड—
अबउचटनकरनविधि—
टांकचारिचंदनअरुनओप

कुंकुमडारी नवलचिरौंजीटांक
हसपीसेसकलसमारी — २
सयकरनकडुतेलमैकरै उतनो
कोइ नैसिकेमायनसानीके
छियाअपनेकुचलवैअस्तन
होइउउतंगतिकठि नहोइजानि
हिरमावै — सोरठा —
सुनहिलकधिआनंदृकिजेत
हनिलेपनधरीपीपरीऔस्यन
असगंधवासोपानीपीसीकरि
उउउउउउ होहउउउउउउउ
बांसकेनयकेपानसमजलसौं
पीसैजोकोइ पुमहापीवैप्रात
उठीपुहुपनीयारनहोइ — ३

सवैया

मं॰ १॥

हरदासौंहीआयेरलायेसमक
रिपीसिंकयुसोधायेसानहिंय
सघायेजोकोईताकोपुष्यानि
वारनहोइ२—अबकेसबधि
उपाइ—दोहा—वारनाहू
जकोवारिकेमाहिबीपएकेसं
गकचलेंयेहिनहिनवैछस्या
मरंगउतंगरवारनकोह्वैज
वारीकेमरहनतेलकैसंगवा
रनकीसोन्हायहैवारनहीको
रंग—३—चौपाइ
चुनागोहैलीहरतालाहुनोअं
कहलीकोउारकरैसुनतपरते
पजुवांमनतहानहोइ२वारको
म—१—संबजारीकहलीरस

रेपीसिखारसोलेपसमारे दुरिहो
एकचसंथानकीजेकोकसा
ररसनोसुनिलीजेचुनाखूरर
खूनेहरतास जहांचातहांसे हैवै
पसमारीनतछुनृवारनहोरूजो
दुरयामेकपटकहतसोकुरः
पुन॥ पुनमवारसयदुरीकरावे
पुनीलावोकोश्वरकोनीर वा
रनउपजेजन्मसरीर—पुन=
कोताजपीसेजोहरतारनामेर
सकहलीकोहारकरिकेतपुस
गयेयाम तहांनहोश्वारकोन।
म—फ़नकदूस्य फ़ील—
सरहरीतुमेहोतखंजनचोमा
सेपिजरापालीए श्कदिवसत।

केसीसउपरजमैघारसोतीक्षि
ऐसियाकेबाहयारलेकैकंच
नमंषमंठाईस्पंकंठमेराखैम
इस्सहास्कैचलैजहातहांजाइस्

अथवसिकरन

गोरोचनकुंकुमसहितअंगजल
पैपीसतिलककरैघसिमाथमै
मनमोहनजगहीस—२—पुन
मंषुमहलोहिहांकन्नरीपारकं
जीन्नसमसानकोछारगोरोचन
सोहीकाकरैनैनहिंबतिएपा
एनपरै—३—छपै—यक
गोरीमजीठापुनीस्वेतअकं
मुलपिसिकरै१कन्नसवतिल
७८ कैरैत्रिएफुलतिलककरैतिस

फूलतिलककरितिस्हैरसालन
वसीकरनकेहेतुरमनीयकुतेसु
खपायतनकहिअनंहूककहितअ
तिपायेरमनीरमनवसआकत
गोरीमोन्याओरस्त्रुएकत्रकुटि
नव—७—होठा—रक्तचंदन
औरधतूरायाकसमूलामिलाए
तिलककिएजासंगरमेसोइय
सहोजए—५—रोऊपितगो
लोचनतीलककरैघसीसीस
पोअआवेतिएहेघिकेजपेवसी
घिचमीनथाककाविसरगोहत
पुनीपिसितिलकहेलालावसी
होतहोतातिस्हेघिकेतिएमानो
भईसनान—७—पुष्पनछत्रमे
आनिएस्वेतअर्ककेअरूगररूगोसो

चनसौतिलककरीवस्यहोऽन
हिफेरु—८—मालकंगुनौगो
लोचनांकुंकुमनाहिमिलाईति
लकहेंयौतिस्यवस्यहोइहैरीग
हैउहीपाए—९—मधुसोंजं
कीजिरकुम्रुकंधरीमूलविन
विनतासोंहितचढे है विवस्
होरमूल—१०—काकचौच
येलपत्रपुनीकुकुमसहीत
सारे म्रुपनेस्वेतसोतिल
करिनरनारिधरीपाव—
लीलहरीहूगहनमोहूसाकर
लेताहीघासिछीटिकेपान
कि हेतवस्यहोरजसे—१२—
उग्रहोनजोलीलीयेगिरहस

पुपास सोघसिउपरउारिस्प्रीती
सुधिकहोइतास—१३—काप्य
नलेकौमेललैहैतलौंगसगजानि
पानघुवैपानसोवस्पहोतसध
जानी—१४—पुन—चौपाइ
ईचोसेतकटाइसितवासापुरुप
मूलहूललेतपानकेसंगघयये
नारीपुरुषहोइवसितजीवि
चार—१५—अउचानधि
घि दोहा
उलूकआनीरवीवारकोहकैननेत्र
जउआकपीसिजुतीनवटीक
रैछीतैचतुरसायानवेगिविकी
हाप्रीतिमैउचाटनपरमन—१—
हुउनेकरवीवीजमंत्रमैहोइह
कैनेवीजवांधियेसबहसिचो

लैतोफि—३—छद्म चतुर्दसी जो
ग्है तसु वस्त्र मेंघ होई कुरि संग
घसि तिलक करि देषत वसि जुइ
जाई—१—अथ वर्य व्याकरन—दो
धरसा तिनको आनी गुड पंद्रह दि
न जो धरै सो ठिकर दस तनि पै
सबै बाह्र होइ जाई ॥ दोहा ॥
अथ अपूर्व उत्पत्ति औषधि
मानुष की लै खोपरी भूमि नगा
डि होइ अति सुछम करि पिसि
मैहू कर जु को है—२—आनैह
यजोग नरकोल इसर मरतो लाई
वासन में करि सो हीजि ये याल
क जनै अमोल—३—
इति श्री कवी अनंद कृत कोक
सार श्री भाऊ औषधि विधान

हसमोथं—१२—दोहा—
सुन्य जोनीयरनन—कवित—
एकनि जोनिमनोकुहुयारिजएक
निहोहोतमनोसुषकारीएकनि
कोकछुहोतकुरारिजएकनको
जलहोतायिराजत—एकनकीर
तिमैपावनहारीकोमलहैएक
होरसुप्रीतमकोमलप्रीतमको
मनहारी—दोहा—नारीएकव
रंगमैनासिकारूपसमानसुर
तिमाहीताकोमिलैकामीनीर
सिकसुजान—२—रतिरुचिउ
पजैनारीकोपुरुषमिलैजोकोइ
रुचिवढाइजोरातकरैतारातिरुचि
जातिहोइ—३—नारीहोतयरंगन।
सवनारीनमैहित होत
जाति उतंगसीतलसहातेहिमन

स्त्रिजकोसोत—७—रक्तपरैजो
जोनीतैघिरज ह्वैजुनारीसोसु
वपुरुषनिकोह्वैकोककेहीत
रंघार—५—जथलगमगकेहि
ह्वैपरजनायोरज ह्वैीनवलग
निहचैजानिएगजनधारेहै
नारी—६—मदनांकुसजेजि
पुरुषकोलागतजासोजाइ ह्व
वैवीगीहीनारीहीतासोलाग
नजाई—७—मदनांकुसजा
नारीकोलगैनतासोजाएचा
रमासजोरतिकरैजोउननारी
कुघाए—८—मदनांकुसज्यो
ज्योलगैत्यौत्यौवढैकनंदघ
टैदर्पकंदर्पकोंकरैकामतनदं

इ-त्यांअन्यपद्मनीयोनीवरननं

दोहा

मद्धअलोमनीजजलअरुनम
गमुनचरनप्रमानकमलवास
वीरजद्वैजोनिपद्ममनीजान
अयचित्रनिजोनीवरननं=

दोहा

अतिचतुरकोमलविमसहोरै
नतापरवासहूवनीवेगीमधुगं
धसम-जानीचित्रनीवाल-
अनसखनीवरननं——
बक्रकठोरहीरघअंपिकहोतअं
गपरवासअतिकुगंधसंखनी
महनद्भवतीनाहीउताल—३
अवहस्तनीजोनीवरननं-
कठिनछुटकरवालवक्रअंग
महिखीखुरयेनद्वैसुगजमर

जंपसमहस्सनीअतीरसलैन
छ=दूर्यतीवेगरतिरुचिकरै
पद्मनीचित्रनीवालइकसं
घनीक्रूरहस्तनीदूयजनहित।
लत्र-अथमहनाकुसवर
ननं-दोहा-महनाकुसजे
हिपरूषकोआछोहोसंखिस।
लइठकठोआनिहोनाहिदूयनि
सुरतिउनाल-र-जाकेसूछ
मअतिहिलघुनाहीविएतेहि
नारिअंतरहोविश्नोचारनीली
ज्योचतुरविचारि-उजाके
सुभरकठोरवऊनहिहीरघल
बुहोइतासमउनमओवरनही
जानतचतुरजकोइ-छ-

महनांकुसकोसीरसुजरहोर
सुजरनेधामप्रब्लमसमागत
नरुनीकोमुरैनवासौकाम—
—प—करैजुनरकोंकमनीज
रतिताकोधामहूवैवेजीनगप
रतैत्रपतिनपावैवाम—६—
रतिस्त्रीकोकसारनाधायात्र
पेहसबंसमपूाम—१३—
अथरतिवरननं
दोहा—एहिविलासतवहीवनै
सुनहुरसीकसबकोईतबस
वपवैकंनरतिएविचित्रजब
होइ—१—लघुछंद—एकरै
नकीजातरतिहोरजानतरसि
कचनुरजेकोईजोवठिकरैद्व

॥८७॥

दैवलतासद्भवैयिननितियहिनहोइ
ऊलस२—ऋन्वसज्यावरतनं—

दोहा

विमलठौरपरिमलविमलविमलजु
कुसुमसुवासकेविमलगारैत
सुघरविमलसेजकेपासपान
लौगऐलाजुगलजातीफलघनसा
रजावद्गीसाजुसकलएहिविधिव
सेजसमार—२हैहन—नागरनि
रमलवसननतनअनूपारिपारिमल
वऊलाएवहनपानराजतअर्ध
रसाज्यौवैठआए—३
तवकामीनगजगामिनीनवस
सजहिसिंगारवैठतसनमुषभ
एकरिराजतरूपअपार—सोरठ
पाईकरऊहिसहोरपुनैउकजुगा

ऐसत्यकेरजानहुसोईहढिकनय
हिममानिर—पू—अन्याआलिं
गन—दोहा—नामकेंयकरव।
मधरिवैठायतपिरगोहृपानब
वावतिप्रीतिकरिआलिंगनआ।
मोह—१—अन्यमुहितलिंगन-
तरुनीजंघपतिजंघहिमहृप्पा
वतलैतासुसोआलिंगनमुहित
कहिउपजैपरमहुलास—२—
अन्यप्रेमआलिंगन—पतिक
टिहुतिऐजंघपरजानीपरीमल
पिऐलावतिउरजप्रेमआलिं।
नमानी—अन्यआनंदआलिं
गन—पतिकटिविधिचरनन
रेपरस्परअंकमुषचुंबनमरह
नसहितआलिंगनआमोह—३

अन्यहुचिअआलिंगन—तियवे
हेपिऐजंघपरवामकंघपरनाम
तवाकिजानिनीवीमुकतआलि
गनंहुचिनाम—पू—चौपाई
आसनपांचतहुनिरतिकरैतव
अनंहुकामनिऐधरैऐपाचो
आलिंगननामयातेसुखपावत
रवाम—पू—अबआसनविधि

दोहा

प्रथमचतुरजोकामीनिपतिके
आसनहितआतिआनंहुचित
पजैघहैविविधिसुखहोत॥
अबप्रथमलतागनआस
सुरंगछंह—तियवैठीपाल
आयेकरैजुगजंघऊपरन
धरैपिऐवैठिजजांहिकलि

कपिआसन जोगअनंद चरे-
अन्यरतिआसन—भुजउपर
नामकेपावधरेपिएबैठिभुज
गहिकेलीकरैरतिमानकहेइ
हिआसनको—२—अन्यमगो
हितआसनकटिउपरनारीके
पाएधरेपिएबैठिगहेकुचके
लिकरैमहनोहितजानौप्रिय।
धरीकैरतिहोतसहीद्रुतलक
रीकै—३—अन्यइहआसन
कामीनीकेकहलिपगभुज।
धरीकैपुनीकामीकरेकलो
लअंगसबैठारिकैगहेपरसअंग
गमैनसुखमानहिइहआसनय
हजानिसुजानहि—६—अन्य
लालआसन—कामीनीकेक

॥ इसीफलदेवेकरिधारीकेकम ॥
॥ करे कलोलसरूपनीहारीकेग। ॥
॥ हेपरस्परअंकमेनसुखमान ॥
॥ हीनललीआसनकहनामस ॥
॥ षीसवजानही-पू-कुब्या ॥
॥ विपरितआसन—पियपार ॥
॥ पसारीसोनकरैचढि उपरव। ॥
॥ मकलोलकरैविपरीतकहै ॥
॥ इहिआसनसों अतिकाम ॥
॥ कलोलप्रकासनकों-६- ॥
॥ आन्वहायिआसन ॥
॥ पियचैठिकैनारीउराजगहे
॥ तरुनिपतिउपरवैठीरहनि
॥ जकामीनीकामकलोलक
॥ रैएहिआसनरुचिकना।
॥

परे —७— अथरुचिपोषि
तआसन = भामजंजमहिपु
रुषवामकरधरछविछाजत
पिएनितंवकेपासनरुनीके
चरनविराजत गहैसे जहुरुप।
नीकरततिआतिहितकामनी
हचिपोषितआनहचतुरसो
षतिहैभामिनी —८— अथ
हितआसनं = चौपाई =
कामीनिवैठेपाएपसारीपि
यगहेनीजनारीकंतगहेकाम
नीकेपाएहितआसनवरनौ
गुनराए —९— अथमृगआ।
सनंपसुज्योंतिआतिजगहोय
रहैपिएजुपरआपजुरोजगहैं
हरुवेमुखचुंवनकेसिकरै

॥मजआसनरूपअनूपधरै—१०—॥
॥अथपरस्परआसन—चौपाइ—॥
॥चारैपाछैकरकरिरहैस्वैह्वैचर॥
॥नपरस्परगहैदंपतिकेलिकरैअ॥
॥भिरामआसनजनीपरस्परना॥
॥म—११—अथतमआसन—॥
॥दोहा॥
॥पिएठाढितियकटिगहेलिए॥
॥अंकनारिवालकामीनिजंघमहि॥
॥आसनकहैनमाल—१२—॥
॥अथमनालआसन—पंजल॥
॥ठाढिरमनीहिएआलीनवबा॥
॥लतियउठाइमजापरलाइआ॥
॥सनकहतमनाल—१३—॥
॥अथसुखपल्लवआसन—॥
॥पिएपीठिकेजंघउमेजुकरै॥

करैकामीनीकंतकेसीसधरै

१८=अथमहाबलआसन=

कामिनीकेउपरभुजाजुगधारी

कैकामीनीकरैकरैकलोलसु

पाइपासारीकैपाइनकोंबलक

तिहिनिहचेआनिएनाममहा

चलआसनयहसोजानीए=१९=

अथसुरतातप्रसन

तिएकेचरनकंधपरधरैकटि

करगहिकीडाअनुसरैसुरति

अंतआसनकोनामयामैदिय।

हैयेनिजक्रम-१६-चौपाई

एकोऊसआसनजेहिकरिआ

वै:तबकामीनीमनमचाहिदृढ।

वैपुनिछिनएकपोढिरहैवर

नारीजनउठीलेरउठाकरवारी

—१—पिय पोढ़ै नातेउ इकतल
जुसीतसतोएंय्यह दूढकोदूढ
हीरहैचसम्सकोचनहोइ—२—
वैहीसेजपैपानकरीपानहीं
इऊन हइ रहेनींद्मैमगनहैऊं
जुगलभुजकंद—३—ऊन्य
गलछन— जोनरनगनसो
वैनारीसंगतौघटैऊंगमनोज
जोवसनजुतपोढीएवहेमनो
मन्यचौज्जजोजुगलसोचपॅल
नमुद्दितराधेछुरैजयाहिसिर
नजोचपलतिएछनदूछि
यऊनजोनिहेयनजान—६—
ऊन्यहुतिएऊासनधिपि—
होहा = रहरैनजयहोघुरी

मिरम्योनकछुमेंद्दसोचतहीऊ।
सनकरेआलसहीनआनंद—२—
अन्यआलसआसन—
तरुनीपौढैपीछेहैपुरुषगहेक
छिपानीसोचतहीजोपतिरहेक
रैसुआलसजानी——२——
अव्यआदृतआसन—प्रमह।
पौढैपीछेहैपतिवैठेरतिध्यानक
तिकुचकामीनकेगहेंआदीन
आसनजानी—३—अन्यसंको।
चनआसन—तरुनिनिजुप।
पसारीपरैपियतापरवैठीक
लोलकरैजुगपीनपयोधरपा
नीगहैयहनामसंकोचआनं
दकहेंअन्यसिथिलआसन—
तियहछीनपाएपसारीपरेहु

॥ ══════

॥सरोपगपिरएकेकं धघरेपतिपा।

॥नीगफेकुचकेलिमचैस्यिलिस।

॥सनरूपअनंहर चै—घ—अच॥

॥जेहुकअसन:—तरुनीचरन॥

॥धरीभुजनपरस्परअंकभरेष्टि

॥तउपरपगहोठउ ब हैकेलिक॥

॥रैकामीनिउपरकंतसुक्रीडाकी॥

॥एगेहुकनामरसनसुनिलिज्ञि॥

॥ए == दोहा == एपाचैआसन

॥करैतवही हूवैनिजकाम ══ ॥

॥रोमरोमसुखपावैअतिहितम।॥

॥नेयामइतिश्रीकवियअनंहरू॥

॥तकोकसारभाखायांचौहद्दमो॥

॥धंऽसमपतसंवत् १९.८ मीति॥

॥सवनमासेसुकलपाछे हीति॥

॥येअंगरवीसरेषमत २ == ॥

अजैयासंनकेछनउपचारगा
जरकेबीजाइका। पानागुबेली
कोजेपैस २१ भरगाइकेदुध
सोवेटेहेतीरातकेसमैतोगरभ
रहैसेक्षेवेडावातहोसो।अजै
वैधकसत्रीकोवोहारकमदी
जोगाजुरकेबीजइका ३५ नाग
रवेलीकेजडइका १३।वाटीके
न्हेहीज उपीसेजबरतीवेती
होयेतवक्षसनानकरेतापीछे
हीजेहीना।उ।गारकेदुधसो
हीजैतोगरभरहो।प्राकरमीपु
त्रहोसो।अरनपहोवछ इमीर
करसंकरपेगरगोके गुसाइजी
हमकोनगतकेतवक्षामाहा
हवेजीवाचेजोनज घानुम्हारो

मनमाने जा कहाइ रहे सोइ जगतुम
को दीनी है तब इम हादेव रहे हे वन
ने कहि के हम जइ अस्त्री की कु
प्र पीर प्रीत्यौ के जइ वसे तहि जो
ग करते तब संकर बुढ़ा न दीयो
तब दोष दइ आम कछी कुश प्रजा
व सो जा सो अस्त्रीयां म नस्तव
परवती ने सुनी के होम न को बूढ़
न दीयो तब परवती ने पुछी के
धन को बूढ़ा न गुसाइ जी तुम रे
है के हाकी बोझा रहे तो सकल प्र
थ्वी को वम्मू कर डाले गे तब मु
न माहदेव जी कहा की मै तो बूढ़
न है चुके थे तब पारवती कहि
के जो पूरन दीयो है तो आप सो के
रो जू व्यास रहे हो व पेहचान के
जाइ आरोपाइ ना की मै ठ कर की

जोजानतेउनइसत्रीकोबालकहोवे
॥तवमाहादेवकहैकेतुमन्नलीवात
करी॥मैंइसकीसंवारी॥जवपार
वतीजुसोकहतभये॥होवकेची
न्हजानी॥प्रथमचरनीफीरत
होवःतकीवीधी॥ईसत्रीकाआग
म्यैकमलहैसोफीरतारहताहै॥त
सोवीजनहीलगताहैः२अवदूसरो
होवमसासोहोवहोताहै॥जोनलीके
मंसीवीचहै॥सोवीजनहीपकुच
॥ताहस्कमलमैः३अवआडाहोवी
इसत्रीककमसमैकोराहोतु है
सोवीजकोआडाहोताहै॥तासोज
मनहीरहताहै४अवजडचेन्या
होवे॥ता नमवीहहोवसोकेसे
जानी॥तवकाइसत्रीकोरतीसमै
॥देहकाचैतवजानी॥अवन्यपा
चत्रपा॥होवनीकीन्याछोडो

होय।।सो।।अंगासर्वोभूसृतहोनेभ्
वैराग्य है छुटोहोयहर्ष सोमहादे
वजीकोब्याहोजोतबइनकुवी
हाकीयोतबपारवतीजीनेकही
इनकोअधोघट्यताइजोतबसे
करजुपारवतीसोकहतभए॥
तुमदोयपीछेवा।।असर्वो
जुबरतीवृतीहोवे।।जोमानेद
वैतीयपरमीयेपुहोयजानीयै
तबपारवतीकहैकयाकीअधोघ
ट्यताइजेतबसकरउवाचः॥
पैहलेअसर्वोकेउपासकराई
जे।।ता।।पीछेदीनदीवावेजो॥
तबपारवतीयुनोकरावइजेत
वहोयकोदीन।।रातोवस्तमदे
ननीतीदीजे।।ता।।पीछेयुनोक
राइये वऊतअसनानकराइये

ष्ठोउसे उ चारकराइ येनाकीवी
धीरोनकोपैउछरजउ ॥ पं।
नफुरलसुपउथउजे ॥ नाथको
जैलारनसमकीजै पातीसो
सांनकतरकीआतीऊग्युर ॥ ३
सोचारथसोलैपैरथैको ॥ सो
जमौपराहीजैहोनाउ ॥ गतीजे
तपीछपुरथसोसंगनीकीजै
हीना ॥ मा ॥ तोगरमरलेपुत्रहे
रःक्रौथहुसरोप्रीऊकेनथ
रतीयतीसमऊसखीकीहूहे
फीरतो ऽ तासोचनहोथकहै
येपातथकीवीपी ॥ कमलकोमु
षवंहहोंगहेतायको उपचाराहै
ना ॥ उ ॥ रतीयतीऊसमनाके
पीछा ॥ पेहलेउपसकरथोहै
नासुरतवऊौवहहीजीयेनाके
मेसकरूपा ॥ हानऊौरसकेजा

होयासोआकासब्रीभूसुतलोनेभ्रा।
ध्यासहेछ्वोहोयहससोमहाद
वजीकोब्याहहोभौतबइनकुवी
हाकीधोतबपारवतीजीनेकही
इनकीआोछवताइजोतबस
करजुपारवतीसोकहतभए॥
पूनमहोयथीछेवाआसब्री
जवरसीवनीहोयवाजोमानेद
धेतोधरमीफेरहोयजानीये
तबपारवतीकहीकेवाकीआोछ
हवताइजेतबसंकरउवाचः॥
पेहलेआसब्रीकेउपासकराई
जेनातापीछेहीनहीवावैजो॥
तबपारवतीनोकरावइजेत
वहोयकोहीन॥रातोवस्तमेह
नहीतीहीजै॥नापीछेवनोक
राइये वऊतआसनानकराइये

ब्रोउसे उचारकराइ येनाकीवी
थीनावनकोपेउठुरुउाव।
नफुलसुपउथउजोानाको
जुलास भसमकीजुधातीसो
सानकेरर कीबातीकुगुरा॥३
सोवारससोलपैदकैासोध
गसोपराहीजुहैनाउगनीक
तपीछेपुरधसोकंगनीकीजु
हीनाादनानोगरभरलेपुवके
रःजाधदुसरापुजिकनव
रतीयतीसमजुसवीकीहै है
कीरता ६ नासोयनसोयकी
यानायकीवीधीनाकमलकोमु
षवंदहोत हैताकोउपचाराहे
नाउगरतीयतीजुसनानके
पीछोपेहलेउपसकरवाहो
नासुवतबजोयदहीजोयेनावे
मेसेकरुपाहानजोरसकेजा

इहीजै जंत्यासंकरादानाहीजे
तवपूनोकारवूंदवूंदरपकीरीछ्रौघ
हहीजीरयोताहातगदावमा ३क।
लीतीलकेतलरमा।। आस्के
मुकरकेपीछेरास्सेनजउ।
पानपूलसूधावावा।बारे।।बाती
कीजैना।दूनचनकीकुइकीव।।
नीक्रेगुला।३।।तबहोगतरे
मेवोरीलपैट।।तवअ्रागमेंघ
रीहीजेहीनह्रतापीछरीतदे।।
नहीजे:हीन्रूतोगरमरहेपु
वहोवोाह्रनीतीसरोप्रकार।३।।
जवक्रूसत्रीकारतीसमस्छ।
तीइबैनोक्रचचवाकाहोइ।।
तवजानीस्जोनमेंबीवहोइ।।
ताकेउपचार।।रतीकालपाछे
सेऊसनानकरे।।ताकोपाछ

कलोद्दानहीजेश्रोरस्येहूना
हैनोगाश्रौरवस्तरकालेश्रो
रेकुमणमेधान्नरीद्दीजेश्रो
रेजंन्वासेकरहानहीजोस्व
चूनोकरादजेगानाकीछेसह
कूतीकापीताश्रौरचेछरके
पीताश्रौरवीलरुकेपीताइ
नतीनोकेबाहीकोगरेकजी
चूकरीकेघातीहरकीकरके
श्रगलरगश्रातीनोकीघाती
सेलपेटीकेजागन्नीलरघरीके
कमसकेमघपरहीजेहीन
घऊतसंगनाकरतागरन्नर
हेपुत्रहोद्द्योनीपुत्रीश्रेगा
श्रास्त्रीकीरातीसमेकमर
हुयेतोजनीस्केउसकीजो
नीमेकीउहोतहैसोवीजकु

बाधे जतहै॥ जाके गरभमहीरह
ताहै॥ ताकीऔषदपहसेस्त्रीकु २
उपसकरावै फीरीदानदीयावैह।
नकीवीधी॥गरभकेहीजे ९॥
सीसामंचकोहीजेजन्यासंकरह
नहीजैतापीछेचनोकराइजो॥तव
औषदहीजेजीरोसका॥ जुवासरसाक।
तेलतामोजीरवाटजे इतवनाईरन
बनकीरइकीवातीवनावैभगुर
३ तासोकै बहलपैरजो॥ सोवात
गभीतरदीजैहीन ३॥ तोगरभ
हैपुत्रहोवैअथ अर्थैछठवप्रकार
॥६॥ कहीजेः जोपांचदोषमेजो
एकदोषनाहोयेतोएकदोषजानी
पैतवकफपनोइवातमनावैसंप
रकुमनावैतागरभरहै॥पुत्रहो
वै॥अथ अंलंकस्त्रीकोछेडाहोय
ताकीवीधीवीचारसुमारकी
जडकोवोकल॥गरभकेदुधमे
वाटकेपीलासेदीजेदीन३तोस्त्र

जीर्णज्वरहोवैसेजौरवीचारास्तु
सगंधसेर२वपीपुवागाजराचाने
सकीसोनींसोलीगलपैरहीन१
तोलीगवूंधिहोवैसेर्ज्वदूसरीइसे
सहंसंगंधटंक१कुटटांक१पी
पूटांक१मधुटंक१गरकामुत्रसे
खरैकोफीरलीगमलेपनकरसु
पारीसुपातोलीगहीड़होवैसस
लंबनहोवैसअनीरपातकागु
टकासींघाड़ासेर२॥सेंठसतुआ
सेर२॥गाउपकसतसेर२॥खांड़सेर
गाय्ड़ाकेपागसोसरवनावै॥प्र
तकालसवरन्हानेरोन्हीपातवासेकु
वसहोयसोक्रैपेतपडेअन्यः॥अथपत्र
नकीक्रेअसाकेसरटंक१कस
तुरीटंक१नागजरफलछआक्षपी
मटंक१रहेचारोचीजसहतमे
यारकेकैटरकेगोलीवांधेटंक१
तकोसोरकगोलीसांझकेसारे

॥ तोवेपेजहोस्पुरुषनहोरोगक्ष
येवेपेजकोवीर्यगोलीयांपै।।
पोसनसेरआपानीमनस्क ८
औरापैजबपानीकेराजावै
स्रपाचरहेउप ।। नयहुखानतै
ई नामेगाईकेदूधडारसेरहूसा ६
पुरनगुडसेरडा स्नहसबवस्तुमी
लास्कैकऔटावै।।पानीजवपकी
जवेतबसहेतनसेरजूरवडारकी
गीसकावकरकै वीकनेवास
नमेभरीरथ सांझकोवासपे
सभर १ औरपेसासकभर १ तु
पेमासपाऔरपानीनापीसहै
नर१ बासतोनामरहस्यमरहू
वेपुरुषनामरहतोसतोकीवी
वीक्षोषडुगुआपरकोपपाकीपी
रीवककयु।।३ सामरनोनमेसपे
टकोनीगलसजाबरोज २१ मी

नैवास्तेतोनामरहैसेमरहैहोवै॥
अर्बल्यः औखदपैजकी॥ हासची
नीदकरलीजानथोथैहामकी
छेमहैइसबकोएकजीवदाके
कपडासेछानलेवोसासरको
मीसीरीटांक २ औखदटंक २ मी
लाइकेषारनोथैघेजेहै घेइस
रोग्ये जकी [illegible] औखदहा
अर्थदसबैलटंक १ थेसरीटंक
१ अफीमटंक १ कपाव चीनी
टंक १ अकरकरा टंक १ जरु
फलटंक १ जावत्रीटंक १ सेहस
वसकोववकरेको पीसीकपड
छानकरेसहेत मैंगोलीवांधैर
कर २ प्रभातोसा हुकोषाय ३
परसोंअफीमन्योरीसीयार

तोवं पैज तोहै कामा छुटै नहीं जो
घराइयार् तो छुहै ॥ अर्दै गारा
रैहै की वी धी दाहोर के वीजसकै
नैलका ली मी सी का टका ॥ प ॥
वीलै मधारै वा वार् हीं नासक
इस २१ तो गार मरहै पुत्र होवे ज
वास के तोइन है वे ॥ अर्थ औ
रु जाके वैदी हाना होर् ॥ त्रावे. वौ
दी ॥ औन्याके ज ऽ टका ॥ पार
केवूनी गार्के डु धपी आइहै
वैराती अस नान के हिनः तो
गर्भ रहै याकी को थपलटै है
यो ॥ अर्थ और वीधी जाके प
टमै पडी हा होइ ॥ वा जालं घरह
इनाके याला कनाजीर् औ
र नाहीं है ताके वी धीना नकुसौ
पांच प.. जवाखार टकल.
सोठी रटका ॥ म. सोफ गारटक २.

नसार सखोद्वैपगुडपुरानोसे
रुपनेवुकेरसकठैइलेइना।
कोपैहाइकैनामोगुरडारेप
उलनलै।।नबकैखद्दडारीके
मीलरहींडोचीकनेबूतनमे
भरीघेर नबलकै भर इखार
सांझसबेरे नो पीह गावे उ
घेघरजावेगा रहमे अतरनही।।

हयहुसरइके ।।मुरीहुइपरस
मरीं २।।रसतहरीउ- ।।घीसरक
उ३+ कमराज ३+ सेतमुसरी
३+ सपेहीमुसरी३+ सेमरक
रमुसपर३।। अरसगंध३+ चीमी
३।। गरकघीउसबद्यइकमैं
कैके अइके घीउमेजश।।उ
परसेगइके हु[illegible] पीसपुसर
करे।।१।। हयहुसरीप्रकर।।
गुरुचीकेसत३।। सतवर ३।।
मुसगंध ३।। नालमुद्धी ३-
चीरारमाकेर३= स्याहमस
ली ३= सपेहमुसली३= गोखु
रु३।। नालमखाना३।। बंगराज३।।
चीनी ३२ घीउ गाइके ३२ गा
रीउ= छोहराउ= बदाम३= की
समीस३= मुनका३= चीरउ

जीउ- मेयरफुलगनीकरीयैकतरी
उरै गुपरसमलककुटीकेमेदुकरा॥
धीउमससनीछरैजनवकेचीनीमपक॥
यनदुसघस्कदमससनीकेगात्की
ययेवुमलनछरफलरखेउ-॥२
कगोल्हीसघेरघरतेदहपुससपरे॥
हवरतीसरीपुकरा३॥ जीसक हे
नजोरपरीहोशतद्य सहीजनकेग
इसेगुपदशधसेर मररवी
नीगैउ धीउमवरीसुधनदकेघ
वद्वेजोरहाद ररररररररररररर
रुशतपकेमुनक॥ गुजराइतीउ
सरचीमलवगमसवस्कदमपीरसी
केरकवोरदोक्के गीमवुपतप
वैजोषुपलससताशतवदहीमदुव
रघोडीदररवुपपकीजरशतेसरइज
इतेपीसुदइदरोज ३॥ तपकोडीहे
ररररररररररररररररररररर
तरकोवपरहूरेकेसहोजनकव

कलसलैपकोंतउसडा छूतेमेसुष
चैतकुटीकेकपरछनकरैतवज
नौकीवरामीहक्षपसेरषतहैत
वहषइक्षपपउ ॥=रोहीमपोइके
षवकरराज २१ तपीहेसकेइसरो
जगुरषवैक्षपउ ॥=करोज
सेकरसराज २२ ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
नरकोवषरवतकेजो हुउपेसव
चहहोइपरफुलहोइत मकृके
जसलेक्षषइजवनीछपीछोटी
येउकिसहोत हे मकृकजसस
इवैचीलमभवहठइकेजकम
धुपधुक्लहीचेवे रामप्रतपसो
क्षहलेइजइग ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
नरकोवक्षजरहीनवैकसमी॥
जपइसलरी बमिसीरीतीनीपइ
सलरी ३ ॥ सतराजषइजैनक्ष
समहोइतमहीननरीषइकसमी
तजवुकेकपरछनकरैनर

वरतनमथ़समपनीउरीकैपरेव
रैसवेरपीकेइपकजीर खइकचही
गाउकैराहीहलीकरहरीकैकीनेउ
रहवैपोइकैहलीखइधीउखइक
थ़रसचचीउकरपरहेउकरेहव़
थ्वइगुनकरेकुथामहोइ ऽऽऽऽऽऽ
नरकीवहइकैमीसीरीकउगंधक
इनोकथुपधोरीकैलगवइनीकोः
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
नरकीवकउधैपोहतकरहोकस
लैकचरहरअसकरंगनीकरीतेः
पउमरीमेहडा चीमीधीउमहेलु
अवनहरकैखइअवमहोर गाउन
अरमहोइनसोहीकैचहनीवनऱ
इसोहरीरवखइअरमहोइ ऽऽऽऽऽ
नरकीवचुरनकमजोरीकसउपर
चरीतोलभरी ६ हरकेवुकनइ
इपैसभरी २ पीपरीडरपैसभरी २

सनरहुरपैसमरी २ थउ मीरंगापरस
मरी १ जयनी हुइपरसमरी १ रसोहू
चरीपसमरी ६ मीरी चहुइपैसमरी २
नोनसोचरदुइपैसमरी २ हीगम
घेसमरी ॥ वहेरकारखुकुठ हुइपैस
मरी २ गरकारहुधपवमरी उपरसे
पीरसे

हवरचीहलीके वधुरके पतीके हरहो
एकसमीलहके आरतमकुपयु
रहनीचे उपरसे चीलसमवरठइके
लेर घुमुलीसे जइतनीक होइजड॥

नरकीवहपके पतसनीयकलेखव
इमीजीकरगवीसउनलेमलगपहेइ

नरकीयपेरहुरीके धारंकयकचचर
नीवनवेगाइकरहलीमसनीयेथइ

सरकीघनजारीके कहरलवकुजरी
उजरपुरसवलसकहरलथेजरीकुव

सेर ३॥ चीरी के थमे मसुथवै पीसी
कै मरहृकरै गइकरहुँ थ हुइसेर ३२म
कपरमपाटीविपीधै हु थमचुरावै
नवकै हुहिजमवै हृतीकमनयोकम
थनकहुँलेइमठजमीनमगडीले
इमछनकथइकैयजनजथनरी
सतरोजथइपहरेजकरै थहइमीठ
इनथइइसतीरीकेपसनजवै जव
तइहृपथइऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीवथसीकै केधरसकरीस
कपइसमरी१ पीपरीपइसमरी१
वशतरसोठीपइसमरी१ अपकीमक
थेलचरी॥मंडुरपइसचरी१ कु
टीकेसवमथुमसनीकेगोसीवधै
सबेरेएकगोलीथइरामभ्रतपसे
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीवपुसटइकै पतलकोहडगंउ ६
सेमरकमुसरगंड हा। सेतमुसरी
गंउ ६ सपेहीमुसरीगंउ ६ जाँगु

कसतओ३ रसाकरंग३ रगडके
धी३ मनुजीके गोद्वीबधिईस्के
इस ३ पस्से गइकरहुपपीञ्ञ३
बुजनपुसरकैरे खरस्मीठइयच
कै ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

नरकीयनसुरकै गइकरहहीलैकै
पीनरीकेयरतनम पइरखइराजनी
नी३ ओ३सवरतनमकीनरकी
नरपीतरइजतहै सोक्सुरीसोर
गरीकेलगवइ अछहोइजइ—
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

तरकीवर्पतपुसरकगलूपरकुवीञ्ञ
३-सेहजीर३-जगपुरानीअपैलम
रीगोसमरचञ्ञपैलमरीगसंफ
र३= सबकमीलइकै चरीहीसव
रैञगकञ्ञइसपीसैहुइसेरपनी
मछनीकेपीजइ चरीराजपतुप
मरपरैऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ

सरकौयतहूजकै नींबकैपतकरररस
ूपरैमहुनेष्कमीलइकै घोहैमसु
रतवरवरींगोलीवपैउररररररव
नींवकैफूलगोलीमरचहुनेउवकै
मीलइकैपीसैगोलीफेरउथरवरी
यवै गोलीवइकैठछपनीपीकु
इहेर [illegible] हुइघृतनींबकैफूलपीसी
कैपेडुपरलगइहेहुगाकोरहुची
गामेलसुनरएकपारउकैलीकै
चीरगामेपरकै मटीसे बंहुकरैकू
ओमेजरर हुइतकैपनीमेघरोहुइ
ते उहइपनीपीकुयहृाहीगपमी
मघारीकै हृतोअरमलैपनकरै॥
गाइकधीउवतमसपुरनचहुरकम
पीकुरहइ हुइराजकीवहीपीकु
यै [illegible] रमहोइजरगारररररररर

तरकीब जुलाब नमक जन ।।सन
कैय कुन ३- गइक धी ३- सक
र ३- तीनों कुं कमी लइ कै दइ ऊपे प
तरकीब जनमरी गोली व धै सा
रोज घर रहे कर्थ क गोली एक पह
कीव ही रोटी हलीवी उषा ।।ऽऽऽऽ
तरकीब हइ कै गंधक नइ नुक्स गो
घ घे कुं क पस भरी १ सोहग
चउकी क पस भरी १ मीसीरी
पइस भरी १ लह चीचीर के पत
सब एक कुइस पीसी कै सकुं के
तेल म फेरी के लगवे ऽऽऽऽऽऽ
तरकीब दीजइ तो ।। कै बूइ क व
रा ग भरी लइ चुन क रसी करत
लउ सक व नव रे कइ सपनी
व इ कै सगये तं क छो ते ।। रजइ ।।
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीब हइ कै चउकी क सोहग

कसद्वचनवैंनीसहस्रजरी
उरैहुनेवकसपेकरमवुकौकैयसी
पनीमसगयै
नरवीवसेगरहनीवैसवैगीरी
कमसवुइद्ध अपवीममसचरी ४
सोतगमसस्पेक १ मुजीकैतीनी
उकमीलइकैगोसीचनसैपरम
नमस्वकौरतीकेहमनहोइतैस
हतसेगोलीवधैहीनकेहसतेहे
इतनेबुकेरसतेमोलीवनयेहु
नैवचनतसइमीरोरलोउंवेहुहे
हमुसवकेहलीनायमरमहार
हरकीवपुसटरकैलढुगापरसम
रीव सगरपरसमरी १ कायल
गासपरसमनरी १ चंद्रनसुपेहपर
समरी १ जीरसुपेहपरसमरी १

असपइसभरी१ हल चीछोती
पइसभरी१ नगरमोथ्यपइसभ
री हेथनपइसभरी१ मुकरेठाव
इसभरी१ उरमसीपइसभरी
१ नगरपइसभरी१ वंसलोच
नपइसभरी१ पीपरी छोटीप
इसभरी१ कथोलपइसभरी१
मरफेलपइसभरी१ इलीची
नीपइसभरी१ नगकेसरीपइ
सभरी१ तलमखनकेवीजप
इसभरी१ मुसलीसुपेद३=मुस
लीस्याह३=भगट३-संतव
री३= इषघ३-गखुरु३-संकर
३१॥ घौघ३१॥ घी३०॥ कुम्ह
ड़ोरसे के३१ ॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰॰
नरकीवपेरचलेकेमोजपर
सभरी१ इंद्रजवपइसभरी१

चेलकगुरुपइसझरीकृपौउकेपु
लइसवकुटीकेकपरछिनकरैख
नैकैयजुनहमरीभरीहइचंगहो
इगुनकरैअरामहोइररररररररर
तरकीवपीसइकैघीउकुम्हरके
पठइकलनीमकपइसझरीइस
जौखरीपरसझरीकृचरउनीमकही
उकुम्हरीकेपठमझरीकैगरमक
रैजौसतरपकुम्हगीपररहैतीसतरप
खुपपकइहइतवउसकगुइनीक
रीकैखरैचरीउनीमकउपरसख
रचंगहोइरररररररररररररर
तरकीवपेटचलैकेछुलीकुवकै॥
जमुनीके।।गुलरीकैतीनीउवर
धूरीकैकेपीसीकेछनीलइतव
पीअइलगैतवजोरचुनघोसी
कैपीजइचंगहोइररररररररररर

नरकौलसौंवृहरहवैनककौंकनौ
मसेस्वैकवृमेवौमसेस्वैकवृमौर
चमसेस्वैकवृसौठौमसेस्वैकवृतौ
नमसेवृसौगौरौपरमसेस्वैकवृस
यपौदेसौकैनमवृसेइहूरवजइख
वृवनेलहरवृौयकनौंकरैकैवौ
भौंकरहूौकचौलयेवौसरसेर ॥१॥
चौरौंकैचरौपवौकौरैतैयगइ
करवृयसेरकरठरकरठसेरए२॥
चरौरोजूसवैवैजौसमेदुपयकै
रसोंवैवै ॥५॥ छतमेसुवयरज
वहसेरहृपसोंवेजयेंतवस्वैक
मरौंकैवरननमनरउसयौपे
दृसेछहकैरेवरननमौयकपस
वैहैरनवस्वैकगउनबोहरउसे
गउनकैतरेस्वैकगहबोहृउस
कैलौतरस्वैकयरननगउतासव

उपरहरदीकरखरतनधरैचरी १३
तरसखकेउभरेफूकीहेइतखनरेचे
थरतनपभतेलचुइचूपेरेकीगो
नीवुहइतयजुतनसउतरतेलकीनी
करैयजतकीभतीहे थीपीतेल
धनेकीयजनतीनीहमरीभरीठ
इहीनचलीस ॥ परहेजसव
चीजकयेरधनेकहेइगोडवे
रोटीभुरहरीकेहलीधीउचरी
पुसमरीहलीभयहरोजनव
चैसठीभजरजाइसंनीपतनेरह
भेइछपरमेहजरचरीसुलजाइ
छतीकेजरनीजरयस्सुलजाइ
थरगोलजाइमुतकछेजाइभन
कोसजरभुहमीनीमरहहोइते
मरहहोरमनबेजरनीजइगा
भीभीकारककजाइरसबीकेल

रीकनहोततहोइतैलरीकहोइ ।। रामकृ
तपतेसतीआशनीकरऽपलनतेल
करनमहै ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
तरकीयगरमीकेवंसलोचनतोऽ
भरी १ सीगीरीफलतोलभरी १ गुज
रतीइलइचीतोलभरी १ मजुफल
हुइमहरखेजरफ्पंचतोलभरका
अवैजरीऽपंचतोलाबइरीकेज
रीऽपंतोला ।। सबअकुलगऽलुग
कुरटूकपरछनकरै ।। जरीतीनी
उसकेमकुरटकपरछनकरैसब
ऽकेममीलवेतागोलीवधेऽपे
लभरकीयुजनइसकचीलमम
धइकेतमकुकीनइबुपबीचे
ऽफुगीपरैवइरीकीलकरीकेत
यपीऽइलगेतबबुपवोठीलइ
बुपधुऽहैयेहुनेवबतलइस

रोजलेश्तैमुरमहोररररररर

रहवरसेमुहमुझ्जत हेतवनेवे

गतनाबचुरकेछलीमुववेछ

लीगुलरीकेछलीमुवतरवे

छलीजमुनीकेछलीसवेसव

कचुरवेमुहकरवं इवेवेबु

पचुरवेतववपररसेरपनीतव

ंछहोरतववकुलकरैतवमुरम

होररररररररररररररररररररर

तरवीवसुजयवेचिचिकनर

हेपतीमुऽ-मुसरीहुनास्याह

सपीहुऽ-पेहुमुनुजवमुवेक

चऽ-हयइकपरमनासतरोऽ

घरगइकरहुपपनकरे हुपन

मीलतौवसीपनीपीवेररर

तरवीवमुवीउठइवेचीरगम

जौवतीवेरमहेतवनेवलेवे

पीतरीकेलोटकीपेहीपरसुप
रीसेसुपघोटइअजनकीमा
फीकघोटेभरीभरीअखीमल
रहेरतेअरामहोइजा२२२२२२२२

नरकीयकरेजपीरहेमहरेक
सुनगपुलइपुलइखोरीसवेमी
जीकेप्पयइहेरअरामहोइजा२
२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२२

तरकीयपेहलरइके जोतीनीम
हीनतेउपरसेहरतहोइतेगसते
जनकेअतरछलसेर उप से
अयतोकेछटरमसखयतको
मरहबनयेकपरछनकरेत
कोछटकअरकीयजन ५-
अरमरोटीबनइकेखयइहो
न२१ तहीकेउपरछटकमरो ५

मेलीपुरनीचइहीन २१ घटइमी
ठइनचइतोमहहयउऊछकरीहै

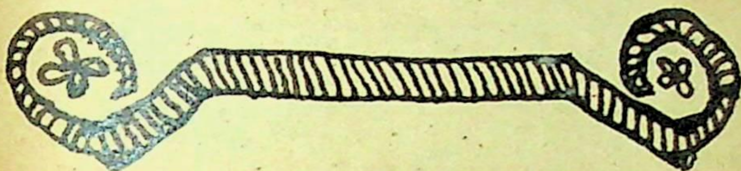
तरकीबधनुफटीगोलेइतकीबी
गधकर्हथसेर ३० पोहतकैवोउरी
कचीबीनचीरी ए छोहर एत
कोडरीकैबोवचनवै छोकसनी
करीठरेतकीगोलीयनथैघहही
न २१ घटइमीठइवचवैइसो
केपसनजवैहीन २१ तवऊछहै

तरकीबसवैनइकैभसकइइऊके
फलकचेलऊवैतकोबीजनी
करीपेरै घुपवोइउरै वजनऊप
वय ३= घी ३ ३= ५ कैमउरीकेऊ
जौतरकरीवनवैावसीरोदीकेस
चघहीन १ तरकरीमनीमक

नडरै रोजुखइतो महदेव अछ्यु
रीहै खहरमीठइनखइ हसतौरी
कैपसनजरहीन कृ॰ ररररर













श्रीगणेसयनमः ॥ श्रीरामजीसहा।
सीतराम श्रीगंगाजीसहा॥ तनोमन
पानीकोकसाग ॥ चरनोगनप
नोचीधनवीनसनरामरूपपुरा
नहुकरताराचरनोचंद्रसुर्जकर
मोतीरामरूपजासनीमिसमोतीर
गुहनसारामरामरामरामरामराम

१

मर्द्इकेदूरकरनेका छछुंदराके
राकतसेबगलापानपराली बेग
हनकाहीत छपरामेबोसदेना
तोजूंपहोइभारी

नामदेव: कारानं मंत्र

२ जंदनागपंचमीकोलीखेकगद
परहवी चंदनसेतोसापघरमेन
आवेगा

३

जंत्रगौकाघोरातारकतचंदनसे
पानपरलीषकेपीलाइनारोज
२१ मेआरामहोजाइगा

५	५	५	५	५
५	५	५	५	५
५	५	५	५	५
५	५	५	५	५



जंत्रपसलीकाहैगोरोसनाइसे
कजपरलीषकेआगेंधरीहेनी
तोआरामहोजाग



तेलीकामसानवांधिनेकाकाग
काराकतनेचअलपानपारली
घनागरहनकाढीनघरमेगा
उड़ेनातेमासानवांधी जा गा



जंत्रकपलयाइकाहे ।जाख
मेपालीचसेतक ऋसवगंधके
सरमंपजाग़ाआरावीसाइतीस
पुनमेरीकघीयमहसकरके
लागायेगरोज़ ७१ मे जागा:

जंत्र जरै आक है तो भीम सेनी क
पूर रोऊ का पीत सा न ष जो ज पत्र पर
लीष नाना छु त्र प्छ भ म गा ला मे
गा ल है ना तो आराम हो जा गा

जंत्र का न दा त जो व न्धे तो कछु आ।
कारा कत्त स्य पान परा ली षकै गा
लाम वाधै गा आराम होगा

१११११११११११११८

न न

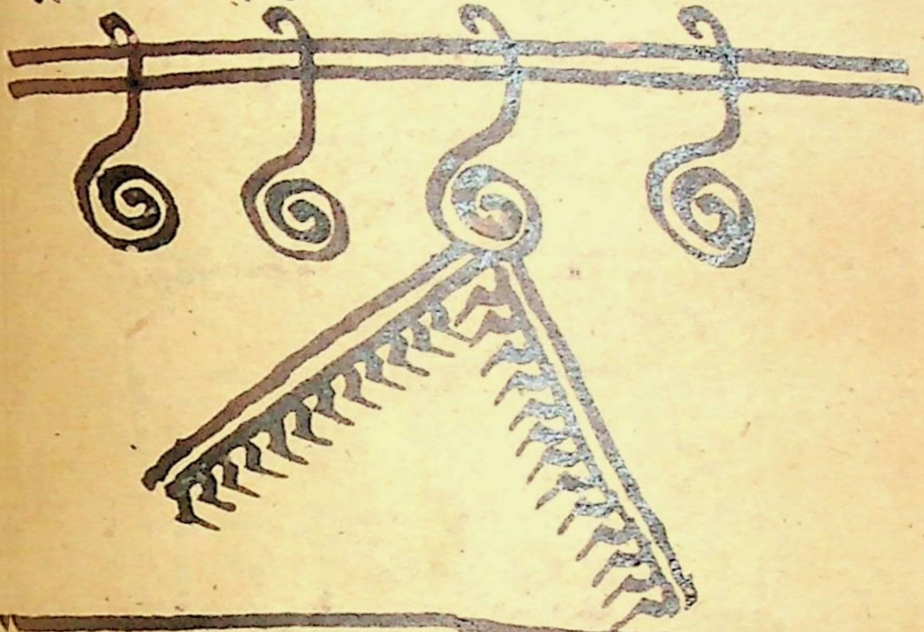
न जंत्रं पूतकाले गोलोचनवीसा
इपुराइनीसालओ जपत्रपरली
घनाना छ नपुल मेगालामेउ
स्टेनातोगुरामलोजा गा

७११०	५	१००
५	६	२
११११	२२	११११

गराजनननजंत्रा आसापुरी
धुपराकत चंदनसालपलीख के
पानपूधागारोज ७१ मोरजागा
गराजनय मेगा

५५५	५	५५
	ह्रीं ह्रीं ह्रीं	

सापजो धरै नकराजं बहै ॥ राका
नचंद्रनसेयागसापानपरालोठी
कैथीलइदूनातोआरामहोजाग।



जंत्रपीसहीकाहै ॥ संखद्रजनेमु
कारसकेसरमंथगुसावसात्जप।
नपरजमाकराथाआरोजद्रू
मोआरामहोगा।



जंत्रतहीअउतहयुलहीलकाहै ॥
मीलसेनीकपुररकतचंदनसान
नामकापत्रपरलीषलाअरतन
काहीनगालमेजसहैना

२	२	२	२
२	२	२	२
२	२	२	२
२	२	२	२

जंत्रवसकरान ॥ गोजुकारोतीप
अपरातकानामअापानाना
तीअककारीअकुनाकोषीस
इहनाचरामगरतककरनामे
अपसोआवइगा

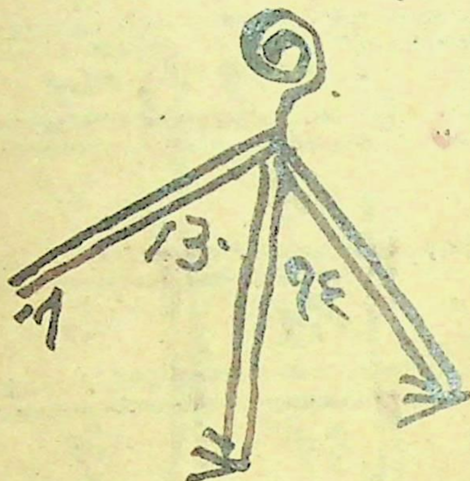
जंत्र श्रीनहीहीँ ।। पेतुरकापाना
परलीषनायौहीकेकेलमयोडो
कारदुगानछत्रपुषमेआरामहोजगा

५	५	५	५
५	५	५	५
५	५	५	५
५	५	५	५

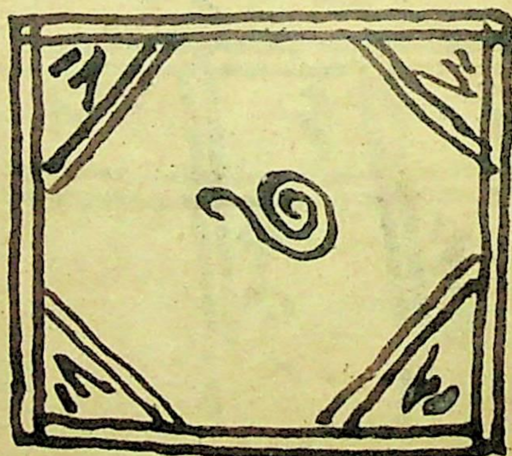
जंत्रजरातयाइकाारकतचंदन
केसरमधेससाथ्यपानपरलीष
केषेरगानछत्रपुषमेराज १मा ।।।।

333	४	२५५
५ ५ ५ ५ ५	१ १ १ १ १	

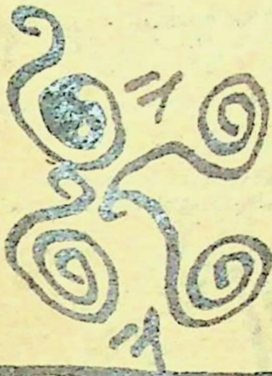
जंत्रदेवीजीकाहै ॥ इसयंत्रकाराजपरचे
लातहै ॥ रक्तचंदनसेभोजपत्रउपरलि
खनाइस्केइदसीकादीन गालामेंडालईन



माताजीजीका जाप ॥ जेमंतलबके
घेसोहोगाजाप १०००० मंत्रयाद
छोडो याद्यकारानेमंत्रदेवीसांहासाह



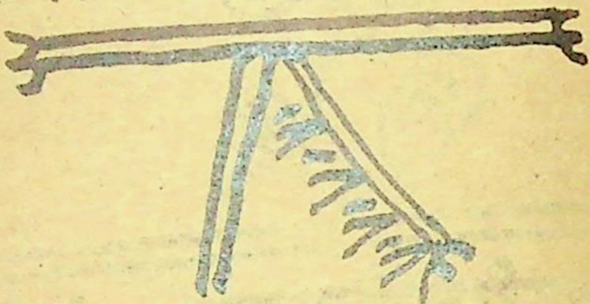
जंत्रजमुकाहै।।गोलोचनसेजामु
नीकापातपरालीखनागलामडाल
देनाःआरामहोगा



जंत्रपीअरीकाहै।।राक्तचंदनसाल
पानपरलीखकेखागारोज२१मोजाग



तारांतरे होमकरे तो गवालकजीस
गामनमे जपनकरे हनुमानजी
ध्यान धरे तो कारुज सीधहोजा
नकसपरजपहरहीसे कागदपर
लीषना।



मंत्रऊगीनीकाहै गोसनाइसे घत
रूपनापर [illegible] लीषनाछपर मे [illegible]
नातोअगनपरइजार



जंत्रसुगध्यासापकाहाकुमकुमासे पानपरालीषैकेषागाजोक्कारामहोगा॥

३१३१३१ | ३१ | ३१३१

३१
३१
३१
३१
३१
३१
३१

हूगरलगानेकाकागकारकातसे भोजपत्रपरालीषनषुषनछत्रम घरामेभोसहैनतोजूपहोगा।

रररररर | रर | ररररर

र
र
र
र
र
र
र
र
र
र
र

जंत्रगलाउचका आपकाराकत
सेताभकुकापतापरासीकानछ
त्रपुखमेरोज११ मेजागा

नामह | ह | साला

जंत्रकराकमुतीकाहैगाहेवीचंदनसे
पानपारलीखकेयागारोज२१मेआ
रामहोगा

२	२	२	२	२
५	५	५	५	५
२	२	२	२	२
२	२	२	२	२

जंत्रतापककौ।।राक्तचंदनकेसरम
घस्याक्षपानपरालीषेकेआगारोज
रमेजागा

२	२	२	२	२
२	२	२	२	२
२	२	२	२	२
२	२	२	२	२

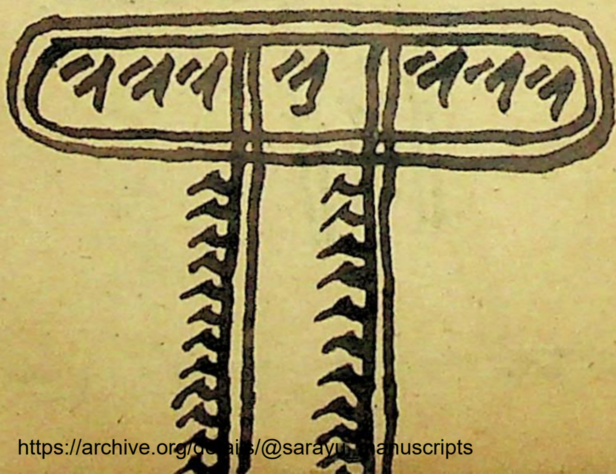
सुखैनीकाजंत्रहै।।गोलोचनमेंत्रो
जपत्रपारालीषनारेकाद्सकाहोन
मालामेडालदेनातोआरामहोजागा



मातजोनीकसेनाकराजंत्रतैहवी
चंदनकेसरमेपसाकेभोजपत्र
परालीखनाअराहनकासीनमे
गासामेडालदेनातोआरामहोगा



जंत्रमराछूकाहै ॥ आसापुरीवु
पराकनचदनसानपानपरली
खनारोहीनमेयालमेडालहेना
तोआलाहोजाआ



जुम्माजीतनेकाहै कागकाराकत्त
सैन्नोजपत्रपरलीखनापुखनाछ्छ
त्रमकरानातोजीतेगा

६	५	१
१	५	१
१०	५	१
३	५	१
९		१

लालासाहेबकाहै

[illegible]

[illegible]

1 [illegible]

2 [illegible]

3 [illegible]

[illegible]

श्री गणेशायनमः

अथ सूचीपत्र पोथी [illegible]

[illegible]	४ मंत्र [illegible]
सूच पर	५ मंत्र [illegible]
[illegible]	५ प्र मंत्र [illegible]
[illegible] की दवा	५ [illegible]
गोली	५ [illegible] की
[illegible]	५ [illegible] की
[illegible]	६ [illegible]
[illegible]	७ [illegible]
[illegible]	७ [illegible] की
[illegible] की दवा	८
[illegible]	९ [illegible]
[illegible]	१० [illegible]
[illegible]	११ [illegible]
[illegible] की दवा	१२ मंत्र
[illegible]	१३ मंत्र [illegible]
	१४ मंत्र [illegible]

श्री गणेशाय नमः अथ पंचतंत्र प्रका
स लीख्यते अथ प्रथम कंपारांकिय
प्रनसीरकरसकसंरचरी ॥:१४
तिसमंति हीच उरपुरनपउमरी:
पिसीकंसीरकमडरिकं हाजीम चुर
वुंलकरी तवलति नइ प्रथम बड
रीदइ जब प्रहीकिसम होइ तब ए
कसिसीमर वैतिस मंर वैती कोमु
षवंदकैवैचलिसदीनःष प्रेम
रावैषरिचन्वइ प्रथ संर ए कःपर
सहोसीसीम मंडरिक ष्टोंइ कंलीदी
मगडिरावदीनः४० चलीसुतोअ
थ्रवकक परहोइ जाइ जोपनि
रहीजइ जोजंर जैनीकरीलइ
कोउ कहु कीअथ्र वनपरा ने
हीं नीकरेंतहे ताो मीस्य हैइतिप
रासच्च

है परमार्थ निस्वार्द होत्त है सो निस्फल
है इस में कोइ संसकर नाहि की पञ
जो सम्जोग में च है जिस में स्थापान
रै सो सबु दुरस्ता होइ इ सम्रर्थब
को पराह कमरी १ सिगुरूकं परमो
वे दोद पह कामरी १ पतिनि उ ७ कमसी
मपकै सीराकामचो हैं चरी ७ का १
रीट कसो कि मराषी कै ७ कहडी मैं
च रो अगुरा वरुम रै जिस मे सीसीवरै
परीहाडी कै मुब तर वरुमरें तवम्र
चदेइ छपहर में द सिसी कामुबबु
लरै षै स्योग सी तलम पनिकसैं अ
ची माति पह चं दोदं पम्र भूचीरनी
जोग कैं सब्ब परस तादिन नोसत्त
र सोइ जोग करमुबलग वहुतास
रपरोग तरमुठ नहोइ वरनम्र
दही इअसची कदेइ नोअरमहो
॥अनयम्नर्थप्रकरमहा॥

though not found in his
Besides its style differs.

7- [illegible] - Some really
Bhasa and their style too

8- Then there are two more
but that cannot be thoroughly [illegible]

Ashvaghosa as a poet. - Asvaghosa
declares the purpose which led to
the Kavya form; he recognizes the
in the delight of the world and sees
and therefore he sets out the truth
to enlightenment in attractive garb
that men attracted by it may
aim and extract from his work

Unlike later classical writings
such purpose. They are only for the

He is an Indian Milton as Kali
Virgil.

He is an Italian painter of 15th c

In order to fulfil his main object
he sometimes has lost the niceties

He is more like a sculptor than

ा:वु त्री १२५ जप कूर १२५ त्रिकूल १२५ कुली
ा कु १२५ प्रिसृं गु १२५ म ज वृ १२५ त जो १२५ च त्र १२५
ो० भौ ग १२५ मी च १२५ कं को ल १२५ सु ग च्च वल
वइ नु रं ग १२५ कमल की जर १२५ घ रो ते
पीपरी १२५ इल इचि सो ठो १२५ दवु मे जरी १२५
इ १२५ व सा १२५ च्यनि सृ १२५ त्रिर १२५ सोवू १२५
यदवु इ पीसा के प १२५ नी मच ६इ तेलके
गुन पनि लेइ सो तेल मप च वु ज
पचि जइ त व उ जरी लेइ सो सि सम
रइ सो तेल ल मवु इ तो जी एंचरा
इ से तें ग द दुव जु मैं ऽ ल जु इ स्रव
घदि तेल तेल तिल कसे र ऽ१ लेके
ठकपनि चौसठी ६ कसरी ६४ तोर
इ द हि का ६४ सो तेल मप च वु तके
ते कुट की दंपू दरु कु इ मह रं डी
कू चे द नु हर दि सृ स गं च मोच
र हरि रं नु कर सनि सव दवु इतो
तो लेवे व सव क द हि के जो पव

अथ यव सीर की द वा सो ठी पीप रि
प्रि चे वाइ म रैं ग चीन त्री कल्ला नज
प त्र म र ल र चि स म म ग लै म ही कि
व र वा री न हि म गु जा र रैं ७ क कं कु हैं स
घ इ जो य उ सीर ज इ अथ यन्त्र न्य उ प
र पांइ ल कं क ठ ते सो चे जो य उ सीर
ज इ अ व ते ल क सि स कु र चीन पीप
री न ल व सो ह र ज ल मे न सी ली क रिअ
री यइ म रैं ग से चौ घ न जो र दु कं वीज
चो वा द नु नी सु म ज्ञा ग पनि ते वां ही कं
ते ल म प च इ द इ सा ह ड क द च व
म द र क द च गो म न ने ते ल की साम ल इ
सो ल प च वं कं जो ते ल य उ सी प र चु प
र इ जो मा सा न र हे अथ य अन्य उ प उ
ह र दि क रु इ जो र इ कं र स ने र ग र
इ लं प क इ सो य उ सि र ज इ अथ य चं
द दि ते ल ते ल जि ल क दु इ सं र ॥२॥
चं द न सा वे द इ क १ न ग कं सा
मरि ।२५ गौ रो च न ।२५ अग र जु ग र ।१

...on...

...f Sanskrit Literature

...श्वघोष first Brahmin who took to the
...ए. Dr. Keith's view that he was a
...ng because he was really Brahmin by birth
... script evidence. in the Kanishka
passage नै मानीचर in नामिक गोली also occurs
व्यवसायाद्वितीय: सोऽस्य शस्त्रल्प्रमूलं प्रयत्नों। (मातृचेट)
... येन प्राप्तं पदमनन्तरम् (अश्वघोष)
... proved by writing an epistle to कनिष्क
... is prior to the date of Kanishka.
... Liberian opinion of बुद्धचरित.
... belong to सर्वास्तिवादिन school at all - go[...]
irregularity due to these versions being
...ence his priority to कनिष्क.
150 B.C. and 100 B.C अशोकावदान
50 B.C. " 100 A.D अश्वघोष's date

... बुद्धचरित ii सौन्दरनन्द काव्य iii शारिपुत्रप्रकरण
...eds in previous life up to his enlightenment
A kavya in 18 cantos. Deals with conversion
...ther.
A play in nine acts. Conversion of शारिपुत्र

...inst Brahmans. But it is not the work of
...e inscription describes. It was really

...n appreciation of बुद्ध in various verses.
...ves the fact as it is much polished.
mentioned by chinese pilgrim इत्सिंग
perhaps it is the work of कुमारलात

ष्ठ त्री।२५ ज ७ कू र ।२५ त्रिक्र ल १।२५ कुली
जु।२५ प्रि ष्कं गु।२५ म ग ष्ठ ।२५ त जो।२५ च त्र।२५
भो ग।२५ मी च।२५ कं को ल।२५ सु ग च व ल
वइ मु रं ग।२५ क म लु की ज र।२५ व रो ही
पीपरी।२५ इल इचि सोगी।२५ दवुमे जरी।२५
इ।२५ व स।२५ च नि श्र ज्रि र।२५ सो कू।२५
वद वु इ पी सा के प नी म व ६ इ तै लके
गुन पनि लै इ सो तै ल म प च वु ज
प चि ज इ त व उ त री लै इ सो सि स म
र इ सो तै ल ल म वु इ जो जी एं च र
र से तै ग द दु व ज्र मै उ ले कु इ क्र
घ दि तै ल तै ल ति ल क सै र ऽ१ ल के
ट क प नि चौ स ठी इ क म री ६४ जो र
इ द हि का।६४ सो तै ल म प च वु त के
ति कु ट की दष द रु कु इ म ह रे वी
क चे द नु ह र दि क्र स गं च मो च
र ह रि रै नु कर स नि स व द वु इ तो
जो ल ले व स व च द हे के जो प व

सो जैन मप चतुवउ जर को सिसी मेर
षथ सो तैभलवुं जो जी ति जरु जर
विषम जौ रजर पैन वध्य जर गुमु
नी इ त्रि कंवलक द वल तो लवै
दिनति नी सो ए हु नलै यह तगुनक
रै श्रव जी ति जो रा प्र मं सं तमलौनी सा
घनपपरीक्ष हं सुपदि वं दल्ल बुरी हप्र
दर क दुध्य सह ड कदुच हरिवर ए क
ए क सो घो है श्रीनि नीतिनी म्रचै दइसं
र वु सैपुद मेहि करी को रषि कैदइ सर
उपर कीश्र चौदइ तौन स्रा होइ जर
श्र गुवंस मलीनि ।। घ परि पश्रु च वु
किकैक पर घ नकरै मी चै कचु ति कि
रिइ द नौ को ए कमकै कै चेलमरीग
इ कनैनु त सद्य त एक प हर मरीर
गरै जौ वउ सिर जर श्रवच्य वासदि घ तं
हुस करसु सोर द कमरी ।।१६।। गो घु त
द क सोरमरी ।।१५।। गो दु च ६७। चौसठी द
कमरी च मप चढ़ै विरइ त ।।१२ कुर इ
श्र ।।१२ मोव्य गैं ठि मधु ।।१२ नि नु वंल ।।१२

५२१९२

दन१२इं दो रानि १२ मोहकसररत ग
१२ सरि वनं पसंकमलग ह १२ तपमन१२
दमव१२ मुर हरि १२ मव कीर्ति कैके
सच वु सो धींव इ पंस भरी १५ स हनु १२ तो
तो पीत ज इ ककक्नउपइ वीपर
तीलह १५ कुल ३ कंपनी तव हीकपींदि
त्री तव जमु नी की मव की घल स्तर्जे
तह रिं की घल सम म गकैं थै सो ह चुर
नुकर मोर तिकम जैं दं इ पनि म सीप्र
त कल मली क छ नीलें इ म मधीऽ
सीके पीपें दीन१५ जोर तो पीत नी
नहोइ स्राव॥श्री जोल४ वंसलोच
न तोलें२ पीपरी तोलें१ गुजर तो इल
दु चीम सं६ तत मसं३ सवक पीसी
के चरीर वइ चलजरी वइ तो दर
कसस्वस पर्न स्नल मैं दानि वरह प
पा१ क दहनरहें स्रवक्तनउप१ वइम
रंगुलोह मस्व हरि सम मग कंकें चुरनु
ररि१ कम सें संहनाके सव पर दरजइ

ग्रंथ कल्पनद्यूत इंदो र नीत्रि कुल रंजक
दरु हर दि सरी वन पिन्न वन ककुद
नीकमलगरु इलरु ची म जीर्द्ध द
नु नी ग्रनर कस नी तल स तं जप
त्र कं तृं पौसि व दं वृ र सोर इकन्नरी १६ प
नि चौसठि इकन्नरी ६४ गो द्रव्य ६४ सोधि
म प च वृं पनि तं वं तृ कसो घीउ पर
जी वैल नलिक होइ ग्रंथ मंत्र जत
छु ऽ यक ॥ ॐ नमो ऽ स्मान वासिन
कृ तादि पल पनं कौंकु [illegible] रु स्वाहा ज
पं १०० ग्रंथ ग्रन्थ मंत्र ॐ नमो नर
सिंह पहि र न्न कास्य प य घस्व
दार नाय कृ त प्रेत पि शाच कप
उ कीनि सकी नीकु लो कृ लनास
प स्कंन्न य ॥ समस्त दोष न ह न ह स
चल स चल कंठ प प कं प य म न
म म हुं फट टंठः ठः ठः ७ हिरु हृो ज्ञापय
नि स्वाहा जपं १०० ग्रंथ प्रनागवीचरा॥

हा॥ दे ह चि त्र रेव करैं सैं तप अल होइ
रु दधि चि चैर्व नवसैं उर पैं त गुहीनरते
॥ओनरी जल दि जल दि चले नि तति
न क्र रु न होइ त व प ह वि चि करैं अ
म ताः सच्चुःस र मे हरैं अ र अमुक दस
त कीन्नरइं दु त छ वै त ल वीर वि
पं गं म र मे र दुस व ली कली क कुमों
कचि पा म सान पी र सती द गु रु गोविं
गोवी द गोरी ग नै स छह कोछ होइ प
ह कोव होइ प अ क स की न गि नी प त
कीप री नीः त रि जोगि मु हिं रो ग दोष गृ
ही मु च मु चस्य हः अ व म त हो म विच्ची
छू त गुग इ च त सैं वीज म द रैं की म मी
र न त हो म करैं चेर सी अ ह त दे इ चै
त्र प ढी प ढीके हो म करैं जो पै त दोष
इ॥ अ ब पु मे ह लो गदि चुर तु लोग
कोल ग त पी प रा सो हिं चं द न म पं
इ ल इ चि छो इ अति स वं स लो च न
स पी प री अ ग र न ग के स री जय कु
केपु रु ज ट म मी घ त व री गु रु

अ्रस गंच गुर्चकसतु तगर सवदरु
चैलचैलजरी १२लेई सवकी दुनीपउ
लेर जोपइ।१२ जोवीस प्रर्लेहजेर अ्रप
अ्रे ३ वीचीत्रीकल कोका ७ गोप्रत्र म ३ रिकंप
तोअ्र ५ वीचीजरअ्र मर्लेपअ्रं ५ वीच्चीका जोर
र्संचोरं उ कीजर कुटहर्इ व चसमम ग कें
कें कंजीकेपनीतलेपकर इ वुहीकें अ्रं
परजोनीकहोइ अ्रप गुजगिर्वुकीविचि
इहैर एकिजर अ्रर्ठअ्रगुर ८ मेगमं
र वैंडु जोदिनजोगुज गीरीपरं तप
॥सोहि गुरुप्ररनेमैं दकेंके गइ केंवी
मपीअ्रइ जोयजगीरोवरइ तव गजे
र कवीजअ्र व संव कोंके गुरुरंमैंव
र्तेभु १५ जोदिनतिनी जोयजगोर्इ अ्र
नि प्रुंसकिकी चीकीस नकहोंकें
कर्मदघदमम्र १६ मतनु घ
ममरी।१६ ७ केमकइके वदि
४८ पचुघीउजगवइ अ्र
र केसरुमी सोगिअ्रकार

पीपरी लोग ज५करर
जसत्री तज
तोचिलसंचोनगसवदर तो
नतवनरीतेंइसवकतुरनुक
सहतमभीलइकेंपरजोनीपं
तकनीकहीशतवगाली सोनें
कनवकमस११मोतीव्रनवंचे
तसेरसंगकेंमसेमिचमसै४
वरकतकइकेगरकेथीमव
रककेंरपहराचरी४नकोगो
नवथेंरतप्रमन१तोवइतो
नपुंसकनीकहोशतव्या॥प
२५सेदरकइगुरा२५हरत
२५जमनगोइकींदि२५सिगी गु
मह२१२५॥इसवमंडीकेदुच
षदलुकारतोहिकाशीलीवचेसी
मेरवैतहीकमोहरवंदक

॥ अचोपत्रकेकेअर्कनीकसी
रमीं जनलिंग मर्लपकरै म्रो
पान मधर जो न कोति त्र इ प्र
नर गि १ तेष ॥ गर गवकी
ठि के सर्पदि मस विर वहु
सें६ कृ लकरी मस ३ अ९ क
र मस ३ सव इ जै गरके घम
सजे घ लू करैं प हर १२ सो
म्रोबचलीग कोविठि म तव
वधैवहर४ कूरि वोली ३ र
नान तीतपनित अ सननव
र गोतीपुंसीकअ ह होइ अ
नृसिंह चुरन ॥ सतेबरी १६ त्रिकु
२० सहतु ३५ चु २ २ विलेरी कंद
मुसरी दु नो १६ तील सा म१६ गुपरु
५ १६ वहोहीर२० गुंच कसतू २०

कलवृनी ची तर्कजर१० सवक
चुरनकर इ छनीलर सहैनु
घृ तामील इकचरीरपर दनौ
नु नघ इ ह्कमरी ऽ कमस
कव ऽ तवृचपनर नरु नहोर
ज अरु चीजर नुइ जर प्रमहुन
इम गंदर प्र त्र कृछ मृ त घ ननइ
सु नव कवृरपं ऽ हलीमकह पक
सस्वस छ इसवतकसेगनइम
नृ सोह चुर न अचनु लवर
जसी।। प न र ह्कमरि।। सोर्ठि
२५ हरह्ह्कमरी१।। सोक २५म
कोइ २५ गुल कंद चरिपसमरी
।। मीच१२ त सोहर कवीज१२ मु
त क१२ स वकगुहोर जीकमीन
प अचुसर पनीमप्रन कल
ति नि पहूपनी मीलइका
मचटइ दइगरमहोइत
पी अइ समरी सकरऽरीक

त त पनी पौन्न तीन्नर विर पतीन्नर दास
तिहो गर मिम गन्न मनर है ओ गरम
मगन्नपन होरपढ़ैं न्नव वंद कररव
होरनीवदहीं न्ननुवर अव नमर
कीरलन्नस ३७ कु गि दर ७ कु दल
चौनी दृकन्नरी१ गरी ६ कमरी १व
मदृ कमरी गुदी१ लोवनु ६ कम
१ न्नवनिचैलन्नरी१२ सवकचुनुक
रसउ कममलीलरकं गी दरकंपह
मर पँदृसी लरसवुहैं गी दर ७ क
सेनमचरर सो ७ कु मउ लबोदी
अपंदीमवंदुकरर तरै ७ कमरी
चरै पकीवसर मरीवीनुवकंउल
वंगन्नपुदृ फर न्नव तेलगर ना
वगलपनमलगर कैसिय नीम
रकवंच्चे उपर कीक इतिस ह
सवर छोडउर जो र दोन्न उपर
गै हीर ती [illegible] होर [illegible] अदहोर
नीम [illegible] गदु होर

च्य व नके सुकार कैवस ईदि म
र ग रैं तो स्फ ले हो इ पु छ हो इ पु ले छ
त त प्र।।सी सा र ग लो ह तें रु इ गु रु
न को सोच न म र न वीची अव
म्र सोच न वीचि ।। गौ म त्र तैल त को
पु कार तै इ व र श्न सवघ तु न
सोच न य ठ बिची ज न वृ अ वृ त
म र न विची ।। वो इ ज म री रं ग सोप
र गै च कदो इ प त्र ल पं हे त म्र कु तसो
र होवीची होइ सर वा मच्छी घ री द इ प
कै क प रां हूँ करी ति नी वे र प ठ अ चदे
त म्र स्प होइ ज र ।। त वें कंप त्र वं
हृ कं वेंची लैर सो प त्र चो गु नोलो
तु सेचौ प त्र न यं त र उ प र च रीकप
नो त त्री ज इ दे इ प ठ र अ ठ व क रीनी
कासीलै इ लो न छु ठ इ ठ र वो सीह रत
व कीलैर र क घु ज र धा लीवुवु केर सम
घो हं प ह र र त मैं प कृ मलपं हूँ तरु उप
र म च रीक ग दू कु सव नु वै म दी मल
र सनात हदे र करा सु बैल इ क

ग त्र र नीप ठीप चइ कम री॥५॥
न ईगि॥५ दइ रादि॥५ कि कल॥१५
लगप सिंच्यो प सम रीपस त्रीवइप
सोचर प सवदवइ कम इ कररको
ईपसन मच्चइ वर चे लनरी॥६
इह त्रर रंजके ने लमप र त्रो जो प्र
व न लगत्ती होर नोप नी केसचवइ
व लगमली नसंचो केसचवइ पे
ह कूनहोर नोम दीर केसूपवइ,ओ
प्रीड गुम वकरि के प्र कू केसचवर
प्र र नेरो गत्र र केसस्यस वर गोल
कै पव ना पीनसत्र दंगर मं दमनी
कक वई पवं सी पि नी कैपप्र तने
रो गत्र र रसवरो गह चीकेसम
नहे प्रह चुरना सिह कीसमनह
त्र पवनवे तप प्र कंनव न ई व्र
नेकरे त्रनीन दे यपवे प्र केरती
दिनमपनवे

व वलचीकीतं॥ वचकुइस
तकेसंबचइं ग्योरइंनहोवमी
पुवहोइ ग्रबवलसंगुम की॥ वे
बुके कुल लोच गुनपीपरीस
कलिमीक चुरनुकरैं सहनकेस
पवइ तो संग्रह जिइंग्र तीस
जर पुन॥ विजेरगर के दुचम
निकैं जतकइके तोदिमलेपक
तोनीकहोइ॥ पुन॥ पैसववेंद
तो इतो॥ सोंठि पीपरी मीच पीपर
राखैचोलनु वइ मिलइ के
रनुकरै सहतु केसनचहैंप
वपुनें॥ पुन॥ तोलीम पिसकेप
मकनी के पीसहुँ पलकफिटी
मी हीजर पुन॥ गरगवकसुत
नुकनु करैं चीमनु जैं चोरज

तमरीचे सकर उरीके वलकक
रोजुवकु पैच लकपुच्हाइ ॥ पुन
सर्विकेचउर जंगर कोरस नसनी
केगोलीपच्चे चनसमन रोजुघइ जी
घकुहोइ क्षोअतिसरवसीं दमर
नपर सघनसें ॥ पुन घोरेदिन
कवलकहोइ चनुपिअइ नजर
जोसेचेलीनस हतुबी उसवर
हरनवम पुकिके जीनी मलग
वै दचुपिअइ ॥ पुन जोवलक
कआरहोइ जौ कुहकीचें उमी
लइकेसहनुकेसप चहवे ॥
पुन ॥ ककरसीगी अजीसपि
परीपुकीकैसहनुसप चहवें
केकघरदजरजर ॥ पुन ॥

मोच सोर्छ म्रती हर इ द्र मउ
घस इ नक कोचवनवें तोम्र
तसर जइ॥ पुन॥ ककरसींगी
पिपरी म्रतीस मोच इ नकचु
रनकरर सहतके सचच
है म्रतिमर जोर घसीजइ॥ पु
न॥ पुहकरमरी म्रतीसपिप
री ककरसींगी पीसीकेसहतके
सचचहै तो तपकसमग॥ पु
न॥ वैसलो चन सहतके सच
चहै स्वसनकस मग पुन॥ का
मी कोचुरन सहतकेसचचतो
ह चकीजइ॥ पुन॥ जो [illegible] पुत्र
नीचो होइ॥ जो मी श्री संचो लोन
नपरी मीच सतनप चहै तौ प
॥ ९ लै

पुन॥ तनीसविपरीपनीप्रघ
निकेपिग्रइ दिइ बलक की श्रीप
श्रीहीगर॥ पुन॥ जोबलक कप्रघ
पके॥ जोविपरकी ब्लीब हीके
लेपकरइनीकहै॥ पुनभ्रुवके
वके भ्रतरघलीलेपकरइनीके
होइ॥ पुन॥ वेलपहगगुरुहर
हि घिहु हरीकब घ जौबलक
रतीदीनरोवुकरइ तोइहीकी
चुपंदगर भ्रघबलककोवी
चर॥ जौबलककउदवेगहोइ
रोवुकरइ दुघऽई द जनदह
कहनहनेकहद वरसोवुनहि
स्वरवहलीमलहि पुछमपुहे
जौलघनभ्रमचीजनव॥ चौप
नदिनहीकसंगममहि॥ दोउ

त्रिलोके जह होउ भूलेकी मती
व॥ जकी पुनरी पकवनवें॥ पुनी
उ ची ह च प्रमन॥ जोनी नपन
र चनर मुजनें॥ पुनरी के हच
पर त्रीसुल कपनधरें मही
वनर क ओ नहीपन • २६६ प
पनबे सप्र मुवन जसनगबे पु
नरी केसव अंगस गहउ परर
द के ह वे मरजि मे नहि बोलवें
को द ओर पुनन॥ अर रू ह संच
जो ह सवलौ र चउ र पी सी चुर
लक र ओ चोकर नव चौक
पुरवे पुरव मुव प्र नीमर पच
पदीप चं दब मर मोग कन अ
कौ कारिकें पसं जोग वती कीस
गक सवच र नव गर ती की

पुत्र करै अवप्र जोगविधी ॥ प्रश्न
के उतर के ग्रहहीर तह गोचर सो
लीपीके बीरी उतह ह वमर के
चउर तनक चउक दें ९ यें चौ
पुह चोब दे र न में ९ का वस
कसबवेधि उतले कीसे पुच
रे तमें महीकी [illegible] तीच र
क्रिशी महीनती बीवरनद
ते कउपचरकरर सुभ
वलस्वसर्प लो [illegible]
ग्रहवतीकरी [illegible] प्रति [illegible] तें
सकलपुत्रपुकरै किरी प्रति
म [illegible] पें [illegible] वर हनकरर
[illegible] नकपुन [illegible] ग्रह कु [illegible]
[illegible] न ॥ [illegible] ॥ सो म
पु ह [illegible] ॥ जो [illegible] ह [illegible]

गु यश्रु वृ ह यभि॥ चं ह स्मा भि श्रु वृ ह
यभि॥ सु के श्रु ह यभि॥ स नी श्रु व ह
यभि॥ द ह वृ श्रु ढ यभि॥ के जो श्रु वृ
यभि ७ ॥ म ति न वृ ग्र ह न को श्रु
न फ र द सर्वंग ह चि प न वं ह
र स्व ह॥ य ही म त्र लो श्रु स्तु न गं
गु छ क प दि प नै वं दि स वि स
य र वं स्व त पी स न यं द्वि व व री
चं रं॥ गु र क स र य न म घ री
सु म दि र गो ह की घु घु री व रा स
म प्र ति प कं श्रु गं चं रं मं त्र य ह
टीकं ॐ न मो भ ग व ते श्रु न का य
गु सं त सु व सं लं गु व हं ह क र स्व हा॥
ह यं त्व प ति के ७ श्रु मु ह्रिं हुं हु री लं री
कं ह घ मं दं द न व प ह लो जो स म

परमेसर पुनरी कै आगे तम घुघुरी
उररहै किरी और घुघुरी लै रीकय
ह्यमईर ॥ मंत्र पढ़ ॐ करवैन
ते पापन न ॥ ९ ठ मंत्र पढ़ी के परो
सें तमें गत वै करी शीश मुर्ग घु
घुरी लरी कके ह्य मईर ॥ ॐ दे
ही हः यहमं त्र पढ़ी के परोसन
तम इर वै नरी कक्की व रोवसे
कुलनक मल व नवः वै सो
मलनरी कके उपरनि जीवैर
करी करी ॥ ॐ कैका री निसुम
र १ हि मंत्र पढ़ि कैं पूर्हे मलप्रति
म के उपर पुर्व दिसमें पत्री मकै
म वस मच्च रीके आगी पुरवै करी री प
र्व के नरेवे तेही पीछें च मल

ीतन कढइ पीपरी मीरीच जाय स
ी पनुष्यी कैय रविलरी कीवीछस
कीकैं चुली हव्यी कदतु वछलक
सीगु छीनी लैर हीग सव छकै
समीनर देर सौचुप देरलरी
केकन्नो महनरी कक कपरवौ
टर नौ पुतपूरर ठमद कु
गव सगतर घसपीसच कुथं
रवैनल देघ पुनचुरछल सव
मगै ॥ अ न सनुवं दकारकी
कुरमीकी मंद वचजव इनीसो
र नकधुरकरैं जो सेनुवंदहो
अन ठसीर अदीचुरन बस।२५
वर ।२५ हरा।सव हैरा।पीवरि।सगो
।२५ चनि मनि तवल।२५ मर्दवं
१२५
वर।रुज छी मैचु।२५ जी रदु नीम।दव।२५

इल चीस्न तत्र स्न कॅस रीस्प बंसलो
चनस्पी तपवर सर्वं ओवदं पीसी
के गुर चव स त्र स्न इ र कू री सव
किवं र वरि मीसीरी ऊ र प्र त गं स
ह त कें स व घ इ तो जी र न ज इ
ज इ र त्रा पी त वि व म न र ज इ
श्र चसर्व वरं चुप ॥ कु ह: निवं: ह र व
च: सेर सैं: त कं: स स त ग कें कें कु इं चा
म: कुंजैं: स नेसम को रोगी कें सिं ह नै
चु पं ई इ तो सर्व जौ र ज र श्र प नु
सं नीप नजो म लु वी गरी ग लो इ त का
वी की सस्मीर स की छ ली: र का इ र प.
की जर: द नो का पी सी कि. पं ह म लें.
प कर र जौ वं द होर क्रिी द सा नश्र
ऊ क्ष प क्रि ह पं ट म च रैं इ स्री किं
दृ च म हिं ग भी जैं कं त्रौ दिं म च रे उं
र्तं म हृ वृ कें प त का प त री व चें तौ
म ल वं द होर

त्र व द स प्र ल कं न इ ॥ स रि व न १
पि य व न र क इ इ अ ३ द नो ग प्र कु न ५
वं लु ६ रां ति ७ स व न र घं प्र री ८
पाऽ रि १० ९ ही ति का का ८ ते तं र सं
नी प ते ज इ अ य ने ली स चु र न ॥ ते
मीं स हं क द्रु इ र मी र चं हं क ति नी इ
नो र्थि हं क च रि ४ पि प रि हं क प वं स
नो च न हं क ९ कु १ ब ऽ ची नी व ति
न हं क १२ मी न इ कं ब इ मो ते ज १२
ने र धू र ज इ क स स्य स स्र चीं पं ह
स्य ह नि छ र्दि प्र ति स र क्ष न ९ ते रा ग
ज र अ य न त ल स चु र न ॥ त ली स ॥
वी त ॥ वी प री ॥ मी र्चं ॥ मो र्थि ॥ ~~अ य~~
~~न र~~ ह अ न र क व कं ल ॥ ती ती री
वं ॥ इ स्र व द कु इ ह क इ क प्र री ल इ
ज मो द ॥ ग ज वि प री अ ज व इ नी ॥
ह पि ल र्व न ॥ व इ ज रें गी पि प र नु
च व ॥ न ग कं स रीः ह ह वं र ॥ च
पी प ज ९ क र नी ग ते ज प त्र ज इ व र ची

वंसलोचनु इ सव द्वइ तोल तोल
लेइं सव ९ कन्नवाइ कं मे इवार इ क
परछनकरइ दचु की दु नीषडलेइ ची
नीषरोसवमीलइ दे इर्चनमरी ।१२ष
र पिनस र न रोगजइ सर्ववत्त ज
इ मृतछच चीवीस पित्तजइ वीस
सर्वघमजइ तेर वलगमजइ ९ रोग
जइ ॥। अथ अर्वी धृत ॥ग ज ९ क कपर
लेइ नकोमदर के दुचमभीजे घस तरो
जस वसुपें कंभीजवुं की सेउ ट के दु
घमवैस तीमीजवुं औ गैंच कशेनवु
९ कममीलइ के कपरपर नेपि दर
फिरी कपरकीवतीपनवुं सवतीठ
लेट इमीकें वरइ औतरें कछवसनु
परइ सौघिउ लइ लेइ सौघिउ चरी
रतिपनमचरी कें वइ तो पुछोर क
स स्वम जइ कोछ वैंच अजिन मे दद्दुती
होइ

य सं गु रू सो च न विची ॥ सु र
ीच म प रैं थं द कार इ म च दे इ प ह
८ तौ सु च होइ ॥ म चा ॥ सु धी सं द र क
री कइ लेइ पै स पै म म रें की सोची
त द क प र की न इ ती च न वैं सो तौ स मं
स द्दु क म रैं मोह र वं द कार इ ७
के प कु म रे की त ल क द इ ल पा
च न वैं तौ स मैं च इ ल र घ गै ल्ले च
ल कुं तैं स मे ७ का म गु र की मो ही म ही
मा ग वै कू री कैं रें इ की प त सो लप
र द स कं ड की म च दे इ ७ हि पीची
सो ७ क म ८ १.८ तौ ७ ह सं दु
ह चै द्रो दें की स म नं हें ल म म रू च
च न वी ची ल प द म रू घ ॥ म रू च
हु च म सोची लें इ मो चे माकें रें
प प दि म म च की च म मरी
सम -

वं सत्सिरमीरक मडत्री दर चली सद्दन
धमेमधरर तीसमसुध दर पैंसमती
॥ बबुर कीसबरी ह कमरी १। ९ हुनो
९ कमभीलर कसुधँ कांघो हैं पहर९क
१ तीसकी गोलीवनवँ सोसीर कमडरि
२ ९कलकरीतरोज चलरहर करें ह
३ चरि हर जव चलीसदोन म दी
नवकीरहेनव गोली नीचरी कैं सीर
कसहीता वल्लकरें जव ग छोरु नव९
कहीकरी वधिक कूरेंडरें नवसरबुसी
पुरुमरवें ग जपुरुमन्न चहर चरी
सर कंउकीमन्न चहरकीरीम्रोरे सीरक
मघोहैं कीरीउसीमती तन्न चहर म्रोति
तिवरन्न चहर तीसुचीकीन्न९हे ॥न्न
गधर तिमरीवर तीन्नवनवेंपिर जर
पुघलगवतधिजकक दीरोगनसैरु
धिरवीकर नीकहोर विसपुर्हु नीकहो
र बुनकुर छ पुउप दंसप्रीहि गलुमउ
हरवीकरु९ तेरोगनसै९ हन्निम्न नीव
बहेहकान्न बन्नु तहें

न च नलसोचन॥ नल मघु नम
हीम चठ इदर जपवलुचनइरहो
लवप चइरठ वेन चलवड़ विपरव
गदर पकरी ग्र३गुलरी कृदहरपर
तकचलवृ करीरी मदी के गुर इरै
दप सपच करीरी नलठ नरी लर दकरो
जचरी रवे नव नलसुची होइ
म च श्रीगीम वीवसोच न॥ श्रीगीय
विघु नीनि हीन गौमृ नमजीजड़
फ्र रि घमेमसुपवृ नीवीपसुघ ते
म्र चवीव मर नसुच विव चनं
रोवरी टु करकरें जिसको नीनि
तन गोमृ नम घोंरे वि होसुवरके
ववकीवरी वर मोह गडरें विसेव
ह रद नोविवमरें ग्र नच्च नुरसो
न॥च नुरेकविन गोमृ नमजीनेर
चरीपहर पिवव मंम मुपवे वुसी
कमोडरें नोसुचीहोइ

१२ बं स, ब तु र म र न च तु रं के सो चे बी जव
९ कल तम पो उ री व च्चं अ म र्भ म उ री
कअ वु री लै इ जो सुच होइ ॥ अ न कौ
च न सो च न॥ कैं जी के पनी म दु
प हर त संधु की री विम अ जै व कल
नि को इ के छु री नै त व सुच होइ
अ व अ की मै सोच न॥ अ द कै र स
तै बो हूँ जो नि दिन त्यो र त्यो र र स
उ र ति म र जो आ ची होइ अ चे
उ द र रो ग नि बु दु दु॥ जमी री
नि वकर स सो टू के १०० हिं गु
जी ।२५ सं चे लो न सो च र सं अ
री ॥१२५ सं र सो ।२५ र र सो र्भि १
मी री च जवु र न १ प गा ।२५
र्भि कर ।२५ पनर सीर र ।२५ मु ठ
।२५ अ ज म द ।२५ मबदवु इ मै द क
रै ९ क सी स मच रैं ऊपर तें न मी
री करसड रै द स दिन चे मे म

जव रैं यदि द सदि न .. व र म
री ४ जो सर्व रोग ग ठ द र को जर
लोन व्य ऋ न प ठ प इ ॥ लो च न दा ऋ
जव्ह इ नी ॥ ऋ वाल व वें त स ॥ जीर
दु नौ रा सो ठिं पी प री मी री ॥ १५४ च
य हि र ॥ मु ठ ॥ सं क ॥ तं न री
व ॥ ऋ वु र ॥ ची त ॥ ही ग ॥ ह र र ॥
पी प री ॥ ऋ ज मी [illegible] सो च र ॥ च
नी ... ॥ व र म रं ग ॥ सो र क ल
मी गु ड ॥ वी कु व र क र गु सो ह
के स री १०० ॥ स व द व इ मैं द क
इ को ७ क म ही कं व स न म क र
॥ कं मु इ म ग डी हें इ ही न २० कु री
नें क सी कं घ नी ... ७ क सी सी
च री ९ मैं प इ म से ४ पो ह र
की रोग ज र

वं स॰ २५ दे तेलै॥ ॥ लेकरु संर २५ दु
गु गइ कसर २१ दसमु लसंर दु
सनकेनग॥ सरि वन २१ पिव
वन २१ गुवु रु २१ कहइ यदुन
२१ घनरी २१ पऽरि २१ सावन २१
वेलु २१ स्रगव प २१ निवकेपन
२१ पठी २१ गदहपुरनिप २१ ल
इजीर २१ कौ स्वल २१ मदरकेज
र २१ छीउलैक इसु २१ सीरको
क २१ कहशैल २१ सीर स २१ केल
केपज २१ चौरइ २१ मुहरबि २१ लो
चेलीप २१ इसवइव र नकक
टकइकतैल मप बइ दइ स्रो
तपी छैपसरी की दवु ऽ रै ली कु
ल १२५ नलीमा १२५ कचर १२५ कि
रवर १२५ ती कुह १२५ नजा १२५ प
ते ना १२५ इलद ची १२५ वइमरै

पर मुठ २५ द

प ता२५ नु ल

ी २५ हु सौहूदूर पनिमवरीकव

च २ दे २ जव पकी जत वहन

री लर सो दे हा मलगवै जोवैन

ननिकूहो इ अपस्म २ ऋ तौन्म

द सवैवात जीर ए जप र त्र तेरो

म जर अत्र व्यमुत ठ द म द चौ

नु॥ द ह ची कर पकै संत

होर दची व

नव स २ पंत नरसीर॥

नीनसी दिच न नि

न होर ऋ रू नही र॥ त व॥ म

म का मरमैं हरै ऋर श्रु क दे

ऋ ता कीन्परह द ज घे का वें

तल विरकिर स्तपंग म र ओं

कुं मरुमी कली क कु ओं ड क

वंसा दू तेलौ॥ गा२ सहि द गरु गो
मु गइ कसर ासघइ कोघ होकी
स ––ि कौ वहोइ प अ कस किन
गिनीपाजलकी परीनी जरीसी ठिम
ठिरोग होघ ग्रहीमुं च मुं चस्या हाः
इ जा मंत्र होम॥ अप होमविची
गोघृत गम रु॥ चतुरकं विच॥
म दरकी समिधौर नतेहोमक
रँ चोरसी८४ अहुती दें इ मंत्र
८ हेपदीपदी प्रति होय जर॥ अ
थ मंत्रवली ॐ संकरं भेसर्व देवु
भे नं घ्य श्य नम॥ अथ वलीवि
धी॥ मु गा॥स घ॥ नं दलसैंकी
दधीवीर षंड घृत॥ गु सी वलीदे
र दीन

अवसंनीप
ससंनीपनदिन
अन कु।२२ गु दह।२ अन वानप
र क नर ष।१० पन प।११ जी हक
।१२ अ मी न सा।१२ ।सि तंगा।५। नही
अ का।६ कं ८ कु वज।७ कार नमुलर
मगननि व्र ८ अवसंनी दीनगोगी
संचीकदिन।२० अ नकं।१०८ गुरु।२०
अम चीत्त व्र व।२ मी तंगहीना।१५
नहि पु का।२५ कं ८ कु वजा।१२ कार
नमुल।२० म गन नव्रा।२२ र क
नर कुवी।१० पूवपु।१४ जी हक।१६
अमीन सु।१५ र तीअमप।। संची
कन घन।। अ तीवनहीवलसो
अती सुवनी दहनी अमसुसो-
कसंनापरु कनरनसंपीक
मनी

वं स र्द्ध ने लें॥ ग अ क्र दि ही की श्री
गु ग इ क स र धो इ क रे हु॥ हृ सा
हु र कं रे क रु क्र दि व हु री ज वु ग्र
हे हु॥ त्र कू ल मो व्य सौ ढ गी ल्लो
इ॥ दे षु द रु स ह्री म म सौर॥ श्री र
वे च रा र हु म नी हे त॥ क रो हु को
च गु गु र स्म में त्र॥ श्रृं ग पी र श्रु रु
म ल न स इ॥ सो कू सं ची की वी
च मी हृ इ॥ मो ढ गु री च हु री त्त
की दे वु द र उ प इ र हु स नी
म म क री को क दं सां ची पी र
स व ग्र इ॥ व हे र पी प र मु ल
र हु स नी हु र ची र इ त॥ ष हे
को व स में तु ल॥ ं ऽ त ल मो प्र
त हो र है न सं ची क मु ल॥ सं
वी प त क ली क क है॥ व स मी
व्य सो ढ गी लो इ रु स छ त घ

री ह र रँ मोइ।।
नी ऋतिस दैवु दै
पी सी।।इन सव ही दस मुल
लइ।।दसमुल नमा।।वैल रंऽ
पमरी जोन ऋग ठेच कहयेव
कंन पऽरीयु हसवरीऋर।।१०
की चपीयुसंघी क गुर छीनम
जर मी हुँ पीर सव ऋँग की कडी
पीऽसोमहइ।।स कलपी र नर
हीसर्क संघी सह जही जर ऋव
पुनी मेंऽ जीमर सँ गुलहहु।।नी
वपत्रल सम दइ पुनी इनकी
तीजैं गुनी।।संघी नसव नकोऽ
रसुनी ऋवुऋँ तकलछिन।।दत
मोहसीर कपनहोर।।हीक्वाहो
पुरेगरसीइ योस ऋह सवर्द
पीरइ।।इनतेम त कजनजर

वंस द तैसैं॥ त सम्पु ही करीदि
गुगइ कसर रात्त कोअै तअ्रव
गरकरि गुअं त करि है॥ चीकीस
गोपरि मोठी चरइतच नसही
गीलोइ॥ देवदर मैं केकर क्रुर
वित समोइ॥ दसमुव कोव्यान
करी क्रै तक श्राव गुरगुर॥ पीस्ये
गुलअरु कसको सोसवभुगी न
सर॥ हीक्योस नी सोनर हैं फही
श्रोव दीकेंदर॥ श्रवरुगदह॥
कसजलनी श्ररुस्योस त्रपसंति
कैठ गहहानी॥ तवमुलअरु वच
रत्तफह रुगुदह सो जनु॥ चीक
सा॥ चंदनवलसोठी ठ मीर मोन
पपर कै ततीकर कोवा जहअेर
मीहर॥ रुगुदह सैनीद्रुरी होइ अैन
॥ हरै मीव्यापरपर क्रुहू कीरिवुरदे
मीलइ॥ सीत परीपी अंजौदह कल

म्र मैं कई कोह ॥ कवह वार काप

कई मोह ॥ ठं ९ पृकरी म ल कनेइ

ची ल्प्र म ९ ही नेजनन र । चिक

श्र ॥ ह रं ईनी य मो र्कवृच प हू प

मो र मोव्रपपर सम जौल्किर यु ॥७॥८॥

र स मकुठर्दन ॥ चत्तम्र म र्कन

न के हैन ॥ म्रव्चेप ॥ पीप री

र सैय रुवंशी देवृद र मुरंठी हैरी

नर्च द नवृ वी क रौज ॥ वीन

म कोर हैं न बौजु ॥ म्रद सीतग

छ न ॥ सीताज्यो द कं प म्र रु क

वंस ८ दि तैलै॥ ग सम्पु ही कैरीदि
गु ग इ कर स र॥ र॥ न को अं न कुव
रु र फरि ग्रं म्रं न करि हे॥ चीकीस
चौपरि सा ठी चर र न च न सही
गी लोइ॥ दे वु द र सैं के क र कु
वि न स मोइ॥ द स मु व कोगा
करी क्रैं न क नु धुन घु रु न ठ जैग
सु॥ क्रं नी तिं छ न दें नै नी क न सु॥
न स॥ व च स चौ म्र रु पी व री प र
म ठु बु क्ष ठु ली ज ल इ मी ल र॥ दी ग
सं त वो च [redacted] स म न॥ श्रो ग प
ही के न स न कै है न॥ क्र न न स॥
स हि ज न वि ज ब्र सं र मी प र॥ से
चौ कु ह ल्वै ह स म न इ॥ ब्र ज पु त्व
सौ दि जै न सु ५ ह स नी प न न क
र वी न सु॥ क्र ह द क्र प सं द
ल्व छ नौ॥ क न पि र स्रो ग्यी

णा॰ पर सय ला॰ ग ग द हे ॥
नी प त कुली क क ह न नें हीं कें
नम नें शंठ ॥ क्रच क्यो ब्या॥ गुरी च
पर व र क्षौ कु हूं प श ॥ इ न क क
ठ क र न हु य न ह ॥ ह्री जैं सं नी व
न कं हेनानें ही ह्री न मी हैं य न मर्म
न॥ क्र व क्रं ज न ॥ क्रु ट ह र द क्रो
क्षी क्रु ह प इ॥ क्षी र म ह्रीं क न म
मी ल ह॥ क्र ज मु क सो क्ष त न ल ठ
फ हि नं ने हि फ मि ह इ सु म ठ

वंसा दृ तेनै॥ ग॥ समुहीकरीदि
गइकमर रजिकौसें नजुव
कारि कौसें नकरि है॥ चौपाई॥
गावरि मोटी चरन घनसी
गीतोइ॥ देवदर सें केकर कु
विजसमोइ॥ दसमुखकौ
करी सें नक ... बुरु नठ जैन
[illegible]
नौ॥ कंठ के के ...
पत अरु हनी॥ वंगसनीप हे
हीवनइ॥ सुपंकंठकु वजन
न॥ हानौमव ग्रहदे हनुनामे
हमुरवठ नी कंठ ग्रहे सुरु
धनपननतु कंठकु बि जजन
नमुकठ॥ कुह कीमोव नक
नपइ॥ त्रीकुह जर्व सतप
रा॥ समकरी इन कोकठ दे ह

नन र ख
नींदन॥ वैगभुनभ ध्यानभ्रत्ती
भ्र रनिय चनक हनी॥ र क्रन
र वृविजनु॥ नस चीकस्ता प
नरच नीयु श्रोर जैवस॥ मौच
उसीरनी नकपस्ता॥ कुहकी
श्रीरपियंगु मीलह॥ हनकीच
ऊ परहु मीलह॥ द्वि जैमचु मान्नी
मीलह॥ रक्रननरैंश्रसंनी मीहर

On :—

Sanskrit Literature

... first Brahmin who took to the
... Dr. Keith's view that he was a
... because he was really Brahmin by birth.
... script evidence. in the Kanishka
... passage of ... in ... also occurs
... : लोऽयं ... प्रयमौ । (...)
... येन ... (अश्वघोष)
... proved by writing an epistle to ...
... is prior to the date of Kanishka.
... Liberian opinion of बुद्धचरित-
... belong to ... school at all - ...
irregul... to those versions being
...

...।तारा।वा।ानया।वातनत
ननैवर्वे द पूलपक सो ह ॥ च
कीसा॥ पर गैच क समच तैल
वै॥ कलच त्र र कॉर म मोदिनै॥
चसीप ह रवर ल त्रिक हृ सैचप
धहिरमनै रोगपूलपक त्र र॥
प जीहक नीदन॥ कमस्रोस
परीतपकृती जीहक तवलह
जीमकर्ठनक्रूहवचीर तह न
जीहकतनी॥ चीकीसा॥

On :—

Sanskrit Literature

... first Brahmin who took to the
... Dr. Keith's view that he was a
... because he was really Brahmin by birth
... script evidence. in the Kanishka
... passage of मानिचर in नामिक गोती also occurs
... व्यवसायाद्वितीय: तोऽस्य श्रिलान्य मूलं प्रययौ । (मानिचेरो)
... यन प्राप्तं परमनिवारम (अश्वघोष)
... proved by writing an epistle to ...
... is prior to the date of Kanishka.
... Siberian opinion of बुद्धचरित -
... belong to सर्वास्तिवादिन school at all - ...
... irregular ... to these versions being
... ence ...

...केधराद् ॥ क्रनमत ॥ मा...
वै सेचोपीपरीवइ ॥ मह् वमठ्ल
ननमइ ॥ कँकर मरैं नीरसोनम
क्रभीनमकोकरइवीनम ॥ क्रव्वा
व चसेचोपीपरी भीरीवँ नही मी
वइ ॥ ९ कनतीनुइसुनसमनइ ॥
औमु त्रसो दीजै नसुक मीनस
... करइ वीनस ॥ कुवव्वाव ॥
श्री गी त्रीकृ ८ चीरइ नपइ ॥ क्रोर
पुरैं नलेनु भगश ॥

ध खर श्राप ण ल र जो कस
ल क कु ध त प र इ पु ही होइ
ल श्रची क इ [illegible] मीची गु
पा के हे
६५ ०. ग्रवी की ।: [illegible] ग र २
स पु द क नु ३ ८ रु ह र दि ४ र
॥ भव तप पनि संपि स कं श्रब कं
रप ठर लप कर इः

On :—

Sanskrit Literature

first Brahmin who took to the
Dr. Keith's view that he was a
because he was really Brahmin by birth
script evidence. in the Kanishka
passage of मातृचेट in ... also occurs
... (अश्वघोष)
proved by writing an epistle to ...
is prior to the date of Kanishka.
Yiberian opinion of बुद्धचरित -
belong to ... school at all - ...
irregula... to these versions being
...

पापरा
सोर्पा
मूर्ख
कार्पत्वगह

नौर्के
नौकेंचैरः

On :—

Sanskrit Literature

... first Brahmin who took to the
... Dr. Keith's view that he was a
... because he was really Brahmin by birth
... script evidence. in the Kanishka
... passage of ... in ... also occurs
... (...)
... (...)
... proved by writing an epistle to ...
... is prior to the date of Kanishka.
... Liberian opinion of ...
... belong to ... school at all - ...
... irregular ... to these versions being
...ence

... मानीसलौकनमडरइ
... चहरझनरडइनो
नीकहोइ

[illegible]

दा॥
२१६ [illegible]

on :—

Sanskrit Literature

... first Brahmin who took to the
... Dr. Keith's view that he was a
... because he was really Brahmin by birth
... script evidence. in the Kanishka
... passage of ... in ... also occurs
...
...
... proved by writing on epistle ...
... is prior to the date of Kanishka.
... Liberian opinion of बुद्धचरित -
... belong to ... school at all - ...
irregular ... to these versions being
...ence

[illegible]

تنبیہ—(۱) کھتونی حصہ داری کے کالم ۲ نمبر وطیرہ نسب نما شمار کے نمبر

(۲) خانہ کیفیت میں بقایا قیمت جنس دکھانا چاہئے—

موضع
تحصیل

نمبر	
۱	نمبر شمار
۲	نام کاشتکار مع ولدیت و [illegible]
۳	نمبر خسرہ مندرجہ کھتونی جمعبندی
۴	رقبہ ایکڑ یا بیگھہ میں
۵	نام جنس
۶	طریقہ تقسیم اجناس بذریعہ کنکوت یا بٹائی
۷	شرح کنکوت

ضلع

نمبر شمار	٢
نام اشخاص مع ولدیت و قومیت و سکونت	٣
نمبر خسره مندرجه کهتونی جمعبندی	٤
رقبه ایکڑ یا بیگهه میں	٥
نام جنس	٦
طریقه تقسیم یعنی بذریعه کنکوت یا بٹائی	٧
شرح کنکوت	٨

شرح کنکوت	طریقہ تقسیم یعنی بذریعہ کنکوت یا بٹائی	نام جنس	رقبہ ایکڑ یا بیگھہ میں	نمبر خسرہ مقدمہ کھتونی جمعبندی	نام کاشتکار مع ولدیت و قومیت و سکونت	نمبر شمار
۸	۷	۶	۵	۴	۳	۲

نام [illegible] [illegible]

نام محال اقبال [illegible]

نام موضع [illegible]

نام پرگنہ [illegible]

نام پٹواری [illegible]

سنہ فصلی [illegible]

